शोध दिशा

लघुकथा अंक

अक्टूबर 2014- मार्च 2015 समकालीन सृजन को समर्पित त्रैमासिक मूल्य 40 रुपए

अतिथि संपादक
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

वर्ष 8 अंक 1 | सितंबर 2014 से मार्च 2015 | 40 रुपए

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

अतिथि संपादक
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
मनोज अबोध
सत्यराज

कला संपादक
गीतिका गोयल 09582845000
डॉ॰ अनुभूति 09958070700

उपसंपादक
डॉ॰ अशोक कुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

चित्रकार
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
के॰ रवींद्र

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फ़ोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : giriraj 3100@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय
दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति भटनागर
सी-106, शिव कला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
फ़ोन : 09928570700

गुड़गाँव कार्यालय
डॉ॰ मीना अग्रवाल
एफ़-403, पार्क व्यू सिटी-2
सोहना रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)
फ़ोन : 0124-4076565, 07838090732

राजस्थान
राहुल भटनागर
डी-101 पर्ल ग्रीन एकर, श्री गोपाल नगर
सोमानी अस्पताल के पास, गोपालपुरा
जयपुर (राज॰)
फ़ोन : 09810970700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

शुल्क
आजीवन शुल्क : एक हज़ार पाँच सौ रुपए
वार्षिक शुल्क : एक सौ पचास रुपए
एक प्रति : चालीस रुपए
विदेश में : पंद्रह यू॰एस॰डॉलर (वार्षिक)

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें।

स्वत्वाधिकारी 'हिंदी साहित्य निकेतन' की ओर से स्वत्वाधिकारी, मुद्रक प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, निकट ज्योतिष भवन, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

संरक्षक

रो॰ असित मित्तल, नोएडा
श्री अजय रस्तोगी, मेरठ
श्री निश्चल रस्तोगी, मेरठ
श्री अनिलकुमार गोयल, नोएडा
रो॰ आर॰के॰ जैन, बिजनौर
डॉ॰ धैर्य विश्नोई, बिजनौर
डॉ॰ प्रकाश, बिजनौर
रो॰ राजीव रस्तोगी, मुरादाबाद
रो॰ राकेश सिंहल, मुरादाबाद
श्री महेश अग्रवाल, मुरादाबाद
श्रीमती ताराप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ परमकीर्तिसरन अग्रवाल, मु॰न॰
रो॰ देवेंद्रकुमार अग्रवाल, काशीपुर
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल, (नैनी पेपर्स, काशीपुर)
श्री अमितप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ नीरज अग्रवाल, जयपुर
श्री सत्येंद्र गुप्ता, नजीबाबाद
श्री अशोक अग्रवाल, गुड़गाँव
डॉ॰ सुधारानी सिंह, मेरठ

आजीवन सदस्य

रो॰ आर॰ के॰ साबू, चंडीगढ़
रो॰ सुशील गुप्ता, नई दिल्ली
रो॰ एम॰एल॰ अग्रवाल, दिल्ली
डॉ॰ मनोजकुमार, दिल्ली
श्री प्रवीण शुक्ल, दिल्ली
डॉ॰ दीप गोयल, दिल्ली
श्री आशीष कंधवे, दिल्ली
श्री अविनाश वाचस्पति, दिल्ली
पावर फाइनेंस कारपोरेशन (इं) लि॰
श्री ए॰बी॰ रावत, दिल्ली
श्रीमती शशि अग्रवाल, दिल्ली

उत्तर प्रदेश

रो॰ डॉ॰ के॰सी॰ मित्तल, नोएडा
श्री सुभाष गोयल, नोएडा
श्री ओमप्रकाश यति, नोएडा
सुश्री भावना सक्सेना, नोएडा
डॉ॰ कुँअर बेचैन, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ अंजु भटनागर, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश रोहतगी, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मंजु शुक्ल, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित, शिकोहाबाद
डॉ॰ पल्लवी दीक्षित, शिकोहाबाद
रो॰ डॉ॰ एस॰के॰ राजू, हाथरस
श्री दिनेशचंद्र शर्मा, मोदीनगर
श्री एस॰सी॰ संगल, बुढ़ाना
डॉ॰ नीरू रस्तोगी, कानपुर
श्री हरीलाल मिलन, कानपुर
श्री विनोदकुमार गोयल, दादरी
श्री अलीहसन मकरैंडिया, दादरी
डॉ॰ प्रणव शर्मा, पीलीभीत
श्रीमती पिंकी चतुर्वेदी, वाराणसी
श्री अरविंदकुमार, जालौन
नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन
डॉ॰ राकेश शरद, आगरा
डॉ॰ राकेश सक्सेना, एटा
श्री अरविंदकुमार, मोहदा (हमीरपुर)
श्री गोपालसिंह, बेलवा (जौनपुर)
डॉ॰ रामसनेहीलाल शर्मा, फिरोज़ाबाद
श्री दिनेश रस्तौगी, शाहजहाँपुर
श्री भूदेव शर्मा, नोएडा
श्री इंद्रप्रसाद अकेला, मुरादनगर
प्राचार्य, डॉ॰ गोविंदप्रसाद, रानीदेवी पटेल महाविद्यालय कानपुर नगर

खुरजा (उ॰प्र॰)

श्रीमती उषारानी गुप्ता
रो॰ राकेश बंसल
रो॰ डॉ॰ दिनेशपाल सिंह
रो॰ प्रेमप्रकाश अरोड़ा
रो॰ सुनील गुप्ता आदर्श
रो॰ राजीव सारस्वत

जे॰पी॰ नगर

रो॰ अभय आनंद रस्तोगी, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ विनोदकुमार अग्रवाल, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ सरल राघव, अमरोहा
डॉ॰ बीना रुस्तगी, अमरोहा
रो॰ शिवकुमार गोयल, धनौरा
रोटरी क्लब, भरतियाग्राम

अफजलगढ़ (बिजनौर)

रो॰ रविशंकर अग्रवाल
रो॰ अतुलकुमार गुप्ता
रो॰ महेंद्रमानसिंह शेखावत
श्री वासुदेव सरीन
श्री हंसराज सरीन
श्री अमृतलाल शर्मा
श्री सुरेशकुमार

चाँदपुर (बिजनौर)

डॉ॰ मुनीशप्रकाश अग्रवाल
श्री सुरेंद्र मलिक
गुलाबसिंह हिंदू महाविद्यालय
डॉ॰ बलराजसिंह, बाष्टा (बिजनौर)
श्री विपिनकुमार पांडेय

धामपुर (बिजनौर)

डॉ॰ लालबहादुर रावल
श्री जे॰पी॰ शर्मा, शुगर मिल
डॉ॰ सरोज़ मार्कण्डेय
डॉ॰ शंकर क्षेम
श्री नरेंद्रकुमार गुप्त
श्रीमती सुषमा गौड़
डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी
रो॰ शिवओम अग्रवाल
डॉ॰ वीरेंद्रकुमार शर्मा
डॉ॰ कृष्णकांत चंद्रा
डॉ॰ श्रीमती संहिता शर्मा
डॉ॰ पूनम चौहान
डॉ॰ भानु रघुवंशी
डॉ॰ ख़ालिदा तरन्नुम
श्री आर्यभूषण गर्ग
श्री संजय जैन
श्री निशिवेशसिंह एडवोकेट
श्री दीपेंद्रसिंह चौहान
मौ॰ सुलेमान, परवेज़ अनवर, शेरकोट
कुँ॰ निहालसिंह, दुर्गा पब्लिक स्कूल
प्राचार्य, आर॰एस॰एम॰ (पी॰जी॰)कालेज
प्राचार्या, एस॰बी॰डी॰ महिला कालेज
राधा इंटर कालेज, अल्हेपुर (धामपुर)
धामपुर पब्लिक कन्या इंटर कालेज

नगीना (बिजनौर)

श्री पंकजकुमार, पो॰ भोगली
श्री करनसिंह, पो॰ भोगली
श्री पंकजकुमार अग्रवाल
श्री मुनमुन अग्रवाल
डॉ॰ वारिस लतीफ
श्री ओमवीर सिंह

नजीबाबाद (बिजनौर)

श्री इंद्रदेव भारती
डॉ॰ रासुलता

बरेली (उ॰प्र॰)

रो॰ डॉ॰ आई॰एस॰ तोमर
रो॰ रविप्रकाश अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रामप्रकाश गोयल
डॉ॰ सविता उपाध्याय
डॉ॰ महाश्वेता चतुर्वेदी
रो॰ पी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ अशोक उपाध्याय
रो॰ श्यामजी शर्मा
श्री विशाल अरोड़ा

डॉ॰ वाई॰एन॰ अग्रवाल
श्री राजेंद्र भारती
डॉ॰ देवेंद्राकुमारी झा

बिजनौर (उ॰प्र॰)

श्री राजकमल अग्रवाल
डॉ॰ बलजीत सिंह
रो॰ रमेश गोयल
रो॰ विज्ञानदेव अग्रवाल
श्रीमती शशि जैन
डॉ॰ मोनिका भटनागर
डॉ॰ ओमदत्त आर्य
श्री जोगेंद्रकुमार अरोरा
श्री चंद्रवीरसिंह गहलौत, एडवोकेट
रो॰ आर॰डी॰ शर्मा
डॉ॰ निकेता
डॉ॰ अजय जनमेजय
श्री पुनीत अग्रवाल
डॉ॰ निरंकारसिंह त्यागी
श्री अशोक निर्दोष
श्री वी॰पी॰ गुप्ता
रो॰ प्रदीप सेठी
रो॰ हरिशंकर गुप्ता
रो॰ सी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ तिलकराम, वर्धमान कॉलेज
आर॰बी॰डी॰महिला महाविद्यालय
रो॰ डॉ॰ रजनीशचंद्र ऐरन, हल्दौर
श्री अरुण गोयल, किरतपुर
रो॰ डॉ॰ दीपशिखा लाहौटी, नगीना
रो॰ बी॰के॰ मालपानी, स्योहारा
डॉ॰ हेमलता देवी, गोहावर
नहटौर डिग्री कालेज, नहटौर
श्री विवेक गुप्ता, शादीपुर

मवाना (उ॰प्र॰)

रो॰ अनुराग दुबलिश
श्री अंबरीशकुमार गोयल
आर्य कन्या इंटर कालेज
ए॰एस॰ इंटर कालेज
लक्ष्मीदेवी आर्य कन्या डिग्री कालेज

मुज़फ़्फ़रनगर (उ॰प्र॰)

रो॰ शरद अग्रवाल
रो॰ वीरेंद्र अग्रवाल
रो॰ दिनेशमोहन
रो॰ डॉ॰ ईश्वर चंद्रा
रो॰ डॉ॰ अमरकांत
रो॰ अनिल सोबती
रो॰ डॉ॰ जे॰के॰ मित्तल
रो॰ सुधीरकुमार गर्ग
रो॰ प्रदीप गोयल
श्री गौरव प्रकाश
डॉ॰ बी॰के मिश्रा
रो॰ राकेश वर्मा
रो॰ संजीव गोयल
प्राचार्य, एस॰डी॰ कालेज ऑफ लॉ
प्रधानाचार्य, ग्रेन चेम्बर्स पब्लिक स्कूल
रो॰ संजय जैन, शामली
रो॰ डॉ॰ कुलदीप सक्सेना, शामली
रो॰ उमाशंकर गर्ग, शामली
रो॰ डॉ॰ सुनील माहेश्वरी, शामली
श्री अतुलकुमार अग्रवाल, खतौली

मुरादाबाद (उ॰प्र॰)

रो॰ सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
रो॰ बी॰एस॰ माथुर
रो॰ ललितमोहन गुप्ता
रो॰ सुरेशचंद्र अग्रवाल
श्री शचींद्र भटनागर
रो॰ योगेंद्र अग्रवाल
रो॰ नीरज अग्रवाल
रो॰ के॰के॰ अग्रवाल
रो॰ श्रीमती सरिता लाल
रो॰ श्रीमती चित्रा अग्रवाल
डॉ॰ महेश 'दिवाकर'
रो॰ ए॰एन॰ पाठक
रो॰ चक्रेश लोहिया
रो॰ यशपाल गुप्ता
रो॰ सुधीर खन्ना
रो॰ रमित गर्ग
श्री विनोदकुमार
डॉ॰ रामानंद शर्मा
डॉ॰ पल्लव अग्रवाल
श्री राजेश्वरप्रसाद गहोई
श्री विश्वअवतार जैमिनी
श्रीमती कनकलता सरस
श्री योगेंद्रकुमार
श्री हरीश गर्ग, संभल
श्री वीरेंद्र गोयल, संभल
श्री नितिन गर्ग, संभल
रो॰ डॉ॰ राकेश चौधरी, चंदौसी

मेरठ (उ॰प्र॰)

रो॰ ओ॰पी॰सपरा
रो॰ विष्णुशरण भार्गव
रो॰ एम॰एस॰ जैन
रो॰ गिरीशमोहन गुप्ता
रो॰ डॉ॰ हरिप्रकाश मित्तल
रो॰ प्रणय गुप्ता
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
रो॰ संजय गुप्ता
श्री क्रिानस्वरूप
रो॰ नरेश जैन
रो॰ सागर अग्रवाल
डॉ॰ अनिलकुमारी
रो॰ प्रदीप सिंहल
श्री शिवानंद सिंह 'सहयोगी'
रो॰ नवल शाह
डॉ॰ रामगोपाल भारतीय
श्रीमती बीना अग्रवाल
श्रीमती मृदुला गोयल
रो॰ मुकुल गर्ग
श्री सियानंद सिंह त्यागी
श्री राकेश चक्र
रो॰ सी॰पी॰ रस्तौगी
डॉ॰ ज्ञानेदत्त हरित

रामपुर (उ॰प्र॰)

श्री शांतनु अग्रवाल
श्री नरेशकुमार सिंघल
डॉ॰ मीना महे

लखनऊ (उ॰प्र॰)

श्री महेशचंद्र द्विवेदी, आई॰पी॰एस॰
श्री दामोदरदत्त दीक्षित
डॉ॰ किरण पांडेय
श्री अनुपम मित्तल
श्रीमती रेणुका वर्मा
श्रीमती उषा गुप्ता
श्री अमृत खरे
श्री विनायक भूषण

सहारनपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ विपिनकुमार गिरि
श्री श्रीपाल जैन ठेकेदार
श्री पूर्णसिंह सैनी, बेहट
श्री विनोद 'भृंग'
एम॰एल॰जे॰खेमका गर्ल्स कालेज
श्री सुनिल जैन 'राना'

उत्तराखंड

डॉ॰ आशा रावत, देहरादून
डॉ॰ राखी उपाध्याय, देहरादून
श्री अमीन अंसारी, जसपुर

श्री विपिनकुमार बक्शी, कोटद्वार
डॉ॰ अर्चना वालिया, कोटद्वार
धनौरी डिग्री कालेज, धनौरी
नेशनल इंटर कालेज, धनौरी

रुड़की

डॉ॰ अनिल शर्मा
श्री प्रेमचंद गुप्ता
श्री अविनाशकुमार शर्मा
श्री वासुदेव पंत
श्री मयंक गुप्ता
श्री अमरीष शर्मा
श्री उमेश कोहली
श्री जे॰पी॰ शर्मा
श्री मनमोहन शर्मा
श्री सुनील साहनी
श्री अशोक शर्मा 'आर्य'
श्री मेनपालसिंह
श्री संजय प्रजापति
श्री ओमदत्त शर्मा
श्री अरविंद शर्मा
श्री राजेश सिंहल
श्री ब्रिजेश गुप्ता
श्री संजीव राणा
श्री ऋषिपाल शर्मा
श्री राजपाल सिंह
बी॰एस॰एम॰इंटर कालेज,
आनंदस्वरूप आर्य सरस्वती विद्या मंदिर
योगी मंगलनाथ सरस्वती विद्या मंदिर
शिवालिक पब्लिक स्कूल, डंडेरा

काशीपुर

श्री समरपाल सिंह
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ वी॰एम॰ गोयल
रो॰ डॉ॰ एस॰पी॰ गुप्ता
रो॰ डॉ॰ डी॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ एन॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रविनंदन सिंघल
रो॰ विजयकुमार जिंदल
रो॰ जितेंद्रकुमार
रो॰ प्रदीप माहेश्वरी
रो॰ रवींद्रमोहन सेठ
श्री प्रमोदसिंह तोमर

आंध्र, कर्नाटक, केरल, मिज़ोरम

श्री अनंत काबरा, हैदराबाद
श्री श्याम गोयनका, बैंगलौर
डॉ॰ दीपा के॰, बैंगलोर (कर्नाटक)
डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरन नायर, केरल
डॉ॰ बी॰ आर॰ राल्टे, आइजॉल

तमिलनाडु

डॉ॰ बी॰ जयलक्ष्मी, चेन्नई
डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन शेष, चेन्नई
श्री एन॰ गुरुमूर्ति, चेन्नई
सुश्री प्रतिभा मलिक, चेन्नई
सुश्री अपराजिता शुभ्रा, चेन्नई
श्री योगेशचंद्र पांडेय, चेन्नई
श्री महेंद्रकुमार सुमन, चेन्नई
श्री संजय ढाकर, चेन्नई
श्री प्रदीप साबू, चेन्नई
सुश्री स्वर्णज्योति, पांडिचेरी

पंजाब

रो॰ विजय गुप्ता, राजपुरा
कर्नल तिलकराज, जालंधर
श्री सागर पंडित, अमृतसर

उड़ीसा

श्री श्यामलाल सिंहल, राउरकेला

मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़

रो॰ रविप्रकाश लंगर, उज्जैन
डॉ॰ हरीशकुमार सिंह, उज्जैन
डॉ॰ अशोक भाटी, उज्जैन
श्री माणिक वर्मा, भोपाल
श्री प्रदीप चौबे, ग्वालियर
श्री उमाशंकर मनमौजी, भोपाल
श्री जगदीश जोशीला
श्री विनोदशंकर शुक्ल, रायपुर
श्री रामेश्वर वैष्णव
श्री गजेंद्र तिवारी, बागबाहरा
श्री धीरेंद्रमोहन मिश्र, लक्खीसराय
डॉ॰ रामलखन राय, समस्तीपुर
श्रीमती सीमाकुमारी, समस्तीपुर

महाराष्ट्र, गुजरात

रो॰ सज्जन गोयनका, मुंबई
श्री जावेद नदीम, मुंबई
रो॰ डॉ॰ माधव बोराटे, पुणे
श्रीमती रिज़वाना कृयप, पुणे
रो॰ सुरेश राठौड़, मुंबई
डॉ॰ अश्विनीकुमार 'विष्णु', अमरावती
डॉ॰ शैलजा सुरेश माहेश्वरी, अमलनेर
श्री मधुप पांडेय, नागपुर
श्री सुभाष काबरा
श्री अरुणा अग्रवाल, पुणे
श्री सागर खादीवाला, नागपुर
डॉ॰ मिर्ज़ा एच॰एम॰, सोलापुर
श्री वनराज आर्ट्स, कॉमर्स कालेज, धरमपुर (बलसाड)
श्री मोरारजी देसाई आर्ट्स एंड कॉमर्स कालेज, वीरपुर (तापी)

राजस्थान

रो॰ डॉ॰ अशोक गुप्ता, जयपुर
रो॰ अजय काला, जयपुर
श्री कमल कोठारी, जयपुर
रो॰ विवेक काला, जयपुर
श्री आर॰सी॰ अग्रवाल, जयपुर
श्री राजीव सोगानी, जयपुर
श्री सुरेश सबलावत, जयपुर
श्री कमल टोंगिया, जयपुर
श्री मुकेश गुप्ता, जयपुर
श्री विनोद गुप्ता, जयपुर
श्री गिरधारी शर्मा, जयपुर
रो॰ एस॰के॰ पोद्दार, जयपुर
रो॰ राजेंद्र सांघी, जयपुर
रो॰ आर॰पी॰ गुप्ता, जयपुर
श्री जयपुर चेंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंड॰
डॉ॰ शंभुनाथ तिवारी, भीलवाड़ा
डॉ॰ दयाराम मैठानी, भीलवाड़ा
श्री मुरलीमनोहर बासोतिया, नवलगढ़

हरियाणा

श्री विकास, तहसील महम, रोहतक
डॉ॰ स्नेहलता, रोहतक
डॉ॰ सुदेशकुमारी, जींद
श्री हरिदर्शन, सोनीपत
डॉ॰ प्रवीनबाला, जुलाना मंडी
श्रीमती अनिलकुमारी, घिलौड़ कलाँ
डॉ॰ प्रवीणकुमार वर्मा, फरीदाबाद
श्रीमती रेखारानी, फरीदाबाद
श्री अभिषेक गुप्ता, फरीदाबाद
श्रीमती सविताकुमारी, सोनीपत
श्रीमती सुमनलता, रोहतक
श्री सुरेशकुमार, भिवानी
डॉ॰ सविता डागर, चरखी दादरी
छोटूराम किसान कालेज, जींद
ए॰पी॰जे॰ सरस्वती कालेज, चरखी दादरी
विनोदकुमार कौशिक, चरखी दादरी
डी॰सी॰ मॉडल सीनि सेकेंडरी स्कूल फरीदाबाद
डॉ॰ विजय इंदु, गुड़गाँव
श्रीमती विधु गुप्ता, गुड़गाँव

आपसे कुछ बातें...

एक सम्राट अपने वज़ीर पर नाराज़ हो गया। उसने उसे मृत्युदंड दे दिया। लेकिन उस साम्राज्य का नियम था कि जब किसी को मृत्युदंड हो तो एक दिन पहले सम्राट स्वयं उस से मिलने आता था। फिर यह तो उसका खुद वज़ीर था। तो आया वज़ीर को मिलने, अपना घोड़ा बाँधा कारागृह के बाहर। वज़ीर से कहा, 'कुछ भी माँगना हो तो माँग लो। तुमने मेरी बहुत सेवाएँ कीं।

सम्राट यह कह ही रहा था कि वज़ीर दहाड़ मारकर रोने लगा। सम्राट ने कहा, 'अरे, तुम रोते हो। तुम्हारी आँखों में मैंने कभी आँसू नहीं देखे। तुम और मौत से डरो, यह तो मैं सोच भी नहीं सकता था।'

वज़ीर ने कहा, 'मौत से कौन डरता है मालिक, मैं किसी और बात के लिए रो रहा हूँ।'

सम्राट ने पूछा, 'वह कौनसी बात है, मैं पूरी करूँगा।'

वज़ीर ने कहा कि नहीं आप पूरी न कर सकेंगे। कोई भी पूरी न कर सकेगा। वह बात ही कुछ ऐसी है।'

ज़िद्द की सम्राट ने तो उसने कहा, 'आप कहते हैं तो कह देता हूँ, आप जिस घोड़े को लेकर आए हैं, उसके कारण रो रहा हूँ।' सम्राट ने कहा, 'पागल हो गए हो। घोड़े के लिए क्यों रोओगे?'

वज़ीर ने कहा कि जीवनभर इस जाति के घोड़े की मैं तलाश करता रहा, क्योंकि मैंने बारह वर्ष अपने जीवन के इसी साधना में लगाए थे। एक सद्गुरु के पास बैठकर मैंने घोड़ों को आकाश में उड़ाने की कला सीखी थी, मगर एक खास जाति का घोड़ा ही उड़ने में समर्थ हो सकता है और आज जब मरने की घड़ी है और केवल चौबीस घंटे मेरे हाथ में बचे हैं, तब यह घोड़ा मुझे दिखाई पड़ा। जिंदगी-भर इसकी तलाश करता था। मरते वक़्त मुझे और पीड़ा देने आए हैं, मृत्यु से नहीं रो रहा हूँ मालिक, इस घोड़े को देखकर रो रहा हूँ।

सम्राट के मन में वासना जगी। उसने पूछा, 'कितना समय लगेगा घोड़े को उड़ना सीखने में?' वज़ीर ने कहा, 'एक वर्ष।' सम्राट ने कहा, 'तो एक वर्ष के लिए तुम बाहर आ जाओ। अगर घोड़ा उड़ना सीख गया तो तुम्हारा मृत्युदंड रद्द, मैं अपना आधा साम्राज्य भी तुम्हें दूँगा।'

वज़ीर घोड़े पर बैठकर अपने घर लौटा। पति को घर आए देखकर पत्नी ने पूछा, 'आप कैसे लौट आए? क्या चमत्कार हुआ?' पति हँसने लगा, 'मैंने सम्राट से कहा कि एक साल में घोड़े को उड़ना सिखा दूँगा। इसलिए एक साल तो बचा।'

पत्नी ने कहा कि यह तुमने क्या किया, और मुश्किल खड़ी कर दी। मुझे पता है, तुमने ऐसी कोई कला कभी सीखी नहीं। झूठ ही बोलना था तो कम-से-कम दस-पाँच साल तो माँगते। एक साल तो यूँ बीत जाएगा, और यह एक साल हमारी छाती पर चट्टान की तरह रहेगा, गर्दन पर तलवार लटकी रहेगी। यह तुमने क्या किया?

वज़ीर ने कहा, 'नासमझ, तुझे ज़िंदगी का कुछ हिसाब पता है? अरे साल-भर में क्या नहीं हो सकता। घोड़ा तो नहीं उड़ेगा, यह पक्का है। मगर और बहुत कुछ हो सकता है। राजा मर सकता है, मैं मर सकता हूँ। कम-से-कम घोड़ा तो मर ही सकता है।'

और जो घटना घटी वह बहुत हैरानी की है। राजा ही नहीं मरा, घोड़ा ही नहीं मरा, वज़ीर भी मर गया। तीनों मर गए, साल-भर में तीनों समाप्त हो गए।

वस्तुतः लघुकथा किसी क्षण-विशेष में उपजे भाव, घटना या विचार की संक्षिप्त और शिल्प से तराशी गई प्रभावी अभिव्यक्ति है। अपनी संक्षिप्तता और सांकेतिकता में वह जीवन की व्याख्या को समेटकर चलती है। लघुकथा में वर्णन और विवरण का अवकाश नहीं होता, वरन् संकेत और व्यंजना से काम चलाया जाता है।

लघुकथा का उद्देश्य परंपरागत, निरर्थक और खोखले जीवनमूल्यों पर प्रहार करके नवीन एवं सार्थक जीवनमूल्यों के लिए भूमि तैयार करना होता है। लघुकथा प्रायः समस्या की ओर संकेत देकर ही मौन हो जाती है और अप्रत्यक्ष रूप में समाधान के लिए प्रेरित करती है। उसमें स्थितियों का निदान लेखक द्वारा सुझाया गया कम और पाठक द्वारा खोजा गया अधिक होता है।

आज के भाग-दौड़ से भरे जीवन में उपन्यास पढ़ने का अवकाश बहुत कम है, लेकिन पढ़ने की भूख उसे लघु आकार की रचनाओं की ओर अवश्य ले जाती है। इसी भावना से प्रेरित होकर लघुकथाओं का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। टेलीफ़ोन और इंटरनेट के युग में पत्र लिखने की आदत कम हो रही है, फिर भी हम आपके दो प्रेरक शब्दों की कामना करते हैं। इस अंक के लिए लघुकथा डाट काम का भी सहयोग लिया गया है।

संपादकीय

किसी भी विधा का महत्त्व समाज में उसके प्रभाव की स्वीकार्यता पर निर्भर है। आकारगत भेद पर किसी विधा को महत्त्वपूर्ण या महत्त्वहीन नहीं कहा जा सकता है। विगत कुछ वर्षों में लघुकथा की स्वीकार्यता विश्व-भर में बढ़ी है। हाल ही में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता-2014 और 'कथादेश' द्वारा निरंतर आयोजित प्रतियोगिताओं को लिया जा सकता है। विगत वर्षों में वीणा, हिंदी चेतना, अविराम साहित्यिकी, अभिनव इमरोज़, मधुमती आदि पत्रिकाओं के विशेषांकों से भी लघुकथा के महत्त्व की पुष्टि होती है। साहित्य की इस विधा-विशेष की चाहे जितनी परिभाषाएँ दी जाएँ, अंतत: सबका केंद्रबिंदु एक ही है—जनसामान्य की आशा, आकांक्षा को प्रस्तुत करना, दु:ख के पलों में उनके आँसू पोंछना, उमंग के क्षणों में उनके अधरों की मुस्कान बनना तथा संघर्ष के अवसर पर उनके साथ क़दम-से-क़दम मिलाकर चलना। लघुकथाकार अपनी उपस्थिति दर्ज कराए बिना अपनी बात कह जाए या इंगित कर जाए, यही उसकी रचनात्मक शक्ति है। सभी विधाओं में हमेशा विशिष्ट कम ही लिखा जाता रहा है। इस सबके बावजूद लघुकथा पर ध्यान सबसे पहले जाता है।

हमारे समाज में कुछ स्थितियाँ इतनी विकट हो चुकी हैं कि बदलाव की आँधी भी कुछ नहीं कर पाती, फिर भी आज का लघुकथाकार हर मोर्चे पर डटा है। घर-परिवार से लेकर दफ़्तर, बाज़ार, व्यवस्था सब पर उसकी पैनी नज़र है। सांप्रदायिकता पर उसके चोट करने के हथियार और तेज़ हुए हैं। चादर, शिनाख़्त, जानवर लघुकथाएँ इसे धारदार तरीक़े से व्यक्त करती हैं। पंथ को धर्म समझने के परिणाम आए-दिन सामने आते रहते हैं। इसे पढ़े-लिखे और अनपढ़ के बीच में नहीं बाँटा जा सकता। आज के रक्तपात करने वाले आतंकवादी भी पढ़े-लिखे हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ सोच का है, मानसिकता का है। अर्थ-पिशाच किसी से रोटी छीनता है। शिक्षातंत्र की छाती पर भी हृदयहीन शिक्षक चट्टान की तरह जमे हुए हैं। अभावग्रस्त पीढ़ी शिक्षा के सभी उपयुक्त अवसर गँवाने के लिए अभिशप्त है। पानीपत की तीसरी लड़ाई उसी की बानगी है। पारिवारिक संबंधों का क्षरण निरंतर होता जा रहा है, इसका एकमात्र कारण आर्थिक परवशता ही नहीं है; बल्कि दो पीढ़ियों के बीच में सिर उठाती वैचारिक असहिष्णुता भी है। इसकी अनुगूँज कमरा, बेटी का हिस्सा, पुराना दरवाज़ा, बूढ़े पाखी, पिंजरा, बूढ़ी सिंड्रेला में सुनाई देती है। सर्वहारावर्ग तो दो वक़्त की रोटी जुटाने में ही मर-खप जाता है। गेट मीटिंग, भूत, पेट, विवशता, चोर, रोज़ दिवाली में यह विवशता उकेरी गई है। पॉकेटमारी में व्यवस्था का नाकारापन और अधिक व्यथित करता है।

सामाजिक कोढ़ के रूप में कुछ धारणाएँ जीवन को प्रकारांतर से दूषित करने में लगी हैं। कुंडली, डाका, अपनों से निकलकर, बैठी लक्ष्मी, स्टेटस, अमंगल में विषयानुरूप विभिन्न धारणाएँ मुखर हुई हैं। प्रचलित कथानक को नया मोड़ देती लघुकथा भेड़िए आज की पारिवारिक दुर्गंध की तरफ़ ध्यान खींचती है, जिससे ध्यान हटाने के लिए रोज़ सड़कों पर फुसफुसे नारे लगाए जाते हैं।

बाज़ारवाद का नया शैतान 'मकड़ी' में उजागर होता है। डर, पुरुष, खिलौने, बहाव के सामने, बहुत बड़ा आदमी, छोटे हम का मनोविज्ञान कथ्य को नया रूप देता है। लड़ाई, भाग्य, छलकता हुआ भिक्षापात्र, रोशनी, शर्मिंदगी, अंतर, घर और कमरे, घर, सामंजस्य, माँ की ज़रूरत, हैप्पी बर्थ डे, जीवन की खुशबू और शीतल बयार का ही एक रूप हैं। कुछ सात्त्विक भी बचा रहे, तभी तो जीवन ख़ुशगवार होगा।

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल जी ने बहुत उदारता पूर्वक यह कार्य मुझको सौंपा। स्थान सीमित होने के कारण कुछ रचनाओं को स्थान नहीं मिल सका। हर पत्रिका की अपनी सीमाएँ हैं।

आशा करता हूँ, विविध भाव-रंगों का यह विशेषांक आप सबको पसंद आएगा ।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
rdkamboj49@gmail.com

लघुकथा–क्रम

शिनाख़्त, चादर / **सुकेश साहनी** 8
माँ के आँसू / **हरि मृदुल** 9
भूत / **डॉ॰ पूरन सिंह** 10
सामंजस्य / **अनिता ललित** 10
ज़हर / **रचना श्रीवास्तव** 11
माँ ने कहा था / **नरेंद्रकुमार गौड़** 12
पिंजरा / **सुरेश शर्मा** 12
कमरा, मकड़ी / **सुभाष नीरव** 13
सहानुभूति / **सीमा स्मृति** 14
मरुथल के वासी, बेटी का हिस्सा / **श्यामसुंदर अग्रवाल** 15
माँ की ज़रूरत / **श्यामसुंदर 'दीप्ति'** 16
गेट मीटिंग / **उर्मिलकुमार थपलियाल** 16
ज़मीन से जुड़कर / **सतीशराज पुष्करणा** 17
आदेश / **युगल** 17
दोजख़ / **भगीरथ** 18
छलकता हुआ भिक्षापात्र / **आनंद** 18
चिंता / **डॉ॰ मंजुश्री गुप्ता** 19
बूढ़ी सिन्ड्रैला / **रेखा रोहतगी** 19
बेख़बर, ब्रीफकेस में राष्ट्रप्रेम / **डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा** 20
मेरा बयान / **मधुदीप** 21
शैतानी / **किशोर श्रीवास्तव** 21
डाका / **कमल चोपड़ा** 22
रोशनी / **मुरलीधर वैष्णव** 22
प्रमाणपत्र / **प्रेम जनमेजय** 23
मुखौटे / **प्रेम गुप्ता 'मानी'** 23
कुंडली, पानीपत की तीसरी लड़ाई / **बलराम अग्रवाल** 24
आर्द्रता / **संतोष सुपेकर** 25
धर्म–कर्म, चोर / **सूर्यकांत नागर** 26
मेरी बारी, पुराना दरवाज़ा / **माधव नागदा** 27
संवाद, साईकिल / **सतीश राठी** 28
युग–परिवर्तन / **ऋता शेखर 'मधु'** 28
अनोखा बँटवारा / **श्याम सखा श्याम** 29
भाग्य /**रामकुमार आत्रेय** 30
वापसी / **मंजु मिश्रा** 30
बड़ा हूँ ना /**राधेश्याम भारतीय** 31
बूढ़े पाखी / **कमल कपूर** 31
रूपांतरण, पूतना बोध / **डॉ॰ उमेश महादोषी** 32
अंतर / **रत्नकुमार साँभरिया** 33
दानदाता / **डॉ॰ मीना अग्रवाल** 34
फटकार / **दिनेश पाठक 'शशि'** 34
विवशता / **सुमनकुमार घई** 35
उमंग, उड़ान और परिंदे / **राजकुमार निजात** 35
शर्मिंदगी, मुक्ति / **सुदर्शन रत्नाकर** 36
घर और कमरे / **डॉ॰ हरदीप कौर संधु** 37
बहाव के सामने, खिलौने / **डॉ॰ रामनिवास 'मानव'** 38
बेटियाँ / **डॉ॰ प्रद्युम्न भल्ला** 39
घर / **शशि पाधा** 39
बैठी लक्ष्मी, स्टेटस / **पवित्रा अग्रवाल** 40
पॉकेटमारी / **डॉ॰ शील कौशिक** 41
अब लौट चलें / **डॉ॰ अनीता राकेश** 41
भेड़िए, ज़ख़्म / **प्रियंका गुप्ता** 42
डर / **दीपक मशाल** 43
रोज़ दिवाली / **शशि पुरवार** 43
जल–संरक्षण / **कमला निखुर्पा** 44
गृहप्रवेश / **डॉ॰ हरीश नवल** 45
हैप्पी मदर्स डे / **कृष्णा वर्मा** 46
विमर्श / **डॉ॰ मोहम्मद साजिद ख़ान** 47
जब तक कविता बाक़ी है / **इंदिरा दांगी** 48
मोल–भाव / **डॉ॰ ध्रुवकुमार** 49
आठ सिक्के / **सुनील सक्सेना** 50
शरीफ़ों का मुहल्ला / **मनीषकुमार सिंह** 51
रज़ाई / **पुष्पा जमुआर** 52
जानवर / **उपेंद्रप्रसाद राय** 52
नासमझ / **नीलिमा टिक्कू** 53
बहुत बड़ा आदमी, खटमल / **सुभाषचंद्र लखेड़ा** 54
है ऐसा बिस्तर / **शोभा रस्तोगी** 54
आग / **गोवर्धन यादव** 55
एक हाथ वाला बूढ़ा / **रमेशचंद्र श्रीवास्तव** 55
अपना ही दुश्मन / **चैतन्य त्रिवेदी** 56
प्यार की जीत / **निर्मला सिंह** 56

सुकेश साहनी

शिनाख़्त

सांप्रदायिक दंगों के बाद शहर के हालात तेजी से सामान्य हो रहे थे, पर उस दिन सुबह गोल चौराहे पर किसी युवती की नग्न सिरकटी लाश मिलने की खबर से शहर में फिर सनसनी फैल गई थी।

साइरन बजाती पुलिस की गाड़ियाँ मौके पर पहुँच गई थीं। खोजी कुत्ते घटनास्थल को सूँघते फिर रहे थे। वहाँ युवती का नग्न शरीर पड़ा था, सिर गायब था। पास ही पूर्व विश्वसुंदरी का मुखौटा पड़ा था। अटकलों का बाज़ार गर्म था–'मुझे तो कोई जानी–मानी हस्ती लगती है। शिनाख्त न हो सके, इसीलिए सिर गायब कर दिया गया है।'

'विश्वसुंदरी का मुखौटा पहनाकर लड़की से बलात्कार किया गया है। हो न हो यह 'उन्हीं' सिरफिरों का काम है।'

जितने मुँह उतनी बातें। पुलिसवालों ने भीड़ को खदेड़ दिया था, पूछताछ शुरू हो गई थी। प्रमुख समस्या लाश की शिनाख्त को लेकर थी। सिर न होने की वजह से यह काम काफी मुश्किल हो गया था। युवती के जिस्म का कोई स्थायी पहचान चिह्न शिनाख्त में मददगार हो सकता था।

'कुछ पता चला?' इस्पेक्टर ने महिला हैड कांस्टेबिल से पूछा।

'नहीं सर, बहुत मुश्किल से मोहल्ले की एक औरत को शिनाख्त के लिए बुलाया जा सका। लाश पर पड़े नील और दूसरे चोट के निशानों को देखते ही वह रोने लगी। हमें लगा, वह बॉडी को पहचान गई है। उसने माना कि लाश उसकी बेटी की है, पर बाद में पता चला उसकी बेटी को मरे दो साल हो गए हैं।'

'नॉनसेंस!' इंस्पेक्टर ने झल्लाकर कहा, 'किस पगली को पकड़ लाए थे?'

जिला प्रशासन के हाथ–पैर फूले हुए थे। युवती की लाश मिलने के बाद से अफ़वाहों का बाज़ार गर्म था। दोनों संप्रदायों में तनाव बढ़ता जा रहा था। लाश की शिनाख्त न हो पाने से थानेदार हत्या की इस गुत्थी को सुलझाने में खुद को असमर्थ पा रहा था। उसका दिमाग भन्नाया हुआ था। तभी उसकी नज़र टीवी स्क्रीन पर दौड़ती ब्रेकिंग न्यूज पर पड़ी। मुख्यमंत्री ने सांप्रदायिक दंगों में मारे गए लोगों को पाँच–पाँच लाख रुपया मुआवजा देने की घोषणा की थी।

थाने के बाहर हो रहे शोर–शराबे से थानेदार का ध्यान भंग हुआ।

'सर! ताज्जुब है.....' हड़बड़ाए से हैड कांस्टेबिल ने भीतर आकर थानेदार को बताया, 'उस सिरकटी युवती की लाश पर अपना दावा करने वाले बहुत से लोग बाहर खड़े हैं, सर!'

चादर

दूसरे नगरों की तरह हमारे यहाँ भी ख़ास तरह की चादरें लोगों में मुफ़्त बाँटी जा रही थीं, जिन्हें ओढ़कर टोलियाँ पवित्र नगर को कूच कर रही थीं। इस तरह की चादर ओढ़ने–ओढ़ाने से मुझे सख़्त चिढ़ थी, पर मुफ़्त चादर को मैंने यह सोचकर रख लिया था कि

इसका कपड़ा कभी किसी काम आएगा। उस दिन काम से लौटने पर मैंने देखा सुबह धोकर डाली चादर अभी सूखी नहीं थी। काम चलाने के लिए मैंने वही मुफ़्त में मिली चादर ओढ़ ली थी। लेटते ही गहरी नींद ने मुझे दबोच लिया था।

आँख खुली तो मैंने ख़ुद को पवित्र नगर में पाया। यहाँ इतनी भीड़ थी कि आदमी पर आदमी चढ़ा जा रहा था। हरेक ने मेरी जैसी चादर ओढ़ रखी थी। उनके चेहरे तमतमा रहे थे। हवा में अपनी पताकाएँ फहराते जुलूस की शक्ल में वे तेज़ी से एक ओर बढ़े जा रहे थे। थोड़ी-थोड़ी देर बाद 'पवित्र पर्वत' के सम्मिलित उद्घोष से वातावरण गूँज उठा था। विचित्र-सा नशा मुझ पर छाया हुआ था। न जाने किस शक्ति के वशीभूत मैं भी उस यात्रा में शामिल था। इस तरह चलते हुए कई दिन बीत गए, पर हम कहीं नहीं पहुँचे। दरअसल, हम वहाँ स्थित पवित्र पर्वत के चक्कर ही काट रहे थे।

'हम कहाँ जा रहे हैं?' आख़िर मैंने अपने आगे चल रहे व्यक्ति से पूछ लिया।

'वह पवित्र पर्वत ही हमारी मंज़िल है।' उसने पर्वत की चोटी की ओर संकेत करते हुए कहा।

'हम वहाँ कब पहुँचेंगे?'

'क्या बिना पवित्र चढ़ाई चढ़े उस ऊँचाई पर पहुँचना संभव होगा?' मैंने शंका ज़ाहिर की।

इस पर वह एकबारगी सकपका गया, फिर मूँछें ऐंठते हुए संदेह भरी नज़रों से मुझे घूरने लगा।

तभी मेरी नज़र उसकी चादर पर पड़ी। उस पर ख़ून के दाग़ थे। मेरे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गई। मैंने दूसरी चारों पर गौर किया तो सन्न रह गया, कुछ ख़ून से लाल हो गई थीं और कुछ तो ख़ून से तरबतर थीं। सभी लोग हट्टे-कट्टे थे, किसी को चोट-चपेट भी नहीं लगी थी और न ही वहाँ कोई ख़ून-ख़राबा हुआ था, फिर उनकी चादरों पर ये ख़ून? देखने की बात ये थी कि जिसकी चादर जितनी ज़्यादा ख़ून से सनी हुई थी, वह इसके प्रति उतना ही बेपरवाह हो मूँछें ऐंठ रहा था। यह देखकर मुझे झटका-सा लगा और मैं पवित्र नगर में निकल पड़ा।

लौटते हुए मैंने देखा, पूरा देश दंगों की चपेट में था, लोगों को ज़िंदा जलाया जा रहा था, हर कहीं ख़ून-ख़राबा था। मैंने पहली बार अपनी चादर को ध्यान से देखा, उस पर भी ख़ून के छींटे साफ़ दिखाई देने लगे थे। मैं सब कुछ समझ गया। मैंने क्षण उस ख़ूनी चादर को अपने जिस्म से उतार फेंका।

185, **उत्सव, महानगर, पार्ट** 2
बरेली 243122

हरि मृदुल

माँ के आँसू

यह उसकी अपनी माँ से अंतिम मुलाक़ात थी, हालाँकि तब उसे इस बात का इल्म नहीं था। वह शहर लौटते समय माँ से विदाई ले रहा था, तो माँ फूट-फूटकर रो पड़ी थी। वह लगातार रोए जा रही थी। उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ था कि माँ इतना तो कभी नहीं रोई। वह कुछ समझ नहीं पाया। हाँ, उसने यह ज़रूर किया कि जेब से रूमाल निकाला और माँ के आँसू पोंछने लगा। पूरा रूमाल आँसुओं से तर हो गया था।

माँ अभी भी रोए जा रही थी।

नौकरी का सवाल था। उसे किसी भी हालत में शहर लौटना था। माँ के आँसू उसे नहीं रोक सके। अलबत्ता उसने माँ के आँसुओं से भीगा रूमाल अपनी जेब में डाल लिया था।

शहर पहुँचते ही माँ के चल बसने की ख़बर आ गई। उसने जेब से रूमाल निकाला, वह अभी तक गीला था। न जाने क्यों, उसने यह रूमाल अलमारी में सुरक्षित रख दिया।

आज काफ़ी समय बाद उससे मेरी मुलाक़ात हुई है। बातचीत के दौरान उसने बताया कि माँ के आँसुओं वाला यह रूमाल अभी तक उतना ही गीला है।

कोई और होता, तो उसे इस बात पर ज़रूर आश्चर्य होता, लेकिन मुझे क़तई नहीं हुआ है।

दीक्षिता अपार्टमेण्ट्स, साईराम नगर, अंबाडी रोड,
वसई (पश्चिम), ठाणे मुंबई 401202

डॉ॰ पूरन सिंह

भूत

बाबा बहुत मेहनत करते थे लेकिन जमींदार बेगार तो करवाता था, पैसे नहीं देता था। कभी-कभार दे दिए तो ठीक नहीं तो नहीं। उन्हीं पैसों से किसी तरह गुज़र होती थी।

एक दिन दोपहर को मैंने माँ से कहा, 'बहुत भूख लगी है।'

माँ कुछ नहीं बोली। उसने मिट्टी के बरतन उलटकर दिखा दिए थे।

मेरी भूख और तेज़ हो गई थी। भूख के तेज़ होते ही मस्तिष्क भी तेज़ हो गया था। पास ही श्मशान घाट था, जहाँ बड़े-बड़े लोग अपने बच्चों को भूत-प्रेत से बचाने के लिए नारियल, सूखा गोला पूरी-खीर कई बार मिष्ठान भी रख आते थे। यह सब काम दोपहर में होता था या फिर आधी रात को।

मैं श्मशान घाट चल दिया था। संयोग से वहाँ खीर पूरी और सूखा गोला रखा था।

गोले पर सिंदूर और रोली लगी थी। मैंने इधर-उधर देखा। कोई नहीं था। मैंने जल्दी-जल्दी आधी खीर पूरी खा ली थी और गोला झाड़ पोंछकर अपनी जेब में रख लिया। आधी खीर पूरी लेकर मैं घर आया था। मेरा चेहरा चमक रहा था।

चमकते चेहरे को देखकर माँ ने पूछा, 'भूख से भी चेहरा चमकता है क्या। तू इतना खुश क्यों है?

मैंने बची हुई आधी खीर-पूरी माँ के आगे कर दी थी। माँ सब-कुछ समझ गई थी।

माँ की आँखें छलक गई थीं और उसने मुझे अपने आँचल में छिपा लिया था मानो भूत से बचा रही हो कि उसके होंठ फड़फड़ाने लगे थे, 'भूत, भूख से बड़ा थोड़े ही होता है।'

मैं कुछ नहीं समझा था। मैं माँ के आँचल में और छिपता चला गया था।

240, **बाबा फरीदपुरी, वेस्ट पटेलनगर**
नई दिल्ली 110008

अनिता ललित

सामंजस्य

महिला-दिवस का आयोजन था। हॉल महिलाओं से खचाखच भरा हुआ था। फुसफुसाहट के मधुर स्वर बीच-बीच में गूँज उठते थे और पूरे माहौल में इत्र की मिली-जुली सुगंध घुली हुई थी। एक महिला स्टेज पर भाषण दे रही थी–'हम महिलाएँ अब घर में सजाने वाली वस्तु नहीं रह गई हैं। हमारा अपना एक अलग वजूद है, अपना ध्येय है, अपनी जरूरतें हैं,' हॉल में बैठी हुई कुछ महिलाएँ दूर बैठी महिलाओं से अभिवादन का आदान-प्रदान कर रहीं थीं, कुछ दूसरों के वस्त्रों का आकलन कर रही थीं। बीच-बीच में तालियाँ भी बजा देती थीं।

इतने में श्रीमती शर्मा ने श्रीमती सिन्हा से कहा, 'क्या हुआ मिसेज सिन्हा, आज आप आने में लेट हो गईं? सिन्हा साहब की तबियत अब कैसी है?'

श्रीमती सिन्हा ने हलके से मुस्कुराकर कहा, 'सिन्हा जी की तबियत तो अब पहले से बेहतर है। देर तो बहू के ऑफिस के कारण हुई। आज शीनू की अपने बॉस के साथ मीटिंग थी।'

श्रीमती शर्मा के आँखों में एक खुराफ़ाती जिज्ञासा जाग उठी, चेहरे पर आश्चर्य के भाव लाते हुए तुरंत पूछ बैठीं, 'अच्छा! फिर..!'

'फिर क्या! शीनू बेचारी संकोच में थी, परेशान हो रही थी कि क्या करे, कैसे मना करे अपने बॉस को! तो मैंने ही उससे कहा कि वह चिंता न करे! ! अपनी मीटिंग ख़त्म करके आ जाए, उसके बाद मैं इस फंक्शन में आ जाऊँगी। जब वह घर लौटी तभी मैं आई'–श्रीमती सिन्हा ने कहा! यह बताते समय उनके चेहरे पर एक आत्मसंतुष्टि का भाव, एक सुकून, एक तेज था और श्रीमती शर्मा के चेहरे पर एक बनावटी, हारी हुई, खिसियाई हुई शर्मिंदगी-भरी हँसी थी। स्टेज पर महिला का भाषण अंतिम चरण पर था, 'जिस दिन हम महिलाएँ, महिलाओं का दर्द समझ लेंगी, वही दिन हमारी उन्नति की ओर हमारा पहला क़दम होगा..।'

1/16 **विवेक खंड, गोमतीनगर**
लखनऊ (उ॰प्र॰) 226010)

रचना श्रीवास्तव

ज़हर

अभी कुछ महीने हुए थे डेंटन (अमेरिका) आए हुए। आते समय तो बहुत अच्छा लग रहा था नई दुनिया, नए सपने। पर अब इस मशीनरी देश में मैं स्वयं को बहुत अकेला महसूस करने लगी। मधुर के जाने के बाद तो घर जैसे काटने दौड़ता। शाम को घर से नीचे उतर बस थोड़ा टहल लेती तो अच्छा लगता। अब तो टहलना मेरा रोज़ का नियम बन गया था। एक दिन देखा कि मेरे नीचे वाले अपार्टमेंट में कोई रहने आया। एक औरत और उसके साथ एक प्यारी-सी तीन या चार साल की बच्ची थी। अक्सर जब मैं टहलने जाती, वह बच्ची अपनी खिड़की में खड़ी मुझको देखती रहती और एक प्यारी-सी मुस्कान के साथ हाय! कहती। मैं भी उसी प्यार से उसका उत्तर देती। कभी-कभी वह मुझे बाहर खेलती मिल जाती। मुझे देखकर मेरे पास आती; पर जैसे ही अपनी माँ को आते देखती तो मुझसे दूर भाग जाती। उसने बताया कि उसका नाम क्रिस्टी है और वह चार साल की है। पापा पास में नहीं रहते हैं। उससे कभी-कभी मिलने आते हैं। जब तक उसकी माँ नहीं आ जाती, बस वह यही छोटी-छोटी बातें करती रहती। एक दिन जब मैं टहलकर वापस आई तो वह जैसे मेरा ही इंतज़ार कर रही थी। मुझे देखते ही बोली–'आई वाण्ट टू सी योर होम। केन आई कम विद यू।' मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ; पर उसकी भोली सूरत और मासूम आँखें जिस तरह मुझे देख रहीं थीं; मैं उसे मना नहीं कर पाई। पर मन में कहीं संकोच भी था। अत: जल्दी से घर दिखाकर हम सीढ़ियों पर आकर बैठ गए।

'आपके घर से कितनी अच्छी खुशबू आ रही थी। मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरे घर में मम्मी पता नहीं क्या क्या बनाती हैं, अजीब-सी महक आती है।'

'नहीं क्रिस्टी, ऐसे नहीं कहते। मम्मी तुम्हारे लिए ही तो बनाती हैं। तुम लोग मीट खाते हो न, उसी की महक होगी है न।'

'हाँ, आप सही कह रही हैं, पर वह महक मुझे अच्छी नहीं लगती। आपके कपड़े मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। इसको क्या कहते हैं? हाथों में क्या पहना है? माथे पर क्या लगाया है?'

इसी तरह से वो बहुत-सी बातें पूछती रही और मैं उसके छोटे-छोटे भोले सवालों के जवाब देती रही। मैंने उसके माथे पर एक छोटी-सी बिंदी भी लगा दी। वह चिड़िया- सी चहक उठी 'क्या मैं ये रख सकती हूँ?' बिंदी का पत्ता हाथों में लेकर उसने मुझसे पूछा।

'हाँ, ये तुम्हारे लिए ही है।'

तभी उसकी माँ की आवाज़ आई–'क्रिस्टी वेयर आर यू?'

क्रिस्टी एकदम सहम गई। उसकी सारी चहक काफ़ूर हो गई।

वह जाने लगी; पर उसकी माँ सीढ़ियों पर आ गई। मैंने हाय! कहा पर उसने कोई उत्तर न देकर सिर्फ़ सिर झटक दिया। उसने क्रिस्टी का हाथ पकड़ा, उसके माथे से बिंदी उतारकर फेंकते हुए बोली–'तुमको कितनी बार मना किया है! इनसे बात मत किया करो। ये जादू-टोना जानते हैं। ये हाथियों और साँपों के देश से आए हैं।'

वह न जाने और क्या-क्या बोलती जा रही थी। क्रिस्टी ने एक बार मुड़कर बेबसी से मेरी ओर देखा। उसकी मम्मी उसको लगभग खींचते हुए ले जा रही थी।

मुझे समझ में आ गया था कि क्रिस्टी अपनी मम्मी को देखकर भाग क्यों जाती थी?

1161 W Duarte Road,Unit 25,
Arcadia California 91007, USA

नरेंद्रकुमार गौड़

माँ ने कहा था

कमला ने बाज़ार से रिक्शा लिया और घर की तरफ़ चल पड़ी। रिक्शा एक 18-20 साल का लड़का खींच रहा था। कमला अपनी आदत के अनुसार लड़के से बातें करने लगी।

'क्या नाम है रे, तेरा?'

'श्याम।'

'कहाँ का रहने वाला है?'

'रोहतक का।'

'रोहतक खास या आस-पास कोई गाँव?'

'हाँ, रोहतक के पास जमापुर गाँव।'

'क्या?' तू जमालपुर का है। जमालपुर में किसका?

'लक्ष्मण का।'

'तू लक्ष्मण का छोरा है? रे, मैं भी जमालपुर की हूँ। मुझे पहचाना नहीं। असल में कैसे पहचानेगा, जब मैं ब्याहकर इस शहर में आई तब तू शायद पैदा भी नहीं हुआ होगा। तेरी माँ का ख़ूब आना-जाना था हमारे घर में। सब राज़ी-ख़ुशी तो हैं न?

घर के सामने उतरकर कमला बोली-'ये ले बीस रुपए और चल घर के अंदर, चाय-पानी पीकर जाइए।' 'नहीं दीदी, मैं किराया नहीं लूँगा। माँ ने कहा था कि गाँव की कोई बहन-बेटी मिले तो किराया मत लेना।'

हाउस नं॰ 153, **गली नं**-5, **ए ब्लॉक,**
शीतला कॉलोनी, गुड़गाँव (हरियाणा) 122001

सुरेश शर्मा

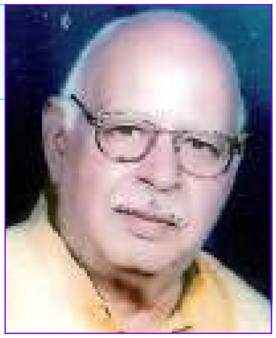

पिंजरा

दीनानाथ अस्सी पार कर चुके थे। पिछले तीन-चार वर्षों से लकवाग्रस्त होने से पलंग कुछ ऐसा पकड़ा कि उठने का नाम नहीं लिया। पुत्र और पुत्रवधू डॉक्टर थे। अत: तीमारदारी, सेवा-भाव में कोई कमी नहीं थी। इकलौता पोता स्कूल चला जाता था। घर दिनभर सूना रहता था। अत: अंदर के बैडरूम से बाहर के बरांडानुमा कमरे में उनका पलंग लगा दिया गया। एक छोटा टी॰वी॰ भी रखकर उन्हें रिमोट पकड़ा दिया। कोने में एक तोते का पिंजरा भी था। आते-जाते डॉक्टर पुत्र ख़ुद उसके खाने-पीने का ध्यान रखता। उससे बात किया करता। पिंजरे में हाथ डालकर उसे प्यार करता। तोता भी इतना लाड़-दुलार पाकर जैसे निहाल हो जाता। पिंजरे के चारों ओर, ऊपर-नीचे उछल-कूदकर ख़ुशी से 'टें-टें....करता हुआ झूम उठता।

दीनानाथ चाहते थे पुत्र घड़ी-दो-घड़ी उनसे भी बतियाए, हाल-चाल पूछे। मगर हर दिन निराश ही होते। आज जब डॉक्टर लौटा तो रोज़ की तरह तोते के पिंजरे पास रुका। उससे बात की, दाना-पानी देखा और फुर्ती से भीतर चला गया। तोता पिंजरे में चहक रहा था। उनकी तरफ देखकर टें...टें.....का शोर कर रहा था। दीनानाथ को सहन नहीं हुआ। वह भीतर ही भीतर क्रोध से, ईर्ष्या से सुलग उठे। जैसे-तैसे उठे। दीवार का सहारा लेकर लड़खड़ाते हुए पिंजरे तक जा पहुँचे। काँपते हाथ से उन्होंने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया।

41, **काउंटी पार्क कॉलोनी महालक्ष्मीनगर के पास**
किब्स हास्पिटल रोड, इंदौर 452001

सुभाष नीरव

कमरा

‘पिताजी, क्यों न आपके रहने का इंतजाम ऊपर बरसाती में कर दिया जाए?’ हरिबाबू ने वृद्ध पिता से कहा।

‘देखिए न, बच्चों की बोर्ड-परीक्षा सिर पर हैं। बड़े कमरे में शोर-शराबे के कारण वे पढ़ नहीं पाते। हमने सोचा, कुछ दिनों के लिए यह कमरा उन्हें दे दें।’ बहू ने समझाने का प्रयत्न किया।

‘मगर बेटा, मुझसे रोज़ ऊपर-नीचे चढ़ना-उतरना कहाँ हो पाएगा?’ पिता ने चारपाई पर लेटे-लेटे कहा।

‘आपको चढ़ने-उतरने की क्या ज़रूरत है! ऊपर ही हम आपको खाना-पानी सब पहुँचा दिया करेंगे और शौच-गुसलखाना भी ऊपर ही है। आपको कोई दिक्कत नहीं होगी।’

‘और सुबह-शाम घूमने के लिए चौड़ी खुली छत है।’ बहू ने अपनी बात जोड़ी।

पिताजी मान गए। उसी दिन से उनका बोरिया-बिस्तर ऊपर बरसाती में लगा दिया गया।

अगले ही दिन, हरिबाबू ने पत्नी से कहा, ‘मेरे दफ्तर में एक नया क्लर्क आया है। उसे एक कमरा चाहिए किराए पर। एक हजार तक देने को तैयार है। मालूम करना मुहल्ले में अगर कोई....’

‘एक हजार रुपए!....’ पत्नी सोचने लगी-क्यों न उसे हम अपना छोटा वाला कमरा दे दें?

‘वह जो पिताजी से खाली करवाया है?’ हरिबाबू सोचते हुए-से बोले, ‘वह तो बच्चों की पढ़ाई के लिए।’

‘अजी, बच्चों का क्या है!’ पत्नी बोली, ‘जैसे अब तक पढ़ते आ रहे हैं, वैसे अब भी पढ़ लेंगे। उन्हें अलग से कमरा देने की क्या ज़रूरत है?’

अगले दिन वह कमरा किराए पर चढ़ गया।

मकड़ी

अधिक बरस नहीं बीते, जब बाज़ार ने ख़ुद चलकर उसके द्वार पर दस्तक दी थी। चकाचौंध से भरपूर लुभावने बाज़ार को देखकर वह दंग रह गया था। अवश्य बाज़ार को कोई ग़लतफ़हमी हुई होगी, जो वह ग़लत जगह पर आ गया—उसने सोचा था। उसने बाज़ार को समझाने की कोशिश की थी कि यह कोई रुपये-पैसे वाले अमीर व्यक्ति का घर नहीं, बल्कि एक ग़रीब बाबू का घर है, जहाँ हर महीने बँधी-बँधाई तनख़्वाह आती है और बमुश्किल पूरा महीना खींच पाती है। इस पर बाज़ार ने हँसकर कहा था, ‘आप अपने आपको इतना हीन क्यों समझते हैं? इस बाज़ार पर जितना रुपये-पैसों वाले अमीर लोगों का हक़ है, उतना ही आपका भी? हम जो आपके लिए लाए हैं, उससे अमीर-ग़रीब का फ़र्क ही ख़त्म हो जाएगा।’ बाज़ार ने जिस मोहित कर देने वाली मुस्कान में बात की थी, उसका असर इतनी तेज़ी से हुआ था कि वह बाज़ार की गिरफ़्त में आने से स्वयं को बचा न सका था।

अब उसकी जेब में सुनहरी कार्ड रहने लगा था। अकेले में उसे देख-देखकर वह मुग्ध होता रहता। धीरे-धीरे उसमें आत्मविश्वास पैदा हुआ। जिन वातानुकूलित चमचमाती दुकानों में घुसने का उसके अंदर साहस नहीं होता था, वह उनमें गर्दन ऊँची करके जाने लगा।

धीरे-धीरे घर का नक्शा बदलने लगा। सोफ़, फ्रिज़, रंगीन टीवी, वाशिंग-मशीन आदि घर की शोभा बढ़ाने लगे। आस-पड़ोस और रिश्तेदारों में रुतबा बढ़ गया। घर में फ़ोन की घंटियाँ बजने लगीं। हाथ में मोबाइल आ गया। कुछ ही समय बाद बाज़ार फिर उसके द्वार पर था।

इस बार बाज़ार पहले से अधिक लुभावने रूप में था। मुफ़्त कार्ड, अधिक लिमिट, साथ में बीमा दो लाख का। जब चाहे वक़्त-बेवक़्त ज़रूरत पड़ने पर ए॰टी॰एम॰ से कैश। किसी महाजन, दोस्त-यार, रिश्तेदार के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं।

इसी बीच पत्नी भंयकर रूप से बीमार पड़ गई थी। डॉक्टर ने आपरेशन की सलाह दी थी और दस हज़ार का खर्चा बता दिया था। इतने रुपये कहाँ थे उसके पास? बँधे-बँधाए वेतन में से बमुश्किल गुज़ारा होता था। और अब तो बिलों का भुगतान भी हर माह करना पड़ता था। पर इलाज तो करवाना था। उसे चिंता सताने लगी थी। कैसे होगा? तभी, जेब मे रखे कार्ड उछलने लगे थे, जैसे कह रहे हों–'हम है न!' धन्य हो इस बाज़ार का! न किसी के पीछे मारे-मारे घूमने की ज़रूरत, न गिड़गिड़ाने की। ए॰टी॰एम॰ से रुपया निकलवाकर उसने पत्नी का आपरेशन कराया था।

लेकिन, कुछ बरस पहले बहुत लुभावना लगने वाला बाज़ार अब उसे भयभीत करने लगा था। हर माह आने वाले बिलों का न्यूनतम चुकाने में ही उसकी आधी तनख़्वाह ख़त्म हो जाती थी। इधर बच्चे बड़े हो रहे थे, उनकी पढ़ाई का खर्च बढ़ रहा था। हारी-बीमारी अलग थी। कोई चारा न देख, आफ़िस के बाद वह दो घंटे पार्ट टाइम करने लगा। पर इससे अधिक राहत न मिली। बिलों का न्यूनतम ही वह अदा कर पाता था। बकाया रकम और उस पर लगने वाले ब्याज ने उसका मानसिक चैन छीन लिया था। उसकी नींद ग़ायब कर दी थी। रात में, बमुश्किल आँख लगती तो सपने में जाले-ही-जाले दिखाई देते, जिनमें वह खुद को बुरी तरह फँसा हुआ पाता।

छुट्टी का दिन था और वह घर पर था। डोर-बेल बजी तो उसने उठकर दरवाज़ा खोला। एक सुंदर-सी बाला फिर उसके सामने खड़ी थी, मोहक मुस्कान बिखेरती। उसने फटाक से दरवाज़ा बंद कर दिया। उसकी साँसें तेज़ हो गई थीं जैसे बाहर कोई भयानक चीज़ देख ली हो। पत्नी ने पूछा, 'क्या बात है? इतना घबरा क्यों गए? बाहर कौन है?'

'मकड़ी!' कहकर वह माथे का पसीना पोंछने लगा।

आर॰ज़ै॰एफ़॰-30ए, दूसरी मंजिल, प्राचीन काली मंदिर के पीछे (नाला पार), वैस्ट सागरपुर, पंखा रोड, नई दिल्ली 110046
subhashneerav@gmail.com

सहानुभूति

सीमा स्मृति

'मीरा अस्पताल में है।' मिसेज शर्मा ने कहा।

'क्या हुआ मीरा को! मिसेज बंसल ने कहा।

'मालूम नहीं! कुछ तो हुआ है पंद्रह दिन से एडमिट है।'

'कहाँ एडमिट है?'

'अपोलो में।'

'अरे वाह, वह तो फाइव स्टार अस्पताल है।'

'फिर क्या मीरा को क्या फर्क पड़ता है? सिंगल है। शादी हुई नहीं। उसने कौनसे बच्चे पालने हैं। क्या करेगी इतना पैसा! कौनसा साथ लेकर जाना है? गहने कपड़े तो खरीदती नहीं, उसे कम-से-कम इलाज तो फाइव स्टार करवाना चाहिए। मिसेज बंसल ने कहा।

'चल यार, कल ऑफिस से जल्दी निकल उसे देखने अस्पताल में चलते हैं।'

'हाँ बढ़िया आइडिया है। बॉस की फेवरिट स्टाफ है मीरा। उसकी बीमारी की खबर सुन मेहता जी काफी द्रवित से लग रहे हैं। हमें अस्पताल जाने की परमिशन के लिए मना नहीं करेंगे। सुन, हम जरा जल्दी निकलने की परमिशन लेंगे। अस्पताल में दस पंद्रह मिनट बैठ उसका हाल-चाल पता कर, शापिंग करने चलेंगे। कुछ खाएँगे पीएँगे। बहुत दिन हो गए कलेवा के दही भल्ले और गोलगप्पे खाए हुए।'

'वाह!! गुड आइडिया।' मेरे तो मुँह में पानी आ गया।

'ऑफिस में शॉट लीव लेने के ऐसे मौके बहुत कम मिलते हैं।'

जी 11 **विवेक अपार्टमेंट, श्रेष्ठ विहार दिल्ली** 110092

श्यामसुंदर अग्रवाल

मरुथल के वासी

ग़रीबों की एक बस्ती में लोगों को संबोधित करते हुए मंत्री जी ने कहा, 'इस साल देश में भयानक सूखा पड़ा है। देशवासियों को भूख से बचाने के लिए ज़रूरी है कि हम सप्ताह में कम-से-कम एक बार उपवास रखें।'

मंत्री के सुझाव से लोगों ने तालियों से स्वागत किया।

'हम सब तो हफ़्ते में दो दिन भी भूखे रहने के लिए तैयार हैं।' भीड़ में सबसे आगे खड़े व्यक्ति ने कहा।

मंत्री जी उसकी बात सुनकर बहुत प्रभावित हुए और बोले, 'जिस देश में आप जैसे भक्त लोग हों, वह देश कभी भी भूखा नहीं मर सकता।'

मंत्री जी चलने लगे तो जैसे बस्ती के लोगों के चेहरे प्रश्नचिह्न बन गए हों।

उन्होंने बड़ी उत्सुकता के साथ कहा, 'अगर आपको कोई शंका हो तो दूर कर लो।'

थोड़ी झिझक के पश्चात् एक बुज़ुर्ग बोला, 'साब! हमें बाकी पाँच दिन का राशन कहाँ से मिलेगा?'

बेटी का हिस्सा

उनके दोनों बेटों को ज़मीन-जायदाद का बँटवारा करने में अधिक समय नहीं लगा। लेकिन वृद्ध माता-पिता का बँटवारा नहीं हो पा रहा था। कोई भी बेटा दोनों को अपने पास रखने को तैयार न था। बेटे चाहते थे कि एक भाई माँ को रखे, दूसरा पिता को। पिता का स्वास्थ्य अभी कुछ ठीक था, इसलिए उसे पास रखने को दोनों तैयार थे। बीमार माँ को कोई भी नहीं रखना चाहता था। पाँच-छह सौ रुपये महीने का तो उसकी दवा का ख़र्च ही था। बड़ा उसे इस शर्त पर रखने को तैयार था कि बदले में छोटा उसे पचास हज़ार रुपये दे।

दो दिन तक कोई फ़ैसला नहीं हो पाया। माता-पिता भी बुढ़ापे में एक-दूसरे से अलग होकर नहीं रहना चाहते थे। तीसरे दिन उनकी बेटी अपने ससुराल से आई। बहन को आई देख दोनों भाई स्तब्ध रह गए।

'आज अचानक कैसे आना हुआ बहन?' बड़े ने पूछा।

'अपना हिस्सा लेने आई हूँ।'

'तेरे लिए तो जीजा जी इतना छोड़ गए है कि सात जन्म. .' छोटा बोला।

'वही कुछ लेने आई हूँ, जो तेरे जीजा जी नहीं छोड़ गए।'

और विधवा बेटी अपने हिस्से के रूप में वृद्ध माता-पिता को साथ ले गई।

575, **गली नः** 5, **प्रतापनगर,**
कोटकपूरा (पंजाब) 151204

श्यामसुंदर 'दीप्ति'

मां की ज़रूरत

'कर लो पता अपने काम का, साथ ही उन्हें चेयरमैन बनने की बधाई ही दे आओ इसी बहाने', पत्नी ने आग्रह किया तो भारती चला गया, वरना वह तो कह देता था, 'देख, गर काम होना होगा तो सरदूल सिंह खुद ही सूचित कर देगा। हर पाँच-चार दिन के बाद मुलाकात हो ही जाती है।'

तबादलों की राजनीति वह समझता था। कैसे मंत्री ने विभाग सँभालते ही सबसे पहले तबादलों का ही काम किया। बदली के आर्डर हाथ में पकड़ते ही भारती ने अपनी हाजरी रिपोर्ट दी और योजना बनाने लगा कि क्या करे? कहाँ रहे। बच्चों को साथ ले जाए या रोज़ाना आए- जाए। बच्चों की पढ़ाई के मद्देनज़र आखिरी निर्णय यही हुआ कि अभी शिफ़्ट नहीं करते और 'कपल केस' के आधार पर एक अर्जी डाल देते हैं और तो भारती के वश में कुछ था नहीं। फिर पत्नी के कहने पर एक अर्जी राजनीतिक साख वाले पड़ोसी, सरदूल सिंह को दे आया था।

सरदूल सिंह घर पर ही मिल गया और भारती को गरमजोशी से मिला। भारती को भी अच्छा अच्छा लगा। आराम से बैठ, चाय मँगवाकर सरदूल कहने लगा, 'छोटे भाई! वह अर्जी मैंने तो उस समय पढ़ी नहीं, वह अर्जी तूने अपनी तरफ से क्यों लिखी, 'माताजी की तरफ से लिखनी थी। ऐसे कर, नई अर्जी लिख। माताजी की तरफ से लिख कि मैं एक बूढ़ी औरत हूँ, अक्सर बीमार रहती हूँ। मेरी बहू भी नौकरी करती है, बच्चे छोटे हैं, देर-सवेर दवाई की ज़रूरत पड़ती है, मेरे बेटे के पास रहने से मैं..। कुछ इस तरह से बात बना। बाकी तू समझदार है। मैंने परसों फिर जाना है, मंत्री से भी मुलाकात होगी।' उसने आत्मीयता दिखाते हुए कहा।

भारती ने सिर हिलाया, हाथ मिलाया और घर की तरफ हो गया। माँ की तरफ से अर्जी लिखी जाए। माँ को मेरी ज़रूरत है...माँ बीमार रहती है, कमाल! बताओ अच्छी-भली माँ को यूँ ही बीमार कर दूँ। सुबह उठ बच्चों को स्कूल का नाश्ता बनाकर देती है। हम दोनों को तो ड्यूटी पर जाने की अफरा-तफरी पड़ी होती है। दोपहर को आने पर रोटी पकी हुई मिलती है। मैं तो कई बार कह चुका हूँ कि माँ बर्तन साफ करने के लिए नौकरानी रख लेते हैं, माँ ने वह नहीं रखने दी। कहने लगी, मैं सारा दिन बेकार क्या करती हूँ। ....कहता है लिख दे, बेटे का घर में रहना ज़रूरी है। मेरी बीमारी के कारण, मुझे इसकी ज़रूरत है। पूछे कोई इससे, माँ की हमें ज़रूरत है कि....। नहीं नहीं, माँ की तरफ से नहीं लिखी जा सकती अर्जी।'

97, **गुरुनानक एवेन्यू, मजीठा रोड**
अमृतसर 143004

उर्मिलकुमार थपलियाल

गेट मीटिंग

हमेशा की तरह की गेटमीटिंग थी। बैठे हुए मजदूरों के चेहरे पर एक औपचारिकता थी। शिथिल, क्लांत और बासी-तिबासी। आज बाहर से यूनियन के एक जुझारू नेता आने वाले थे। वे आए। चेहरे पर ही क्रांति की चमक थी। मजदूरों ने तालियों से उनका स्वागत किया। मजदूरों की दशा देखकर वे पहले द्रवित और फिर क्रोध में हो गए। लम्बा-चौड़ा भाज़ण न देकर वे सीधे प्वाइंट पर आ गए। उन्होंने चीखकर पूछा-क्या तुम्हारे घर में राशन है?

सभी मजदूर मायूसी में बोले-नहीं।

नेता- रहने को घर है?

सब-नहीं।

नेता-पहनने को कपड़ा है?

सब-नहीं।

नेता- कुछ पैसा -वैसा है?

सब-नहीं

नेता-तुम्हारे पास माचिस है?

सब- हाँ, है।

नेता-तो जला क्यूँ नहीं डालते इस व्यवस्था को। अभी इसी वक्त।

सब-माचिस में तीलियाँ नहीं हैं।

ए 1075/ 3, **इंदिरानगर, लखनऊ** 226016

सतीशराज पुष्करणा

जमीन से जुड़कर

जब सारे बच्चे गए थे, तो कई समस्याओं एवं उलझनों ने उसे आ घेरा। वह अपनी पत्नी का अभाव महसूस करने लगा। वह सोचने लगा कि वह कितनी समझदार थी, मैं जब कभी परेशान होता, वह मेरे साथ बैठक मेरी समस्याओं को चुटकी बजाते ही हल कर दिया करती थी। इस तरह उसने मुझे पंगु बना दिया था। आज मेरी स्थिति यह है कि मुझे अँधेरी गुफाओं में कोई रास्ता ही सुझाई नहीं देता है। सोचते-सोचते वह अपने अतीत के पच्चीस वर्षों पूर्व की गहराइयों में डूब गया।

वह कोई बहुत बड़ा फुटबॉलर तो नहीं, किंतु अपने शहर में तो वह अच्छे प्लेयर्स में अवश्य ही गिना जाता था। तब हमारा चार्जमैन भी प्लेयर था। वह कद्र भी करता था। अत: उसने कभी कोई ऐसा काम नहीं बताया था कि उसके कपड़े काले या दागदार हो जाएँ। धीरे-धीरे उसे काम करने की आदत ही न रही, बस चार्जमैन के साथ उसके कार्यालय में फुटबॉल की चर्चा करना, कभी-कभार कुछ लिखने-पढ़ने का काम दे देता था। दिन बहुत अच्छे व्यतीत हो रहे कि उस चार्जमैन का ट्रांसफर हो गया। इसकी जगह पर मुखर्जी आ गया। वह मेरे उजले कपड़े बर्दाश्त नहीं कर पाता था। वह जब-तब उसे इंजन के बॉयलर में घुसने का ही आदेश देता था। परिणामत: दिन में दो बार उसे कपड़े बदलने पड़ते थे। वेतन के अनुसार धोबी का यह खर्च कर्ज के रूप में बदलने लगा।

अहं की लड़ाई बढ़ती ही जा रही थी। मुखर्जी को तो अपने अहं को संतुष्ट करने में सफल रहा, किंतु वह मेरा अहं तोड़ता जा रहा था।

आज मुखर्जी का भी ट्रांसफर हो गया। मेरे लिए खुशी की बात अवश्य थी; किंतु अब मेरी समस्या यह है कि मैं अब भी अपने अहं को बरकरार रखूँ या तोड़ दूँ? अभी वह इतना सोच ही पाया था कि उसे लगा उसकी पत्नी का प्यार भरा स्वर उसके अंतस् को कह रहा है, 'कल से अपनी ड्यूटी के ही कपड़े पहनकर जाया करो। अब तो रिटायर भी होने वाले हो। प्लेयर भी नहीं हो। यह नया साहब है, अभी उसके साथ तो किसी अहं का प्रश्न नहीं जुड़ा है। नाहक अहं पालकर अपने को परेशान क्यों करते हो? नीचे से ऊपर जाना सुख देता है; किंतु ऊपर से नीचे आने में दुख: होता है तो क्यों न जमीन से ही जुड़े रहो, यहाँ गिरने का खतरा कभी नहीं होगा।' आख़िरी वाक्य ने उसे बहुत राहत दी। वह सहज हो गया और उसकी पलकें बोझिल होने लगीं। बत्ती बुझाकर उसने चादर से अपने बदन को ढक लिया।

लघुकथानगर
महेन्द्रू पटना 800006

युगल

आदेश

जब वह आदमी निकट चला आया तो कुत्ते ने पूछा, 'कौन हो तुम?'

'सिपाही।'

सिपाही बोला, 'मैं कुत्ते को पकड़ता हूँ और उन्हें बड़े पिंजरे में डाल देता हूँ।'

'क्यों?'

'कुत्ते भूँकते हैं। इससे जनतंत्र के सत्ताधिकारियों के चैन में बाधा होती है। उनके सुनहरे सपनों में खलल पहुँचता है।'

'लेकिन कुत्ते तो भूँककर लोगों को चोरों से आगाह करते हैं। जगाते हैं।'

'सत्ताहीन सोचते हैं, लोगों को जागना नहीं चाहिए। जागा आदमी उनके लिए ख़तरा हो सकता है।'

'क्या वे अपने को चोर समझते हैं?'

'भूँको नहीं। ज़्यादा भूँकनेवाला उनकी नज़र में पागल होता है। मुझे आदेश है, पागल कुत्ते को गोली मार दो।'

और उसने आदेश का पालन किया।

मोहीउद्दीन नगर, समस्तीपुर (बिहार)

भगीरथ

दोज़ख़

आँखों में शीशे की किरचें चुभ रही थीं। बीच बाज़ार में खून से लथपथ लाश पड़ी थी। बिल्कुल अकेली। जिस भीड़ में वह था, अब वह गलियों, गलियारों में भागती हुई–चाय–घरों और सिनेमा–घरों में घुस गई थी। सिर्फ वह एक साक्षी था, जिसने पूरी घटना को घटते हुए देखा था। उसने आँखें बंद कर लीं, नहीं देखा जाता। उसने ईश्वर से दुआ माँगी–प्रभु ये आँखें वापिस ले लो और उस दिन वह अंधा हो गया।

दृश्य बेमानी हो गए थे, लेकिन अब दूसरी इंद्रियाँ ज्यादा संवेदनशील हो गई थीं। अब वह लाठियों के सहारे चलता तो आवाजों से ही सब–कुछ पता लगा लेता। अब उसे आवाजें परेशान करने लगीं। मारो, काटो, विधर्मी है। इतने में ट्रक से कुचलता हुआ साइकिल सवार कि...कि. ......बिचारा। उसने फिर ईश्वर से दुआ माँगी और वह बहरा हो गया।

इस तरह वह अंधा, बहरा और गूंगा हो गया। यहाँ तक कि अंत में उसने ईश्वर से दुआ की कि उसके प्राण ही ले ले। ज्योंही वह यमराज के दरबार में पहुँचा, उसे दोजख की आग में झोंकने की आज्ञा दे दी गई। यह कैसा न्याय है। न मैंने बुरा देखा, न बुरा सुना, न बुरा कहा। फिर यह सजा। प्रभु, तुम तो दयानिधान हो।

'मैंने न केवल तुम्हें जीवन दिया, बल्कि उसकी सब उपलब्धियों से परिपूर्ण किया। इसके उपरांत भी तुम लगातार जीवन से भागते रहे, दब्बू और कायर की तरह मेरी रचनात्मक शक्ति का उपहास किया तुमने। इसकी यही सजा है।' और उसे पकड़कर दोजख की आग में झोंक दिया गया।

माडर्न पब्लिक स्कूल रावतभाटा, कोटा (राज)

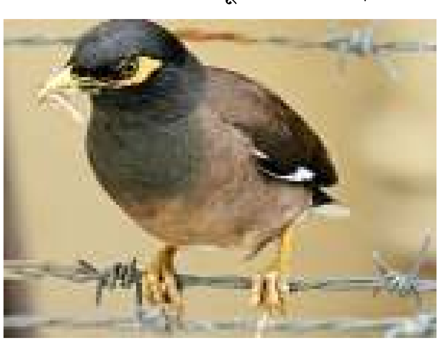

आनंद

छलकता हुआ भिक्षापात्र

वह कस्बे का मेला था। एक भिखारी हर किसी के सामने हाथ फैला रहा था, 'बाबूजी, चवन्नी, अठन्नी. ..।' एक किशोर अपने छोटे भाई के साथ भिखारी के सामने से गुज़रा। भिखारी ने आदतवश हाथ फैलाया, लेकिन नंगे पैरों तथा नाम–मात्र को कपड़ा पहने दोनों धूल भरे बालक खुद भिखारी–से लग रहे थे। उसने हाथ वापस कर लिया।

कुछ देर बाद उसे दोनों बालक एक खिलौने वाले के सामने दिखाई दिए। छोटे ने एक खिलौने की ओर संकेत किया, 'भैया, वह ले लो।' बड़े ने कीमत पूछी, जेब के सिक्कों को टटोला और विवशता से कदम आगे बढ़ा लिए 'यह अच्छा खिलौना नहीं है मुन्ने। जल्दी टूट जाएगा। हम कोई मजबूत खिलौना लेंगे।'

भिखारी ने वात्सल्य भरी दृष्टि से उन्हें देखा। काल्पनिक बच्चों की जो रूपाकृति अक्सर प्रकट होती थी, वह मानो सजीव रूप में उसके सामने थी, 'बिल्कुल ऐसे ही होते।' वह ख्वाबों में खो गया, 'अगर शादी हुई होती तो इतनी ही उम्र के, भोलेभाल, गोल–मटोल, धूलभरे, ऐसे ही, लेकिन ऐसा नसीब कहाँ।' उसने आह भरी।

दोपहर हो चली थी। गरमी से राहत पाने और कुछ देर आराम करने के लिए वह एक वृक्ष के नीचे जा बैठा। उसे वे ही बच्चे फिर दिखाई दिए। गरमी से चेहरे कुम्हला गए थे। शरीर से पसीना चू रहा था। अब छोटा भाई खिलौने की जिद नहीं कर रहा था, 'भैया, भूख लगी है।' बड़ा उसे समझा रहा था, 'अगर हमने खाने पर पैसे खर्च कर दिए तो खिलौना कैसे खरीदेगें? चल, तुझे पानी पिला देता हूँ। भूख नहीं रहेगी।'

गरमी से राहत पाने के लिए वे भी चलते–चलते वृक्ष के नीचे खड़े हो गए। छोटा इस बार भूख के मारे रो पड़ा था, 'भैया, बहुत जोरों से भूख लगी है।'

भिखारी ने दोनों को अपने पास बुलाया। स्नेह से छोटे को चूमा और जेब से मुट्‌ठीभर सिक्के निकालकर उसकी हथेली पर रख दिए।

गाँव व डाकखाना-पुर, तहसील-बवानी खेड़ा
जिला भिवानी, हरियाणा 127032

डॉ॰ मंजुश्री गुप्ता

चिंता

मनीषा के हाथों में बेटे का छठी कक्षा का रिपोर्ट कार्ड था। तीन विषयों में सी-ग्रेड देखकर पहले तो वह बेटे पर चिल्लाई, बहुत गुस्सा किया, उसके बाद फूट-फूटकर रो पड़ी।

प्रिया की बेटी के ग्रेड्स देखो–हर विषय में 'ए' ग्रेड मिली है। एक रोहन है–सारा दिन कंप्यूटर गेम्स और वीडियो और टी॰वी॰। मन होता है सब तोड़कर फेंक दो। पता नहीं जीवन में कुछ कर भी पाएगा या नहीं? इतने सपने सँजो रखे हैं इसे लेकर।

सारा दिन वह तनावग्रस्त रही। पता नहीं क्या होगा इस लड़के का! इसका भविष्य तो अंधकारमय है।

दूसरे दिन बाज़ार में उसकी एक पुरानी सहेली नीता एकाएक बाज़ार में मिल गई। लगभग पाँच साल बाद। घर-गृहस्थी के काम में दोनों ऐसे उलझीं कि मिलना ही नहीं हुआ। दोनों एक-दूसरे को देखकर-चहक उठीं।

नीता ने कहा–'चल, रेस्टोरेंट में चलकर कॉफ़ी पीते हैं। नीता के चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता की झलक मनीषा को दिखाई दे रही थी।

बातों-बातों में नीता ने मनीषा से पूछा–'तू इतनी तनावग्रस्त क्यों दिख रही है? क्या हुआ?'

मनीषा ने उदासी से बताया–'क्या बताऊँ? बेटा पढ़ता-लिखता ही नहीं है। तीन सब्जेक्ट्स में 'सी ग्रेड' आ गया है।'

'तेरे कितने बच्चे हैं? और क्या कर रहे हैं?' मनीषा ने नीता से पूछा।

नीता ने कहा–'मेरा एक ही बेटा है 10 साल का। मगर वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है। हमारी बहुत कोशिशों और इलाज के बाद कल उसने पहली बार मुझे 'मम्मा' कहा! इसलिए मैं इतना खुश हूँ।'

एफ़-25 **यू आई टी कॉलोनी, ढोलाभाटा**
अजमेर (राजस्थान) 305007

रेखा रोहतगी

बूढ़ी सिन्ड्रैला

मोहिनी वत्स ने दर्पण में निहारा तो वह स्वयं को पहचान नही पा रही थी। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर दिया गया हीरे और पन्ने का सैट, जिसे उन्होंने पति के बाद कभी पहना ही नहीं तथा उससे मैच करती हरे रंग की किनारी वाली सफेद साड़ी। उनके मन में टीस-सी उठी कि वह घर में रहें या बाहर जाएँ, किसी को इससे कोई प्रयोजन नहीं। उनका घर में होना या न होना तभी गौरतलब होता है, जब कोई सेविका या परिचारिका छुट्टी पर हो। उन्होंने बहुत चाहा कि वह यह बात दोनों बेटों और बहुओं से कह पाएँ कि वह आज किसी के घर या मंदिर कीर्तन-भजन के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रपति-भवन में एक भव्य कार्यक्रम में 'सरस्वती-वंदना' लिए आमंत्रित हैं। उनके अपने जाने की बात कहने पर किसी ने कुछ नहीं पूछा तो कुछ भी जिक्र करने का प्रश्न नहीं उठता।

दोपहर का समय था। डाइनिंग हॉल में टी॰वी॰ चल रहा था। दोनों बहुएँ आज एक साथ खाने की मेज पर थीं। दोनों बड़े बच्चे स्कूल से आ गए थे। कपड़े बदलकर खाने के लिए आ बैठे थे कि सहसा गर्वित ने कहा–दादी टी॰वी॰ वाली औरत जैसी लग रही हैं। उसकी बात पर कोई ध्यान देता कि दरवाजे पर घंटी बज उठी। इस बार अर्पित उठा और दरवाजे पर पहुँचकर बोला–मम्मा! राष्ट्रपति भवन से कोई सी॰डी॰ आई है, मिसेज वत्स के नाम से। दोनों बहुएँ जैसे ही उठने को हुईं कि अर्पित ने मोहिनी से कहा–दादी, यह सी॰डी॰ आपके नाम से आई है। दोनों बहुओं के चेहरे फक्क पड़ गए। वे हैरान होकर कभी सुरीले स्वर में तन्मय होकर गाती हुई मनमोहिनी गायिका को देखतीं, कभी सूती साड़ी में लिपटी अस्त-व्यस्त सास मोहिनी को देखतीं, जो बड़े सलीके से खाना परोस रही थी।

बी-801, **आशिआना अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज**-1
दिल्ली 110091

बेख़बर

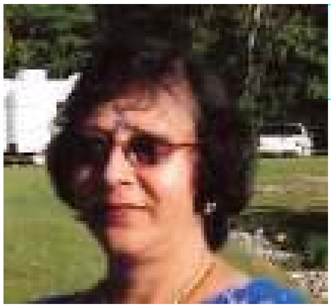

डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा

स्कूल की मार्गदर्शक परामर्श दाता ने किंडर गार्डन के छोटे-छोटे बच्चों को चरित्र-निर्माण का ज्ञान देते हुए समझाया कि तुम्हारे गुप्तांगों को कोई हाथ लगाए, तुम्हें डाँटे, तुम्हारे साथ कोई अनुचित हरकत करे जो तुम्हें अच्छी ना लगे या तुम्हें कोई शारीरिक चोट पहुँचाए, चाहे वे माँ-बाप ही क्यों ना हों, तो पुलिस को फ़ोन करो या टीचर से बात करो। छोटे-छोटे बच्चों के दिमाग़ बड़ी-बड़ी बातों से बोझिल हो गए। विचार उलझे बालों-से उलझ गए। बाल-बुद्धि ने यह ज्ञान अपने हिसाब से ग्रहण किया। पापा ने कल उसे थप्पड़ मारे थे। उसने टीचर को बता दिया। उसी का परिणाम, घर में हंगामा हो रहा है।

सामाजिक कार्यकर्ता उनका एक-एक कमरा, ख़ास कर बच्चे का कमरा बार-बार देख रही है। ढूँढ रही है कि कहीं कोई ऐसा सुराग मिल जाए ताकि माँ-बाप दोषी साबित हो सके। उसे परिवार से अलग करने की बात कही जा रही है और माँ दिल पर हाथ रखकर रो रही है। पापा भरी-भरी आँखों से अपनी बात स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं। कार्यकर्ता की बातें सुन बच्चा रुआँसा हो गया है। वह एक तरफ़ डरा-सहमा दुबका बैठा सोच रहा है कि शिकायत करने के बाद उसे माँ-बाप से अलग कर पोषक-गृह में भेज दिया जाएगा। ऐसा तो गाइडेंस कौंसलर ने नहीं बताया था। बालबुद्धि और उलझ गई। माँ-बाप से अलग होना पड़ेगा, सुनकर वह बेचैन हो गया। टीचर पर बहुत गुस्सा आया, मैडम ने और लोगों को क्यों बता दिया? उसके माँ-बाप तो बहुत अच्छे हैं। उसे बहुत प्यार करते हैं। वह उन्हें छोड़कर कहीं नहीं जाएगा। वह कई दिनों से होमवर्क नहीं कर रहा था, तभी तो पापा ने गुस्से में एक थप्पड़ मारा था, उसने झूठ बोला था कि पापा ने कई थप्पड़ मारे थे और पापा रोज़ मारते हैं। वह तो चाहता था कि टीचर उसके पापा को डाँटे और पापा उसे होमवर्क के लिए न कहें।

माँ रोते-रोते बेहोश होने लगी। समाजसेविका पानी लेने दौड़ी। बच्चे को लगा कि उसकी माँ मर रही है। वह उसके बिना कैसे रहेगा? वह रात को कैसे सोएगा। उसकी माँ उसे हर बात पर चूमती है, कहानियाँ सुनाती है। पापा उसे ढेरों खिलौने लेकर देते हैं। उसके साथ फिशिंग, बॉलिंग, साइकिलिंग के लिए जाते हैं।

वह ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए चिल्लाने लगा-'मेरे मम्मी-पापा को छोड़ दें। मैंने टीचर से झूठ बोला था। मेरे पापा ने मुझे थप्पड़ नहीं मारे थे।' कहकर वह भागकर माँ से लिपट गया।

समाजसेविका बच्चे का रोना देख पसीज गई। उसके अपने बच्चे उसकी आँखों के सामने घूम गए।

'बच्चे इस उम्र में परिणाम से बेख़बर अनजाने में कई बार झूठ बोल देते हैं।' खुली फाइल को बंद करते हुए वह यह कहकर घर से बाहर निकल गई।

ब्रीफकेस में राष्ट्रप्रेम

'आप हिंदी में उत्तर क्यों दे रहे हैं, जबकि हम आपसे प्रश्न अँग्रेज़ी में पूछ रहे हैं?' साक्षात्कार करनेवाले ने पूछा। हमने विदेश से आपको हिंदी बोलने के लिए नहीं बुलाया।' साक्षात्कार बोर्ड के दूसरे सदस्य ने कहा।

'श्रीमान आप मेरा जिस पद के लिए साक्षात्कार ले रहे हैं, वह ग्रामीण विकास योजना के अंतर्गत आता है और जिसके लिए मुझे ग्रामीणों से सीधा संवाद करना होगा। वह संवाद मैं अँग्रेज़ी में तो नहीं करूँगा, ग्रामीणों की भाषा में ही करूँगा और जिस राज्य के पद के लिए आपने मुझे बुलाया है, वहाँ के जन हिंदी बोलते हैं।' डॉ॰ कुमार श्रीवास्तव ने अत्यधिक विनम्रता से उत्तर दिया।

'मिस्टर श्रीवास्तव आप हमें क्या समझाने की कोशिश कर रहे हैं। रूल इज़ रूल। आपको इंटरव्यू इंग्लिश में ही देना पड़ेगा। हिंदी का ज्ञान विदेश के लिए रखें, वहाँ इसकी ज़रूरत है ।' सामनेवाले ने रुखाई और अभद्रता से उत्तर दिया।

'भद्रजन, जहाँ से आया हूँ, अँग्रेज़ी तो मैं वहाँ हर समय बोलता हूँ। अपनी विशेषज्ञता देशवासियों के साथ बाँटकर देश के लिए कुछ करना चाहता था। सोचता था शायद कुछ बदलाव ला सकूँ। स्वदेश लौटकर अपने लोगों में अपनी भाषा में काम करने के लिए इस पद को स्वीकार करना चाहता था। अब समझ में आया कि ग्रामीण योजनाएँ क्यों इतनी 'सफल' हो रही हैं और कैसे आप जैसे लोग सुफल प्राप्त कर रहे हैं! ऐसी कार्यप्रणाली में एग्रीकल्चर और लघुग्राम उद्योग की विशेषज्ञता भी मेरी कोई सहायता नहीं कर पाएगी।' कहकर डॉ॰ कुमार श्रीवास्तव ने अपना ब्रीफकेस उठाया, उसमें राष्ट्रप्रेम बंद किया और कमरे से बाहर चले गए।

101 Guymon Ct., Morrisville, NC-27560, USA

मधुदीप

मेरा बयान

वह कहता है कि मैं मर चुकी हूँ मगर मुझे पूरा विश्वास है कि मैं ज़िंदा हूँ और अपने पूरे होशो-हवास में यह सब बयान कर रही हूँ। इस बात को लेकर हम दोनों के बीच रात ही अबोला खिंच गया था।

अगर मैं मर चुकी होती तो इस समय आपसे रू-ब-रू कैसे होती? क्या मरा हुआ व्यक्ति किसी से संवाद कर सकता है? अगर मैं कहूँ कि मैं नहीं, वह मर चुका है, तो क्या वह इसे स्वीकार कर लेगा?

यह सच है कि गहराती रात में उन चार भेड़ियों ने मेरी देह नोची है, मगर इससे मैं यह कैसे मान लूँ कि मैं मर चुकी हूँ! मैं ज़िंदा हूँ, यह सौ प्रतिशत सच है और इसका प्रमाण है कि मैं इस घटना की पूरी रपट थाने में लिखवाकर आई हूँ और सुबह फिर इस संदर्भ में मुझे पुलिस थाने जाना है।

'तुम्हें क्या ज़रूरत थी पुलिस थाने जाने की और इस सबकी रिपोर्ट लिखवाने की!' रात को सब-कुछ जानने के बाद उसकी यही प्रतिक्रिया थी।

'तो क्या मुझे इसके बाद चुप बैठ जाना चाहिए था?' मुझे लग रहा था कि मेरी पीठ पर एक कीड़ा रेंग रहा है। मैं हाथ पीछे कर उसे हटाना चाह रही थी, मगर मेरा हाथ वहाँ तक पहुँच ही नहीं पा रहा था।

'अब इससे कुछ हासिल होगा?' एक प्रश्न उछला था उस ओर से।

'क्यों नहीं..?'

'इस घटना के बाद तुम मर चुकी हो और मुर्दों को कुछ हासिल नहीं हुआ करता।'

'यह झूठ है, सरासर झूठ। मैं ज़िंदा हूँ..सौ प्रतिशत! और ज़िंदा लोग लड़ाई से भागा नहीं करते।'

उसके पास इसका शायद कोई जवाब नहीं था। वह मुँह फिराकर पसर गया था।

मैं कुर्सी में धँसी अपने ज़िंदा होने का प्रमाण ढूँढ रही हूँ, क्योंकि उस प्रमाण के साथ मुझे सुबह होते ही पुलिस थाने जाना है।

दिशा प्रकाशन, 138/16, **त्रिनगर, दिल्ली** 110035

किशोर श्रीवास्तव

शैतानी

आज फिर मैंने रोज़-रोज़ की शैतानियों से तंग आकर अपने सात वर्षीय बेटे की धुनाई कर दी थी। मैंने उसे चेतावनी देते हुए कहा था, 'यदि आज तूने मुझसे बात भी की तो तेरी खैर नहीं।' यही नहीं, ग़ुस्से में आज मैंने उसके साथ खाना न खाने की प्रतिज्ञा भी कर डाली थी, जबकि मैं जानता था कि वह शाम का खाना मेरे साथ ही खाता है, भले ही उसे मेरा कितना ही इंतज़ार क्यों न करना पड़े। आज मैंने कार्यालय जाते समय रोज़ की तरह उसे प्यार भी नहीं किया था।

कार्यालय जाकर मैं अपने रोज़मर्रा के कामों में इस कदर उलझा रहा कि कब चपरासी मेरी टेबुल पर लंच रखकर चला गया और कब मैंने उसे खा लिया, इसका मुझे होश ही न रहा। कार्यालय के कुछ महत्त्वपूर्ण कामों के चलते शाम को घर पहुँचने में भी मुझे काफ़ी देरी हो गई थी। घर पहुँचा तो पत्नी सोती हुई मिली। बेटे ने ही दरवाज़ा खोला, परंतु मैं बगैर उससे कोई बात किए ड्राइंगरूम में सोफ़े पर पसर गया।

अचानक मेरी नज़र फ़र्श पर गिरी एक तस्वीर पर पड़ी, जो ड्राइंगरूम की दीवार पर काफ़ी समय से टँगी हुई थी। शायद हवा से उखड़कर वह गिर गई थी। मैं स्टूल पर चढ़कर उस तस्वीर को पुनः दीवार पर टाँगने की कोशिश करने लगा। तस्वीर टाँगने के पश्चात् जब मैं स्टूल से नीचे उतरने को झुका तो देखा, बेटा दोनों हाथों से ज़ोर से स्टूल थामे खड़ा है। उसे वहाँ देखकर मेरा पारा फिर गरम हो उठा। मैं उस पर बरसते हुए चिल्लाया, 'क्यों रे, अब तू यहाँ स्टूल पकड़े क्या कर रहा है? क्या कोई नई शरारत सूझी है तुझे?'

इस पर डरते-डरते वह धीरे से बुदबुदाया, 'पापा, शरारत नहीं, कहीं आप गिर पड़ते तो?'

धीमी आवाज़ में कहे गए उसके उपर्युक्त शब्द मेरे कानों से ज़ोर से जा टकराए। मेरा ग़ुस्सा पलभर में ही काफ़ूर हो गया था। मैंने स्टूल से नीचे उतरकर उसे अपनी बाहों में भर लिया था। मेरी बाहों में आते ही वह मेरे कान के पास अपना मुँह सटाकर धीरे से फुसफुसाया था, 'पापा, चलो मेरे साथ, खाना खा लो। मुझे बहुत भूख लगी है। मैंने आपके इंतज़ार में सुबह से कुछ भी नहीं खाया है।'

916-**बाबा फरीदपुरी, वेस्ट पटेलनगर**
नई दिल्ली 110008
kishorsemilen@gmail.com

कमल चोपड़ा

डाका

बारात दरवाजे तक पहुँची ही थी कि लड़के के भाइयों ने आतिशबाजी शुरू कर दी। तीस-तीस रुपए का एक-एक एटम बंब....धाँय...धाँय। नशे में धुत्त बारातियों के तेवर देखकर लड़की के पिता ब्रजनाथ जी का पसीना छूट गया और वे हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

उसी गाँव में उसी समय थोड़ी ही दूर सेठ मदन लाल की हवेली पर पहुँचते ही डाकुओं ने दो-चार हवाई फायर किए। सेठ पसीना-पसीना काँपते हुए हाथ जोड़कर खड़े हो गए, 'जो चाहे ले जाओ... बस हमारी जान बख्श दो।' डाकुओंका सरदार चीखा, 'वीरू, चंदू, राधे....जल्दी करो, बर्तन-सर्तन जो मिले... जल्दी करो, गठरियाँ बाँध लो और जल्दी से निकल चलो....'

गाँव में डाका पड़ने की खबर शादी वाले घर भी पहुँच चुकी थी। बारातियों में भी हड़बड़ी मच गई।

'पंडित जी जल्दी करो.... रघु, सत्तू, विजय, जल्दी जल्दी से दहेज का सामान बाँधो... बर्तन-सर्तन जो कुछ भी है, छिटपुट सभी समेटो... गठरियों में ही बाँध लो और निकल चलो....'

उधर डाकू सरदार चीख रहा था, 'सेठ! नगदी, जेवर, बर्तन अपने आप जल्दी से निकाल दे।' और सेठ जी काँपते हुए उनकी आज्ञा का पालन करने लगे।

'बधाई हो ब्रजनाथ जी! फेरे भी हो गए... अब जरा जेवर और नगदी भी जल्दी से दीजिए। समय बड़ा खराब है। हमें अँधेरा रहते ही तारों की छाँव में ही निकल पड़ना चाहिए।'

उधर डाकू सरदार सिंह कह रहा था, 'साथियों! इससे पहले कि कोई मुसीबत खड़ी हो, हमें सुबह होने से पहले अँधेरे में ही निकल जाना चाहिए....।'

डाकुओं ने जाते हुए फिर से हवाई फायर किए। उनके जाते ही सेठ जी व उनका लुटा-पिटा परिवार रोने लगा।

डोली चली तो एक बार फिर से बैंड खड़खड़ाने लगा। डोली के जाते ही ब्रजनाथ व उनके घर वाले खाली-खाली घर को देखकर सिसकने लगे। जमा-जोड़ और 'लक्ष्मी' सब-कुछ चला गया।

थोड़ी ही देर में गाँव में पुलिस आ गई। लेकिन न जाने क्यों पुलिस का एक भी आदमी ब्रजनाथ जी के घर नहीं आया था।

1600/114, **त्रिनगर, नई दिल्ली** 110035

रोशनी

मुरलीधर वैष्णव

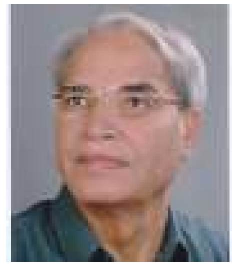

बेटे की बारात धूमधाम से सजी थी। बैंड बाजे की फास्ट धुन पर दूल्हे के मित्र व परिजन खूब उत्साह-उमंग से नाच रहे थे। बैंड मास्टर अपने काम से ज़्यादा वहाँ न्योछावर हो रहे नोट लपकने में लगा था। दूल्हे के चाचा ने खुशी के मारे जोश में आकर पचास के कड़क नोटों की पूरी गड्डी ही उछाल दी थी। नोट हथियाने के लिए बैंड पार्टी,घोड़ी वाले और ढोल वालों में आपाधापी मच रही थी।

उधर गैस बत्ती के भारी लैम्प सिर पर ढोए ठंड में सिकुड़ रही क्षीणकाय लड़कियाँ मन मसोसे यह सब देख रही थीं। उनके चेहरों पर इस अवसर से वंचित रहने का दु:ख और मायूसी की छाया साफ़ दिखाई दे रही थी। उनकी यह दशा देखकर दूल्हे के पिता का मन करुणा से भर गया। उसने सौ-सौ के कुछ नोट बेटे पर न्योछावर करके रोशनी ढो रही प्रत्येक लड़की को दो-दो की संख्या में थमा दिए।

इस अप्रत्याशित खुशी से दमकते उन लड़कियों के चेहरों से वहाँ फैली रोशनी कई गुना बढ़ गई थी।

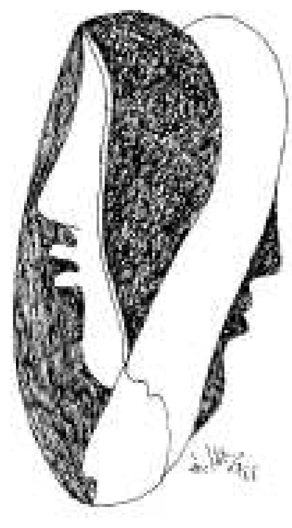

ए-77
रामेश्वरनगर, बासनी
प्रथम
जोधपुर 342005

प्रेम जनमेजय

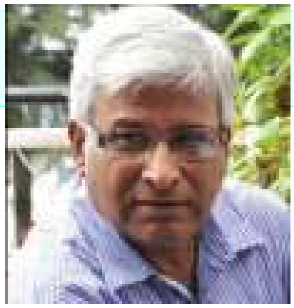

प्रमाणपत्र

पहला–नमस्कार, भाई साहब! मुझे अपने बच्चे के जन्म का प्रमाणपत्र चाहिए।

दूसरा–ठीक है, इस फ़ार्म को भरकर एक रुपया जमा करा देना, पंद्रह दिन बाद मिल जाएगा।

पहला–पंद्रह दिन में! मुझे तो जल्दी चाहिए, एडमिशन फ़ार्म के साथ देना है।

दूसरा–आप लोग ठीक समय पर जागते नहीं हैं और हमें तंग करते हैं, ठीक है। बड़े बाबू से बात करनी होगी, दस रुपये लगेंगे। एक हफ़्ते में सर्टिफ़िकेट मिल जाएगा।

पहला–भाई साहब मुझे दो दिन में चाहिए, आप कुछ कीजिए न प्लीज़!

दूसरा–ठीक है, बीस दे दीजिए। लंच के बाद ले जाइएगा।

पहला–मैं विजिलेंस से हूँ, तो तुम रिश्वत लेते हो!

दूसरा–हुजूर माई-बाप हैं। यह आज की कमाई आपकी सेवा में हाज़िर है।

पहला–ग़लत काम करते हो और हमें तंग करते हो। तुम्हें सस्पेंड भी किया जा सकता है।

दूसरा–हुजूर, एक हज़ार दे दूँगा।

पहला–तुम मुझे धर्मसंकट में डाल रहे हो, मुझे तुम्हारे बाल-बच्चों का ध्यान आ रहा है, परंतु ड्यूटी इज ड्यूटी।

दूसरा–हुजूर दो हज़ार से ज़्यादा की आक़ात नहीं है।

पहला–ठीक है, ठीक से काम किया करो। आदमी को पहचानना सीखो। मुझसे मिलते रहा करो। तुम जैसे कुशल कर्मचारियों की देश को बहुत आवश्यकता है।

यह कहकर उसने हाथ मिलाया, संधि पर हस्ताक्षर किए और देश तीव्रता से प्रगति करने लगा।

73, **साक्षर अपार्टमेंट्स ए-3 पश्चिम विहार नई दिल्ली** 110063

प्रेम गुप्ता 'मानी'

मुखौटे

उस घर के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। पर उस दिन तो हद ही हो गई। ठंडे गैस-स्टोव के ऊपर रखी पतीली की अधपकी दाल सारी कहानी कह रही थी तो रसोईघर के फर्श पर लुढके बर्तन अपनी किस्मत को रो रहे थे। बाहर ड्राइंगरूम की हालत भी कुछ ऐसी ही थी। ऐसी परिस्थिति में बच्चे भी सहमे बैठे थे।

उस घर के इस रेखाचित्र का कोई ख़ास कारण नहीं था। बस्स, पति-पत्नी के सम्मिलित गुस्से ने तिल का ताड़ बना दिया था। थोड़ी देर पहले ही उन दोनों में बच्चों को लेकर भीषण तकरार हुई थी और यह अस्त-व्यस्त स्थिति उसी का परिणाम थी।

घर के सामान पर गुस्सा उतारने के बाद वे दोनों अभी एक-दूसरे पर गुस्सा उतार ही रहे थे, तभी बाहरी दरवाज़े की कुंडी खड़की। उन दोनों के लड़ने में व्यवधान पड़ा तो पति ने आग्नेय दृष्टि से पत्नी की ओर देखा, 'जाओ, जाकर देखो, तुम्हारे मायके से कोई मरने तो नहीं आया है।' प्रत्युत्तर में पत्नी ने भी आग बरसाई, 'तुम्हीं देखो, मरने तो अक्सर तुम्हारे ही घर से कोई आता है।'

दरवाज़ा खोलने के सवाल पर दोनों उलझ ही रहे थे कि तभी उनके बेटे ने दरवाज़ा खोल दिया, 'मम्मी, पापा, मिश्रा अंकल-आंटी आए हैं।' मिश्रा दंपती के आने की बात सुनकर दोनों ही हड़बड़ा गए, 'अरे, आइए, आइए, बहुत दिनों बाद आना हुआ। अभी हमलोग आप ही को याद कर रहे थे।'

पति ने उन दोनों को बैठने का इशारा किया तो सहसा पत्नी व्यस्त हो उठी, 'अरे मुन्नी-पप्पू, यह सब सामान तो ठीक से रख दो। अंकल-आंटी क्या सोचेंगे?' फिर मेहमानों की ओर मुखातिब हुई, 'क्या बताऊँ, ये बच्चे तो धमा-चौकड़ी मचाकर पूरा घर ही उलट-पलट कर देते हैं।'

माँ की बात पर हतप्रभ होकर नन्ही-मुन्नी कुछ कहने को घूमी कि तभी समझदार पप्पू उसे घसीटता बाहर ले गया। थोड़ी देर बाद बड़ी आत्मीयता से एक-दूसरे से सटे बैठे पति-पत्नी मिश्रा जी की किसी बात पर ठहाके लगा रहे थे।

एम॰आई॰जी-292 **कैलाशविहार, आवास विकास योजना संख्या एक, कल्याणपुर, कानपुर** 208017

बलराम अग्रवाल

कुंडली

बिटिया का बायो-डाटा और फ़ोटो उसके पिता ने लड़के की माँ के हाथ में थमा दिया। फ़ोटो को अपने पास रोककर बायो-डाटा उसने पति की ओर बढ़ा दिया। पति ने सरसरी तौर पर उसको पढ़ा और कन्या के पिता से पूछा–

'कुंडली लाए हैं?'

'हाँ जी, वह तो मैं हर समय ही अपने साथ लिये घूमता हूँ।' वह बोला।

'वह भी दे जाइए।' उसने कहा।

'सॉरी भाईसाहब!' वह बोला, 'उसे मैं देकर नहीं जा सकता। जिन पंडिज्जी से उसका मिलान कराना हो, या तो उन्हें यहाँ बुला लीजिए या मुझे उनके पास ले चलिए।'

लड़के के पिता और माता दोनों को उसकी यह बात एकदम अटपटी लगी। वे आश्चर्य से उसका मुँह देखने लगे।

'वैसे, जबसे बेटी के लिए वर की तलाश में निकलना शुरू किया है, मैं अपनी भी कुंडली साथ में रख लेता हूँ।'

उनकी मुख-मुद्रा को भाँपकर लड़की का पिता बोला, 'आप लोग अपनी कुंडली इस मेज़ पर फैला लीजिए, मैं भी अपनी को आपके सामने रख देता हूँ। अगर हम लोगों की कुंडलियाँ आपस में मेल खा गईं तो मुझे विश्वास है कि बच्चों की कुंडलियाँ भी मेल खा ही जाएँगी।'

इतना कहकर उसने अपनी जेब में हाथ डाला और बिटिया के विवाह पर ख़र्च की जाने वाली रकम लिखा कागज का एक पुर्जा, सोफ़े पर कुंडली मारे बैठे उस दंपती की ओर बढ़ा दिया।

पानीपत की तीसरी लड़ाई

मास्टरजी ने कक्षा की देहरी पर कदम रखा।

सारे बच्चे चाबी लगे खिलौनों की तरह अपनी जगह पर खड़े हो गए।

'बैठ जाइए।' मास्टरजी ने कहा।

सबके सब जहाँ के तहाँ बैठ गए।

'कल वाला पाठ याद करके लाए?' अपनी कुर्सी पर बैठते हुए मास्टरजी ने सवाल किया।

'जी, मास्टरजी।' बच्चों ने आधे-अधूरे उत्साह से जवाब दिया।

'ठीक है' पढ़ाई का अपना पीरियड प्रारंभ करते हुए मास्टरजी कक्षा में सबसे आगे की पंक्ति के दाएँ किनारे पर बैठे पहले बच्चे पर दहाड़े–'खड़ा होजा।'

बच्चा अचानक यह आदेश सुनकर भौंचक रह गया था। वह तुरंत अपने स्थान पर खड़ा हो गया। काँपती-सी देह से वह मास्टरजी की अगली दहाड़ का इंतजार करने लगा। उसका गला सूखने-सा लगा।

'पानीपत की तीसरी लड़ाई किस तारीख को हुई थी, बता?' मास्टरजी ने उससे पूछा।

उसने हालाँकि पिछली रात ही काफी तेज बोल-बोलकर इस पूरे पाठ को घर पर दोहराया था, लेकिन इस समय एक भी शब्द उसे याद नहीं आ रहा था। हाथ में थाम रखी मोमबत्ती को जलाने के लिए कोई जैसे अँधेरे कमरे में माचिस की डिब्बी को टटोलता है, वैसे ही गत रात पढ़े गए शब्दों को वह अपने जेहन में टटोलने लगा।

'हाँ भई, तू बता।' उसे चुप देखकर उसके निकट बैठे दूसरे छात्र को खड़ा हो जाने का इशारा करते हुए मास्टरजी उस पर गुर्राए। खड़ा तो वह भी हो गया लेकिन उत्तर नहीं दे पाया। मास्टरजी ने तीसरे को, चौथे को, पाँचवें को खड़ा किया, लेकिन बेकार। कक्षा के सारे छात्र जब गूँगी फौज की तरह खड़े हो गए, तब बायें कोने में सिमटे-से बैठे अंतिम छात्र से मास्टरजी व्यंग्यपूर्वक बोले, 'आप भी शामिल हो जाइए बारात में'

उनकी बात सुनकर वह खड़ा हो गया और तुरंत बोला, 'जी, चौदह जनवरी सन् सतरह सौ चौंसठ को।'

'क्या!' इस अप्रत्याशित आवाज को सुनकर मास्टरजी कुर्सी पर से उछल-से पड़े।

'आगे आजा।' उन्होंने उसे आदेश दिया।

वह बेचारा काँप गया। हालाँकि मिट्टी के तेल की डिबिया के उजाले में उसने गत रात ही यह तारीख किताब बंद करके याद की थी, लेकिन मास्टरजी की

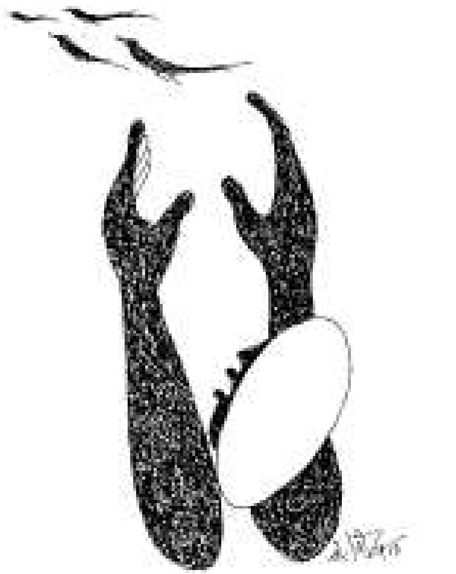

कर्कशता ने जवाब की सटीकता के प्रति उसके मन में संदेह उत्पन्न कर दिया। लटका-लटका-सा वह आगे आकर खड़ा हो गया।

'हर एक के गाल पर एक-एक थप्पड़ लगा। चल।' उन्होंने उसे आदेश दिया।

अपने साथियों को अपने ही हाथों से दंड! बैक-बेंचर बेचारा संकोच में दब गया। उसे निश्चल खड़ा देख मास्टरजी ने जब दोबारा घुड़का तो उसे आगे बढ़ना पड़ा। बड़ी मासूमियत के साथ उसने पहले साथी के गाल पर हल्की-सी चपत लगाई।

'आवाज नहीं आई, जोर से मार।' मास्टरजी चिल्लाए। उनकी चिल्लाहट को अनसुना करते हुए उसने दूसरे साथी को भी हल्की-सी चपत लगाई और आगे बढ़ गया। तीसरे तक पहुँचा ही था कि कुर्सी पर बैठे उस अहमद शाह अब्दाली ने उसे पुकारा, 'इधर आ।'

वह चुपचाप उसके समीप जा पहुँचा।

सड़ाऽऽक्।-अब्दाली का भारी-भरकम हाथ कब हवा में लहराया और कब उसके कोमल गाल पर आ पड़ा, उसे पता ही न चल पाया। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। वह खड़ा न रह सका, जमीन पर गिर गया।

'दोस्ती निभा रहा है मादर...' मास्टरजी अब्दाली-अंदाज़ में ही उस पर चिल्लाए। फिर, याद करके आने वाले उस अकेले की ओर इशारा करके बाकी कक्षा से बोले, 'बैठ जाओ रे सबके सब! कल याद करके नहीं आए तो यही हाल करूँगा एक-एक का, समझे!'

एम 70, **नवीन शाहदरा, दिल्ली** 110032

संतोष सुपेकर

आर्द्रता

बहुत समय से लगातार तेज़ गति से चल रही ट्रेन शाम चार-पाँच बजे के आसपास एक छोटे से स्टेशन पर देर तक रुक गई तो यात्रियों ने राहत-सी महसूस की। हमारे कोच के कुछ यात्री तो खिड़की-दरवाज़ों से बाहर झाँकने लगे तो कुछ बाहर खड़े होकर धूम्रपान, तंबाकू, मोबाइल फ़ोन, पानी भरने आदि में व्यस्त हो गए। बाहर घने बादल छाए हुए थे और आसपास ढेर सारे हरे-भरे पेड़ होने के कारण मौसम बड़ा सुहावना प्रतीत हो रहा था। 'तू समझती क्या है अपने आपको?' अचानक हमारी तरफ आती ज़ोरदार-गरजदार आवाज़ सुनाई दी तो सब चौंककर उस दिशा में देखने लगे। एक छोटी-सी बंद छतरी हाथ में लिए एक आदमी साथ चल रही एक औरत (जो कि उसकी पत्नी थी) को बुरी तरह डाँटता-फटकारता ट्रेन की दिशा में चला आ रहा था, 'पहले तेरे भाई ने मेरा मज़ाक उड़ाया तब तूने उसका साथ दिया। अभी परसों तेरी भाभी ने मेरी इंसल्ट की, तब भी तू चुप रही। ध्यान रखना, मैं उनकी भी अक्ल ठिकाने लगा दूँगा और तेरी भी।' उसका गुस्सा इतना बढ़ता जा रहा था, लगा जैसे कुछ देर में औरत को पीटने लगेगा। औरत जार-जार रोती हुई तेज़ क़दमों से पति के साथ-साथ चलती जा रही थी।

जैसे स्वादिष्ट पकवान खाते हुए मुँह में कोई कंकड़ आ गया हो, गरजती-बरसती वह आवाज़ सुनकर और ऐसा माहौल देखकर इतने ख़ूबसूरत मौसम में भी हम देखने वालों के मुँह कड़वे हो आए।

तभी ज़ोरदार बारिश चालू हो गई। बाहर खड़े यात्री अचकचाकर कोच के अंदर आने लगे। कोच के खिड़की-दरवाज़ों के काँच गिराए जाने लगे। उसी समय बाहर का दृश्य देखकर हमारे हालिया तल्खी से भरे चेहरे सामान्य हो गए, होंठों पर मुस्कान आ गई। सब उँगली उठाकर एक-दूजे को बाहर का दृश्य दिखाने लगे।

हमने देखा कि बारिश चालू होते ही लड़ते-झगड़ते, औरत को मारने पर उतारू, उस आदमी ने छतरी खोलकर औरत के सिर पर तान दी थी और खुद पूरी तरह भीगता हुआ उसके साथ-साथ चल रहा था। हालाँकि उसका डाँटना-फटकारना एवं औरत का रोना-धोना अब भी जारी था, लगातार...।

31, **सुदामानगर, उज्जैन (म०प्र०)** 456001

सूर्यकांत नागर

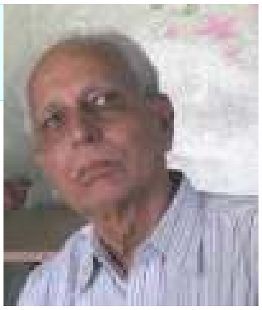

धर्म-कर्म

वे क़स्बे की माध्यमिक शाला में मामूली हैसियत वाले हिंदी-संस्कृत के गुरुजी हैं। सेवानिवृत्ति की राह पर तेज़ी से बढ़ रहे हैं। आज उनकी पत्नी ने जो कुछ कहा, सुनकर स्तब्ध हैं। चकित भी। उन्हें अपने सीमित गुरु-ज्ञान पर शर्म भी महसूस हुई।

हुआ यूँ कि जिस चाल में वे रहते हैं, उसी में नीची जाति का मदन पत्नी के साथ रहता है। अनपढ़, शराबी-कबाबी मदन बीवी को अक्सर पीटता रहता है। गुरुजी की पत्नी इन लोगों से किसी प्रकार का संपर्क रखना तो अलग, उनसे बात करना भी पसंद नहीं करती थी। पूजा-पाठी होने से छूत-छात का भी ख़ूब ध्यान रखती थी।

गत रात मदन की बीवी प्रसव-पीड़ा से छटपटा रही थी। पता नहीं, मदन पी-पाकर कहाँ औंधा सोया पड़ा था और पत्नी अकेली बुरी तरह कराह रही थी। गुरु-पत्नी कुछ देर तक सुनती रही। फिर पलटकर मदन के घर में पहुँच गई। देर रात तक मदन की बीवी की देखभाल, सेवा-सुश्रूषा करती रही। उसके पैर सहलाती, माथे का पसीना पोंछती रही और ढाँढस बँधाती रही। अपने घर से चाय और गर्म पानी लेकर आई। कोई सुबह चार बजे मदन की पत्नी ने एक प्यारे-से बच्चे को जन्म दिया। उसकी रोने की आवाज़ के साथ ही मदन-पत्नी की पीड़ा समाप्त हुई और उसने संतोष की साँस ली। गुरु-पत्नी ने हाथ जोड़कर आकाश की ओर देखा। दो-तीन घंटे ठहरकर वह लौट आई।

रातभर से बेचैन गुरुजी ने आश्चर्य व्यक्त किया और पूछा, 'अरे! यह सब...! तुम तो उस शराबी-कबाबी से कितनी घृणा करती थीं।'

'मैं शराबी-कबाबी और उसकी जात-पात को देखती कि उस औरत को, जो पहली बार माँ बनने जा रही थी, न जाती तो मर जाती बेचारी! गुरुजी, क्या आपको भी बताना पड़ेगा कि हर धर्म में माँ एक-सी होती है और हर माँ का बस एक ही धर्म होता है।'

चोर

स्टेशन के पास खड़े ठेले से दस वर्षीय वह लड़का मुट्ठीभर सिका चना उठाकर भाग खड़ा हुआ। चने वाला चिल्लाया, 'पकड़ो, पकड़ो, चोर!' लड़का पूरी ताकत से दौड़ा, मगर लोगों ने उसे धर-दबोचा। दो-चार झापड़ रसीद कर दिए। उस समय भी कुछ चने उसके मुँह में और कुछ कसी मुट्ठी में थे। उसे पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया। पुलिस द्वारा सुताई करने पर उसने बताया कि वह परसों ही गाँव से आया है। उसके माँ-बाप सामूहिक हत्याकांड में मारे गए हैं। दो दिन से भूखा था, इसीलिए ठेले से चने उठा लिए थे, पर पुलिस वालों ने एक न सुनी। सींखचों में बंद कर दिया। देर तक वह सिसकता रहा। भूख और पीड़ा के कारण देर तक नींद नहीं आई। सोने से पहले, आदत के अनुसार, उसने गले में पड़ी सोने का पानी चढ़ी चैन से लटक रही साईं बाबा की छोटी-सी तस्वीर को हाथ से छूकर नमन किया।

सुबह नींबू टिकाने जैसी मूँछों वाले कांस्टेबल ने डंडा बजाते हुए जगाया तो आदत के अनुसार साईं बाबा को स्मरण करने के लिए उसने चैन टटोली। वह वहाँ नहीं थी।

81 **बैराठी कॉलोनी नं॰** 2, **इंदौर** 452014

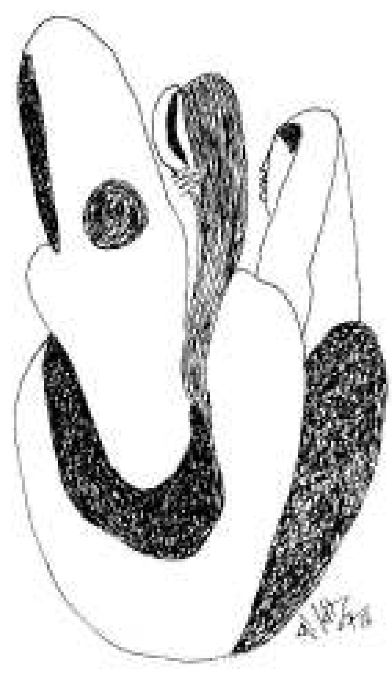

माधव नागदा

मेरी बारी

जब आमंत्रित वक्ता वैश्वीकरण तथा खुली अर्थव्यवस्था के फ़ायदे गिना चुके और छात्रगण इस बात पर पुलकित होते हुए कक्षाओं में रवाना हो गए कि हमारे पास एक अरब डालर का विदेशीमुद्रा भंडार है, तभी एक लड़का सहमता-सकुचाता विस्मयबोधक चिह्न की भाँति विद्यालय के मुख्य द्वार में प्रविष्ट हुआ। उसे इस तरह दबे पाँव विद्यार्थियों की भीड़ में शामिल होने की कोशिश करते देख कुंदनजी ने धर दबोचा।

'अच्छा, अच्छा! लेट, वो भी विदाउट यूनिफ़ॉर्म और ऊपर से चोरी-चोरी। चल इधर आ।'

दो-चार पड़नी तो थीं ही।

'ऐसा काबर-तीतरा शर्ट क्यों पहनकर आया?'

लड़का चुप। इस चुप्पी को 'तड़ाक्' की आवाज़ ने तोड़ा।

'जा वापस। स्कूल का शर्ट पहनकर आ।'

'कल पहनूँगा सर। आज नहीं पहन सकता।'

'सामने बोलता है। क्यों नहीं पहन सकता बता?' कहकर कुंदनजी ने एक बार फिर लड़के का ख़ैर-मकदम फ़रमाया।

'आज मेरा भाई पहनकर गया है। पास के मिडल स्कूल में पढ़ता है।'

'तो क्या तुम दोनों के बीच एक ही..।' कुंदनजी के गले में मानो कोई फाँस अटक गई।

'जी, सर। हम दोनों भाई बारी-बारी से मार खाते हैं। आज मेरी बारी है।' लड़के के चेहरे पर बीजगणित का कोई मुश्किल-सा सवाल चस्पा हो गया। वह नज़रें झुकाकर धरती पर पैर के अँगूठे से लकीरें माँडने लगा।

पुराना दरवाज़ा

यह दरवाज़ा कई बरसों से उनकी नज़र में था। दादाजी की हवेली से खोला गया था। नक़्क़ाशीदार चौखट, मजबूत किवाड़, किवाड़ों पर दिलकश माँडणे। देखते तो उनका हिया जुड़ा जाता। सोचते, जब भी नवनिर्माण होगा, ख़ास कमरे में यह ख़ास दरवाज़ा ज़रूर लगवाएँगे। दादाजी की धरोहर के रूप में ।

वे तो कुछ विशेष नहीं कर पाए। हाँ, बेटा कमाऊ निकला। पैसा सहेजना जानता है। अब मन माफ़िक बंगला बनवा रहा है। वे भी बहुत खुश हैं। ख़ास तौर से यह सोचकर कि अब दादाजी वाले दरवाज़े के दिन फिरने को हैं। बरसों बाद उनके मन की मुराद पूरी होने वाली है।

मकान इस स्तर तक पहुँच गया था कि चौखटें फिट की जा सकें। उन्होंने एक कमरे में वह बहुप्रतीक्षित दरवाज़ा लगवा ही दिया।

उस दिन बेटा कहीं बाहर था। आकर देखा तो माथा भन्ना गया। उसने कारीगर की तरफ़ रोषपूर्ण दृष्टि फेंकी और ज़रा तेज़ स्वर में पूछा कि यह बाबा आदम के ज़माने का दरवाज़ा यहाँ क्यों लगाया है?

'बाबूजी ने कहा था।'

बेटे ने किया 'हुँह' और कारीगर को डपटा, 'हटाओ इस भंगार को अभी का अभी। मैंने नए फ़ैशन के दरवाज़े बनवा लिए हैं, समझे।'

कारीगर ने अपने 'सेठजी' की आज्ञा का पालन करते हुए दरवाज़ा खोलकर दूर एकांत कोने में ले जाकर खड़ा कर दिया।

बाबूजी देखते रह गए। उन्हें लगा कि वहाँ पुराना दरवाज़ा नहीं बल्कि वे स्वयं खड़े हैं। अडोल।

लालमादड़ी, नाथद्वारा 313301(राज०)

सतीश राठी

संवाद

छोटी-सी बात का बतगंड़ बन गया था। पूरे चार दिनों से दोनों के मध्य संवाद स्थगित था।

पत्नी का यह तल्ख़ ताना उसके मन के बाने को चीर-चीर कर गया था 'विवाह को वर्षभर हो गया, एक साड़ी भी लाकर दी तुमने?'

शब्दों की आँच में सारा ख़ून छीज गया था। अपमान का पारा सिर चढ़कर तप्त तवे-सा हो उठा था और वह कड़वे नीम से कटु शब्द बोल गया था कि, 'नई साड़ियाँ पहनने का इतना ही शौक था तो अपने पिता से कह दिया होता, किसी साड़ियों की दुकान वाले से ही विवाह कर देते।'

तबसे दोनों के बीच स्थापित अबोला आज तक जारी था। यों रोज़ उसके सारे कार्य समय पर पूर्ण हो जाते थे, शेव की कटोरी से लेकर भोजन की थाली तक। बस, सिर्फ़ प्रेम और मनुहार की वे समस्त बातें अनुपस्थित थीं, जिनके बिना वे दोनों एक पल भी नहीं रह पाते थे।

लेकिन आज, आज जब ऑफ़िस में उसे आदेश मिला कि पंद्रह दिनों के लिए डेप्यूटेशन पर भोपाल ऑफ़िस जाना है तो घर जाकर वह स्वयं को नहीं रोक पाया। रुँधे गले से भीगे शब्द निकल पड़े, 'सुनो सुमि, मेरा सूटकेस सहेज देना। पंद्रह दिनों के लिए भोपाल जाना है।'

'क्या! भोपाल!! पंद्रह दिनों के लिए!!!' और इतना बोलकर सुमि के शेष शब्द आँसुओं में बह निकले।

दोनों के मध्य स्थापित अबोला टूट गया। एक-दूसरे को उन्होंने बाँहों में जकड़ लिया। उनकी आँखों से बहते गर्म अश्रु आपस में ढेर सारी बातें करने लगे।

साईकिल

'सर! मेरा सायकल का लोन आज स्वीकृत हो जाता तो मेहरबानी हो जाती।' कमर से पूरा झुककर और बाणी मैं सारी विनम्रता समेटकर रघु चपरासी ने सक्सेना साहब से कहा।

'अरे तेरी सायकल से पहले तो मेरी सायकल का ऋण स्वीकृत करवाना है।' मसखरी के स्वर में सक्सेना ने कहा।

'साब। आप तो कार में आते-जाते हैं। आपको सायकल की क्या ज़रूरत। सायकल तो हम जैसे ग़रीबों के लिए है।' रोज़ पाँच किलोमीटर पैदल चलकर आने का दर्द रघु के बोलने के पीछे दबा हुआ था।

'अरे। तेरी सायकल नहीं पागल। मुझे तो व्यायाम वाली सायकल खरीदनी है। देखता नहीं यह' अपनी मोटी तोंद की ओर उन्होंने इशारा किया।

'हमारा पेट तो परिवार का पेट पालने की चिंता में ही अंदर हो जाता है साब।' मुँह लगे रघु का चिंताभरा स्वर सुन सक्सेनाजी खिसियाहट से भर गए।

212, **उषानगर, मुख्य इंदौर** 452009

ऋता शेखर 'मधु'

युग परिवर्तन

'माँ, आप क्या लिख रही हैं।'

'बेटे, मेरे मन में कुछ विचार हैं, जिन्हें मैं कलमबद्ध करना चाहती हूँ।'

'तो कागज पर क्यों लिख रही हो।'

'फिर कहाँ लिखूँ।'

'लैपटाप पर लिखो।'

'मुझे तो नहीं आता। हमारे जमाने में कंप्यूटर नहीं था न, हमने तो कागज पर लिखकर ही पढ़ाई की है।'

'अब सीख लो।'

'मुझसे नहीं हो पाएगा।'

'ऐसा नहीं है। मैं आपको सिखाऊँगा।'–बेटे ने माँ की उँगली पकड़कर बोर्ड पर दौड़ानी शुरू की। स्क्रीन पर अक्षर के मोती उभरने लगे। माँ की आँखें बरबस गीली हो गईं।

उसे बसंत पंचमी का वह दिन याद आ गया जब उसने बेटे के हाथों में स्लेट पकड़ाई थी और उसकी उँगली पकड़कर प्रथम अक्षर लिखवाया था।

206, Skylark Topaz, 5th Main, Jagdish Nagar, Near BEML Hospital, New Thippasandra Post, Bangaluru 560075

श्याम सखा श्याम

अनोखा बँटवारा

वधवा साहिब, बेचारे सेवानिवृत्त होने से मात्र दो महीने पहले स्वर्गवासी हो गए और शायद उनका सपना भी, बिल्कुल मेरे जैसा सपना कि सेवानिवृत्त होकर, बिना काम किए सरकारी पेंशन लेकर घर वालों की छाती पर मूँग दलूँगा, साकार नहीं हो सका।

सरकारी नौकर एक इसी आस में तो इतने लंबे, साठ साल जी लेता है, जनाब। खैर! मैं कह रहा था कि वधवा साहिब सेवानिवृत्ति से दो महीने पहले ही चल बसे थे। क्रिया का कार्यक्रम चल रहा था, भजन वगैरा के बाद उनके बड़े लड़के को पगड़ी बाँधी जा रही थी। ऐसे वक्त तक लोग गरुड़ पाठ, श्रद्धांजलियाँ आदि सुनते-सुनते ऊब चुके थे, वे इसलिए भी ऊब चुके थे कि बोलना, लगभग हर वक्त बिना रुके बिना सोचे-समझे, बिना आगा-पीछा देखे बोलना, सभी हिंदुस्तानियों का कम-से-कम हम पंजाबियों का तो जन्मसिद्ध अधिकार है ही।

उधर वधवा साहिब के बड़े बेटे को पगड़ी बाँधी जा रही थी, इधर इस कहानी ने मुझे टहोका। यह कहानी एक बुजुर्ग के वेश में थी, जो वधवा साहिब के हमउम्र रहे होंगे। वे मेरी ओर मुखातिब होकर बोले, 'चलो टंटा मिट्टा।' मैं चूँकि उनको जानता नहीं था, इसलिए चुप रहने में ही गनीमत समझी, पर जनाब! उनकी जीभ पर मंथरा सरीखी यह कहानी कब मुझे छोड़ने वाली थी? वे कहने लगे, 'वधवा बेचारा! बड़ा परेशान-सी इस बडे मुंडे तों (वधवा इस बड़े लड़के से बड़ा परेशान रहता था)। असल में साहब जी, वधवा जी दे दोनों मुंडे नौकरी नहीं लगे थे, इसलिए उन्होंने फंड से उधार लेकर किरयाने की दुकान खुलवा दी थी! हुण छोटा मुंडा तां फिर भी वधवा की तरह मेहनती है, ईमानदार है, उसकी मेहनत से ही दुकान चल पड़ी थी। अब यह निखट्टू दसवीं फेल, उन्होंने पगड़ी बँधवाते बड़े लड़के की तरफ इशारे करते हुए कहा, 'रोज़ लड़ता था कि यह दुकान मेरी है, आप छोटे की और दुकान करवा दो, पर बेचारे वधवा जी कहाँ से इतना पैसा लाते? फंड पहले ही ले चुके थे।'

कल रात ही, सारा झगड़ा निबटा है, जो काम वधवाजी जीते-जी नहीं कर सके, वो उन्होंने मरकर कर दिखाया और वह चुप हो गए। अब तक मेरी दिलचस्पी भी कुछ-कुछ सिर उठाने लगी थी। मरता क्या न करता? पूछ बैठा–जनाब कल रात किस तरह झगड़ा निबटा?

'ओ हो, जनाब बँटवारा हो गया ना।' वह फिर चुप हो गए। मुझे फिर पूछना पड़ा, 'बँटवारे में क्या हुआ?' जी होणा की सी (जी, होना क्या था) बड़े दसवीं फेल मुंडे दे हथ, दुकान लगी ते बी॰ए॰ पास छोटे मुंडे नू वधवाजी दी नौकरी मिल जाएगी। इह फैसला किता है पंचों ने, बिरादरी ने (बड़े दसवीं फेल लड़के के हाथ दुकान आ गई है बँटवारे में तथा छोटे बेटे को वधवा साहिब की जगह नौकरी मिल जाए यह फैसला किया है पंचों ने)। मैं भौंचक्क रह गया था, इन अनोखे बँटवारे पर।

703 **जी॰एच॰एस॰**88, **पल्लवी, सैक्टर** 20
पंचकूला (हरियाणा) 134113

रामकुमार आत्रेय

भाग्य

बूढ़ा आदमी जब भी बाहर निकलता, अपने भाग्य को कोसता हुआ निकलता। दुर्भाग्यवश कुछ दिन पहले आपरेशन के दौरान उसकी आँखों की रोशनी जाती रही थी। सिर्फ़ एक आँख से वह धूप-छाँव ही देख रहा था। अक्सर ठोकर खाकर गिर जाता। आज भी वह इसी तरह अपने भाग्य को गालियाँ देते हुए आगे बढ़ रहा था कि अचानक कोई आदमी उससे आ टकराया। वह गिरते-गिरते बचा। उसका बदन ग़ुस्से से तिलमिला उठा। वह चिल्लाया, 'देखकर नहीं चलते, भगवान ने मुझे तो अंधा कर दिया। तू भी अंधा है क्या, बेशर्म!'

उसके मन में आया कि स्वयं से टकराने वाले व्यक्ति की गर्दन दबा दे। ऐसा करने के लिए उसके हाथ एक बार ऊपर को उठे, पर तभी सामने वाले व्यक्ति की गिड़गिड़ाती हुई आवाज़ सुनाई दी, 'माफ़ करना बाबा, मैं तो सचमुच में ही अंधा हूँ। मुझे कुछ नहीं दिखाई देता। अपना बच्चा समझकर मुझे माफ कर दो।'

बूढ़े के ऊपर को उठे हुए हाथ तत्काल नीचे चले गए। सामने वाले की ओर ध्यान से देखते हुए एकदम से पूछा–'क्या उम्र होगी तुम्हारी?'

'यही कोई बारह-तेरह वर्ष होगी, बाबा।' सामने वाले का बाल-सुलभ स्वर सुनाई पड़ा।

'कैसे और कबसे जाती रही तुम्हारी आँखों की रोशनी?'

'मैं तो जन्म से अंधा हूँ बाबा।' उसके मुँह से कँपकँपाता हुआ स्वर निकला। मानो वह मन-ही-मन रो रहा था। इस घटना के पश्चात् बूढ़े ने अपने भाग्य को कोसना बंद कर दिया।

ए 844-ए/12 **आजाद नगर**
कुरुक्षेत्र 136119 **(हरियाणा)**

मंजु मिश्रा

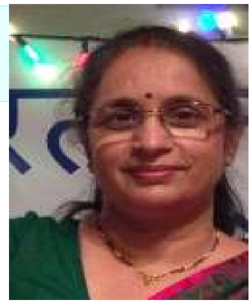

वापसी

रश्मि ख़ामोश बैठी सोच रही थी कि ज़िंदगी के 18 साल तक वो जिसे सच मानकर अपने पापा से नफ़रत करती रही, वो तो सच था ही नहीं, वो पहली नज़र में सच दिखते हुए भी कितना बड़ा झूठ था।

बैठे-बैठे पिछली सारी बातें जैसे किसी फिल्म की तरह रिवाइंड होकर उसके आँखों के सामने घूमने लगीं। उसकी नफ़रत के बावजूद पापा के वो बार-बार आने वाले फ़ोनकॉल्स, जिन्हें कभी उनसे सुना नहीं और सुना भी तो हर संभव कोशिश की कि उसकी हर बात एक घाव का काम कर सके पापा के दिल पर, वे चिट्ठियाँ, जिन्हें वे बिना पढ़े ही फेंक दिया करती थीं, काश! समय के पाँव पीछे लौट सकते!!

यूँ उसकी माँ ने उसे भरपूर प्यार दिया था, किसी भी चीज़ की कमी नहीं होने दी। कभी वो सचमुच बहुत अच्छी माँ थी, लेकिन इससे उनकी यह ग़लती माफ़ी के लायक नहीं हो जाती कि उन्होंने पापा के बारे में झूठ बोला, हमेशा उनके बारे में उसके मन में ज़हर बोया।

आज उसे पता चला था कि पापा ने हमें नहीं छोड़ा था; बल्कि मम्मी ही पापा से झगड़कर आ गई थीं और फिर मम्मी के घरवालों ने बात को सँभालने के बजाय उनके अहम् की चिंगारी को हवा देकर शोलों-सा भड़का दिया और इस सबमें उनकी डिग्री और उनका स्टेटस भी मानो आग में घी का काम कर गया। आरोप-प्रत्यारोप, कोर्ट कचहरी एक दस्तख़त और सब-कुछ ख़त्म।

पापा का दोष अगर था तो सिर्फ़ इतना कि वे सच बोलते थे, इंसान थे और इंसान की तरह हँसते, गाते, रोते और ग़ुस्सा भी करते थे। उनका वह मिडिल क्लास स्वभाव मम्मी को बड़ा डाउन मार्किट लगता था। यही फर्क खाई बन गया उन दोनों के बीच। वह सोच रही थी कि अनजाने में ही सही पर अपनी माँ के साथ-साथ उसने भी अपने पापा के साथ बहुत कटुतापूर्ण व्यवहार किया था, बहुत अन्याय किया था। लेकिन अब, वे उन 18 सालों की भरपाई करना चाहती थी, पापा को इतना खुश करना चाहती थी कि बीते समय की चुभन धूमिल पड़ जाए। उसने अपना बैग पैक किया, माँ के लिए एक नोट छोड़ा। 'माँ, मैं अपने घर वापस जा रही हूँ।' और आँखों में आँसू लिए घर से निकल गई।

3966 CHURCHILL ,DR,PLEASANTON California
94588 ,USA

राधेश्याम भारतीय

बड़ा हूँ ना

पति पत्नी किसी पर्यटक स्थल की सैर को रवाना हुए थे। अभी उन्हें घर से निकले दो घंटे ही हुए होंगे कि बड़े भाई ने फ़ोन कर हाल-चाल पूछा। साथ में यह भी कहा कि फ़ोन करते रहना।

'ठीक है भाई।' इतना कह छोटे ने फ़ोन काट दिया।

सफ़र में वह पत्नी से बातें करने में इतना मशगूल हुआ कि फ़ोन करना ही भूल गया।

बड़े भाई का ही फ़ोन आया। 'कहाँ तक पहुँच गए, कोई परेशानी तो नहीं? अपना ख़्याल रखना।'

'ठीक है भाई, हम अपना ख़्याल रखेंगे।' छोटे ने जवाब दिया।

उसके फ़ोन बंद करते ही उसकी पत्नी ने कहा, 'भाई साहब तो आपको बच्चा समझते हैं...बार-बार नसीहत देते हैं...सफ़र का सारा मज़ा किरकिरा कर दिया। लाओ, मुझे फ़ोन दो। मैं स्विच ऑफ़ करती हूँ।' और उसने वैसा ही किया।

घर पर बड़ा भाई बार-बार फ़ोन मिला रहा था, पर फ़ोन न मिल पाने के कारण बेचैन हुए जा रहा था। उसकी बेचैनी देख पत्नी ने कहा, 'क्यों पागल हुए जा रहे हो? चिंता छोड़ो और आराम से सो जाओ।'

'कैसे सो जाऊँ। पता नहीं, वे किस परिस्थिति में होंगे! फ़ोन मिल ही नहीं रहा।' भाई ने बार-बार फ़ोन मिलाते हुए कहा।

'....सो जाओ ना, और भी हैं, इस घर में।' पत्नी ने खीझ भरे शब्दों में कहा।

'मैं बड़ा हूँ ना,' बड़े भाई ने एक ठंडी आह भरते हुए कहा।

नसीब विहार कालोनी, घरौंडा
करनाल (हरियाणा) 132114
मो॰ 09315382236
rbhartiya74@gmail.com

कमल कपूर

बूढ़े पाखी

देवीलाल पार्क के लंबे चौड़े 'वाकिंग ट्रैक' के सात चक्कर लगाकर थककर बेला बेंच पर बैठी ही थी कि उसकी नज़रों को बाँध लिया सामने से चली आ रही एक वृद्ध जोड़ी ने। 'ट्रैक सूट' पहने वृद्ध सज्जन एक हाथ में छड़ी थामे थे और दूसरे में अपनी सुदर्शना वृद्धा पत्नी का हाथ, जिनके गोरे माथे पर सूरज-सी बिंदिया दमक रही थी और सफ़ेद बालों के बीच माँग में सिंदूरी रेखा खिंची हुई थी। वे आहिस्ता-आहिस्ता क़दम रखकर चलते हुए आकर बेला की बगल वाली बेंच पर बैठ गए। पति ने जेब से रूमाल निकालकर पत्नी के माथे का पसीना पोंछा और पानी की छोटी सी बोतल का ढक्कन खोलकर उनके हाथ में थमा दी। फिर वे 'आस्था चैनल' पर देखे किसी आध्यात्मिक प्रसंग पर चर्चा करने लगे कि अचानक वृद्ध सज्जन खाँसने लगे। पत्नी ने झट पर्स से निकालकर कोई गोली, शायद विक्स की, उन्हें थमाई और उठकर उनकी पीठ सहलाने लगी और मिठास से फटकारने लगी, 'मना किया था न कि चाट-गोलगप्पे ना खाओ, पर आप हैं कि...'उनकी खाँसी थम गई और वह मुस्कुराए, 'तुम्हारी कसम अब नहीं खाएँगे।'

बेला की आँखें भर आईं। वह समझ गई कि ये वो बूढ़े पाखी हैं, जिनके चुरुगन पंखों में प्राण पड़ते ही इन्हें इनके हाल पर छोड़कर दूर कहीं उड़ गए और ये सौम्य-सरल पति-पत्नी एक-दूजे के दिल में जीने का उत्साह और उमंग जगाते हुए बड़े प्रेम से जी रहे हैं एक-दूसरे का सहारा बनकर, एक-दूजे के लिए।

2144, **सेक्टर** 9,
फरीदाबाद
(हरियाणा)
121006

डॉ॰ उमेश महादोषी

रूपांतरण

दोपहर से ही उन दोनों का मूड ख़राब था। एक- दूसरे के व्यवहार को ग़लत मानते हुए, बिना करवट बदले एक-दूसरे की ओर पीठ किए लेटे थे। सोचते-सोचते समय के एक क्षण पर आकर निशा के अहं के क़दम ठहर से गए। अंतर्मन में चल रही पिक्चर को उसने बार- बार आगे-पीछे मूव करके देखा।

क्या विधु सचमुच ग़लत था और वह सही? उत्तर में सकारात्मक ध्वनि नहीं निकल पा रही थी। बात छोटी-सी ही सही, पर विधु की बात में ग़लत क्या था। उसने आख़िर इतना ही तो कहा था—परफारमेंस, परफारमेंस होती है। वह टी॰वी॰ कार्यक्रम में नियोजित आर्टिस्टों द्वारा दी गई हो या गली-मोहल्ले की सड़कों पर घुमक्कड़ों के द्वारा बल्कि घुमक्कड़ों द्वारा दी गई परफारमेंस कहीं अधिक स्वाभाविक होती है। इसलिए इन घुमक्कड़ों को भी जनता से उतना ही प्रोत्साहन पाने का हक़ है, जितना नियोजित टी॰वी॰ आर्टिस्टों को। उसके द्वारा घुमक्कड़ों की तुलना भिखारियों से करने का विधु ने विरोध किया था।

'तुम इन घुमक्कड़ बच्चों के गाने की परफारमेंस पर इनका उत्साहवर्द्धन नहीं करना चाहती हो तो मत करो, पर इन्हें भिखारी मत कहो। मैंने इन्हें पाँच रुपये देकर न तो घर लुटा दिया है और न इनको महिमामंडित कर दिया है। मुझे उनका गाना अच्छा लगा सो प्रोत्साहन के तौर पर कुछ दे दिया। कभी सोचकर देखो, कितना प्यारा गाते हैं दोनों! घंटे-दो घंटे अपनी कला का प्रदर्शन करके ये कुछ कमा लेते हैं तो क्या ग़लत करते हैं? इनका बाप नहीं है, माँ घरों में चौका-बर्तन करती है। इतना नहीं कमा पाती कि दो वक़्त की दाल-रोटी के बाद इन्हें पढ़ा-लिखा सके। अपनी पढ़ाई का ख़र्चा ये अपनी कला की परफारमेंस देकर निकालते हैं।

हो सकता है वे टी॰वी॰ आर्टिस्ट कला को समृद्ध कर रहे हों, पर इन्हें कुछ देना भीख है तो उनकी परफारमेंसेज को एप्रीशिएट करने के लिए तुम रोज़ मेसेजों पर बीस-तीस रुपये ख़र्च देती हो, वह क्या? उनको वोट/ सपोर्ट करना कोई निःशुल्क तो नहीं है। मैंने तो तुम्हें कभी नहीं टोका। परफारमेंस के बाद ये कुछ माँगते हैं तो वे भी कुछ माँगते हैं।

विधु के द्वारा मेसेजों पर बीस-तीस रुपये ख़र्च कर देने की बात उसे चुभ गई थी। उसे लगा था जैसे विधु ने उसके एंज्वायमेंट पर फ़िज़ूलख़र्ची का कमेंट कर दिया हो, पर शायद उसकी बात समझने का मेरा एंगिल ग़लत था। उसने तो अपनी बात समझाने के लिए दोनों स्थितियों में तुलना-भर की थी, पर उसके कहने के ढंग में तीखापन भी तो बहुत था। वह प्यार से भी अपनी बात कह सकता था, पर तीखापन तो मेरी बात में भी कम नहीं था। फिर मैं इस बात पर उससे कई बार पहले भी उलझ चुकी हूँ। शायद उसका तीखापन इसीकी प्रतिक्रिया रहा हो। जो भी हो, मुझे विधु को सॉरी।

और निशा ने करवट बदली। अपना एक हाथ विधु के शरीर पर रखा और धीरे से बोली, 'सॉरी यार! अब माफ़ भी कर दो, ग़लती हो गई।'

पूतना बोध

'हमारा प्यारा बाबा अब दूधू पियेगा।' कहती हुई बच्चे के ऊपर झुकी आया का काम करने वाली लड़की दूध की बोतल पलंग पर लेटे बच्चे के मुँह तक ले गई। बच्चे के मुँह में निप्पल लगाने से पहले अचानक रुकी। उसने बोतल में भरे दूध पर एक ललचाई नज़र डाली। कुछ देर ठहरी, इधर-उधर देखा और निप्पल सहित बोतल का ढक्कन खोलकर बच्चे के मुँह में लगाया और बोतल का खुला मुँह अपने मुँह की ओर ले जाने लगी।

इस दृश्य की ओर टकटकी लगाए बच्चे के मुँह में दूध नहीं पहुँचा तो वह अचानक उद्विग्न होकर रोने लगा। उसके मुँह से निप्पल निकलकर अलग हो गई। उसने अपने हाथ-पाँव फेंकने शुरू कर दिए। इससे पहले कि आया बोतल को अपने मुँह में लगा पाती, बच्चे का फेंका हुआ एक हाथ ज़ोर से बोतल से टकराया और दूध को बिखेरती बोतल छिटककर दूर जा गिरी। ठीक इसी समय बच्चे का एक पैर आया की आँख के पास जा लगा और उस जगह को सहलाती हुई आया चीख़ पड़ी। एक साथ बच्चे के ज़ोर-ज़ोर से रोने और आया के चीख़ने की आवाज़ें सुनकर बच्चे की माँ बाथरूम से दौड़ी-दौड़ी आई, 'क्या हुआ, क्या हुआ मेरे बच्चे को?'

अंदर आते ही बदहवास-सी माँ ने बच्चे को गोद में उठाकर सीने से चिपकाया फिर कमरे के पूरे परिदृश्य

पर दृष्टि डाली। कहीं निप्पल कहीं बोतल, बिखरा हुआ दूध और दूध से भीगे आया के कपड़े, अजीब सी स्थिति को समझने में उसे कुछ क्षण लगे, कुछ-कुछ उसकी समझ में आया। अचानक उसके मुँह से निकला, 'पूतना कहीं की।'

'ऐ माई, पूतना क्यों कहती है मुझे। मेरे को दोष क्यों देती है? मेरे पै विश्वास नहीं है तो बच्चे की देखभाल की जिम्मेवारी काहे को देती है मुझे।' पकड़े गए झूठ को गटकती हुई वह लड़की बोली।

'हाँ! यही तो ग़लती हो गई मुझसे, जो तुझे अपने बच्चे की छोटी-छोटी जिम्मेवारियाँ भी...' कहते हुए बच्चे को कसकर अपनी छाती से चिपका लिया। 'तेरा भी क्या कसूर! जो जिम्मेवारी माँ होने के नाते मुझे ही निभानी चाहिए, वह भी तुझे सौंप दी तो यह तो होना ही था, और मरी तुझे दूध पीने की इच्छा थी तो मुझे तो कहती।'

बच्चा रोये जा रहा था। बच्चे को चुपाने की कोशिश कराती माँ निप्पल और बोतल को उठाने लगी। आया एक ओर सिर झुकाये खड़ी थी।

121, **इंद्रापुरम, निकट बी॰डी॰ए॰ कॉलोनी**
बदायूँ रोड, बरेली (उ॰प्र॰)

अंतर

रत्नकुमार साँभरिया

घोड़े की पीठ पर दिनभर पड़ी चाबुकें नील बनकर उभर आई थीं। उसके एक-एक रोएँ में लहू चुहचुहा रहा था। वह टीस के मारे बार-बार पैर पटकता था, गर्दन झटकता था। घोड़ा पीठ के असहनीय दर्द को आँसुओं में बहा देना चाहता था, भूखी कुलबुलाती अंतड़ियों ने उसे चारे में थूथन गड़ाने के लिए विवश कर दिया।

एकाएक घोड़े की गीली आँखें अपने मालिक की ओर घूमीं। वह घोड़े के पास ही चारपाई डाले बैठा था और चाबुक से छिली अपनी हथेली पर मेहंदी लगा रहा था। घोड़े का मन व्यथित हो गया। उसकी आँखें डबडबा आई। वह चारा छोड़कर थोड़ा आगे बढ़ा। घोड़ा चाबुक से आहत अपने मालिक की हथेली को अपनी नर्म-नर्म जीभ से सहलाने लगा था।

सी-137, **महेशनगर, जयपुर** 302015

शोध संदर्भ-6

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ॰ मीना अग्रवाल

'शोध-संदर्भ' के पूर्व में प्रकाशित पाँच खंडों का अपूर्व स्वागत हुआ। इन खंडों में हिंदी-शोध के आरंभ से लेकर सन् 2010 तक स्वीकृत शोधप्रबंधों का वर्गीकृत विवरण दिया गया है। अब **शोध-संदर्भ**-6 प्रकाशित हो गया है, जिसमें सन् 2014 के बाद स्वीकृत शोधप्रबंधों का विवरण प्रकाशित किया गया है।

ग्रंथ में विवरण निम्नलिखित क्रम में दिए गए हैं–

1. शोधकर्ता का नाम
2. जन्मतिथि
3. शोध का विषय
4. विश्वविद्यालय का नाम
5. उपाधि वर्ष
6. निदेशक का नाम व पता
7. प्रकाशन का विवरण
8. उपलब्ध पता

732 पृष्ठ के इस विशिष्ट ग्रंथ का मूल्य 1500 रुपए है, किंतु शोध-निदेशकों, हिंदी-प्राध्यापकों तथा शोध-छात्रों को यह ग्रंथ मात्र 750 रुपए में दिया जाएगा।

अपना आदेश तथा धनराशि का बैंक ड्राफ्ट यथाशीघ्र निम्न पते पर भेजिए। सी॰बी॰एस॰ शाखाओं के चैक स्वीकार्य होंगे।

हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)
01342-263232, 07838090732

डॉ॰ मीना अग्रवाल

दानदाता

कूड़ीलाल सप्ताह में दो बार इस कॉलोनी का फेरा करता था। बाकी दिन वह दूसरे मौहल्लों, कॉलोनियों में जाता होगा। बूढ़ा था और कमर कमान की तरह मुड़कर दोहरी हो गई थी। घर में अपाहिज पत्नी और अधेड़ उम्र की जन्मजात नेत्रहीन पुत्री थी। कूड़ीलाल भीख माँगकर ही सबका पेट पाल रहा था।

इस कॉलोनी के ठीक सामने, जहाँ हम लोग रहते हैं, ख़ाली पड़े मैदान में अनेक लोगों ने टाट, टीन और प्लास्टिक की झोपड़ियाँ बनाकर रहना शुरू कर दिया था। इनमें बंदर नचाने वाले मदारी, गुब्बारे आदि बेचने वाले, जूट और मूँज की रस्सियाँ बनाने वाले तथा बड़े घरों में बर्तन माँजने, सफ़ाई आदि का काम करने वाली औरतें शामिल थीं। नगरपालिका सफ़ाई अभियान चलाती तो ये यहाँ से खदेड़ दिए जाते, किंतु कुछ समय बाद फिर आ बसते।

कूड़ीलाल जब भी आता और मैं फ़ुर्सत में बैठी होती तो मैं भिक्षा में उसे कुछ-न-कुछ देकर दो-चार बातें भी उससे कर लेती थी। वह मेरे पास ही नीचे फ़र्श पर बैठ जाता और समझता कि वह भाग्यशाली है कि मैं उससे बात कर रही हूँ। एक दिन आया तो मैंने उससे पूछा–'क्यों कूड़ीलाल! इस कॉलोनी में तो तुम्हें क़रीब-क़रीब सभी लोग दान दे देते होंगे?'

मेरे इस प्रश्न पर कूड़ीलाल थोड़ा सटपटाया, कुछ देर चुप रहा, फिर बोला–'हाँ माई! बस यह आपके सामने वाले सेठ दामोदरदास जी हैं, इनसे आज तक कुछ नहीं मिला।'

'पर तुमने जाना भी नहीं छोड़ा' मैंने अगला प्रश्न किया। 'नहीं माँजी!' कूड़ीलाल बोला, 'भिखारी हैं, जाते हैं, जो दे उसका भला, जो न दे उसका भी भला।'

'अजीब बात है तुम्हें बार-बार माँगते शर्म नहीं आती। उन्हें बार-बार इनकार करते लाज नहीं आती।' मैंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

'लाज किस बात की जी?' कूड़ीलाल ने कहा और उठकर चला गया।

अगली सुबह सामने वाली झोंपड़पट्टी से रोने-चीख़ने की आवाज़ आई, तो पता चला कि कूड़ीलाल का रात में निधन हो गया। सोचा, भिखारी था, अंतिम संस्कार के लिए उसके पास क्या रहा होगा? मुझे ही यह व्यवस्था कर देनी चाहिए।

पहुँची तो देखा कि सेठ दामोदरदास मुझसे पहले वहाँ पहुँच चुके थे और कूड़ीलाल की बूढ़ी पत्नी को अंतिम संस्कार के लिए रुपये भी दे चुके थे।

कूड़ीलाल सुन सकता तो उससे कहती–'तुम्हारी जीवन-भर की शिकायत अब दूर हो गई होगी, कूड़ीलाल।'

तभी प्रेस फ़ोटोग्राफ़र ने शव के साथ दामोदरदास का भी चित्र लिया और कहानी समाप्त हो गई।

16 **साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)**
मो॰ 07838090237

फटकार

दिनेश पाठक 'शशि'

दोयम दर्जे का माल पास करने के एवज में ठेकेदार से एक बड़ी रक़म का हाथ लगने पर वह मुँह से सीटी बजाता, जेब पर हाथ फिराता, प्रसन्न मुद्रा में दफ़्तर से घर आ रहा था कि रमुआ ने दरवाज़े पर ही लपक लिया–'साहब देखो, जे ज़रा सो छोरा अबई तें कैसी चालाकी करे है।'

'क्या हुआ रमुआ?' एक कोने में तराज़ू-बाट और कुछ अख़बारों की रद्दी के पास, गंदा और फटा-सा निकर-बनियान पहने सुबक रहे और लड़के की ओर घूरते हुए उसने पूछा।

'साहब, तीन किलो के बाट तें पाँच किलो अख़बार तोलिकें बेईमानी करे है बित्ते-भर कौ छोरा।'

'कोई बात नहीं रमुआ, इसे अख़बार देकर चलता करो।' उदारता दिखाते हुए, होंठों को गोल-गोल बना, सीटी बजाता हुआ वह अंदर जाने लगा।

'का कहत हो साहब! याकू ऐसेई जाने देउगे तो बड़ौ हैके चोरी करैगो, जेब काटैगो या पढ़ि लिखि गयौ तो रिश्वतखोरी करैगो। बचपन के संस्कार ही तो ज़िंदगी भर।'

'चुप कर रमुआ, ज़्यादा उपदेश मत दे, वरना नौकरी से निकाल बाहर करूँगा।'

साहब की इस अप्रत्याशित डाँट-फटकार पर रमुआ अवाक् अपनी भूल विचारने लगा।

रेलवे क्वार्टर, बी-3/**डी॰एस॰** 98-**बी, मथुरा** 281001

सुमनकुमार घई

विवशता

पैराग्रीन बाज़ों के जोड़े ने शहर के मध्य एक ऊँची इमारत की खिड़की के बाहर कंक्रीट की शैल्फ़ को अपने अंडे देने के लिए चुना था। पता नहीं प्रकृति की गोद की चट्टान की बजाय शहर की चट्टानी इमारत उन्हें अपने बच्चे पालने के लिए क्यों अच्छी लगी थी। शहर के समाचार-पत्रों में सुर्ख़ियाँ थीं, जीववैज्ञानिकों में हलचल थी और शहर के पहले से फूले हुए मेयर और भी कुप्पा हुए जा रहे थे। उन्होंने तो कनखियों से मुस्कराते हुए वक्तव्य भी दे डाला था, 'अगर मैं जार्विस स्ट्रीट की साइकिल की लेन को ख़त्म करके कारों के लिए खोल रहा हूँ तो पर्यावरण-प्रेमी क्यों शोर मचाते हैं कि शहर में प्रदूषण बढ़ेगा? देखो, प्रकृति तो स्वयं हमारे शहर को चुन रही है।' शहर में उनके समर्थक सनसनीखेज़ समाचार-पत्र ने तो सुर्ख़ी दी थी, 'ओंटेरियो में पैराग्रीन बाज़ों की संख्या का विस्फोट, पूरे प्रांत में दस से अधिक जोड़े देखे गए।'

जीववैज्ञानिक सबसे अधिक संयत थे। वह पूरे आँकड़े जुटाना चाहते थे। उनके आदेशानुसार रात को उस इमारत की और आसपास की इमारतों की बत्तियाँ बंद की जाने लगीं ताकि बाज़ों को परेशानी न हो। लगा बाज़ों के साथ शहर भी सोने और जागने लगा है। उस खिड़की से ऊपर की मंज़िल की खिड़की में दूरबीन वाला कैमरा लगा दिया गया और एक वैज्ञानिकों की टीम उसपर तैनात हो गई; चौबीस घंटे अंडों और बाज़ों पर नज़र रखने के लिए। आँकड़े भरे जाने लगे कि कितने घंटे मादा बाज़ ने अंडे सेके और कितनी बार बाज़ ने लौटकर शिकार मादा बाज़ को परोसा।

उस दिन लोग-बाग अपने कार्यालयों से घर लौट चुके थे। तैनात वैज्ञानिक को कैमरे के लैंस के कोने में एक आकृति दिखाई दी। उत्सुकता जागी तो उसने कैमरा घुमाकर आकृति पर फोकस किया। आकृति साफ़ दिखाई देने लगी। मेट्रो ग्रोसरी स्टोर के सामने के कचरे के ढोल में से एक बेघर गर्भवती औरत सेब निकालकर पोंछ रही थी। अपने पेट में पल रहे बच्चे को परोसते हुए उसने सेब खाना शुरू किया। वैज्ञानिक झल्ला उठा-कितनी मूर्ख है! क्या नहीं जानती दूषित सेब से उसके पेट में पल रहे बच्चे को हानि पहुँच सकती है? क्यों नहीं वह ऐसी औरतों के शरणगृह में चली जाती, जहाँ इसकी देखभाल हो सकती है। फिर झल्लाते हुए उसने फिर से मादा बाज़ को देखना शुरू कर दिया। उसे पक्षियों की विवशता का अध्ययन करना था कि उन्होंने शहर की चट्टानी इमारत पर अंडे देने क्यों पसंद किए? पर गंदा सेब खाने के लिए विवश गर्भवती औरत छवि अभी उसके कैमरे के लैंस से नहीं हट पा रही थी।

Sahitya Kunj, 87, Scarboro Ave. Scarborough, Ont M1C 1M5 Canada

उमंग, उड़ान और परिंदे

राजकुमार निजात

आज उसका अठारहवाँ जन्म दिवस था। वह अपने मम्मी-पापा की इकलौती बेटी और भइया की इकलौती बहन थी। दीप उससे छोटा था और उड़ान दीप से बड़ी थी। वह तुतलाकर बड़ी मुश्किल से बोल पाती। चल भी नहीं पाती थी। उसे सहारा देकर चलाया जाता तो ज़रूर कुछ क़दम चलती।

केक के सामने वह व्हीलचेअर पर बैठी थी। उसकी क्लास के सारे बच्चे उसे शुभकामनाएँ देने के लिए बड़े उत्साह और उमंग से आए थे। उसने सालगिरह का केक काटा तो वह ख़ुशी से भावुक हो गई। फिर वह अपने सभी मित्रों के बीच व्हीलचेयर पर बैठी-बैठी तालियाँ बजाती हुई पहुँच गई। उसकी एक सहेली, जो विकलांग नहीं थी, उसे शुभकामनाएँ देते हुए बोली, 'तुम बहुत सुंदर लग रही हो उड़ान।'

उसने तुतलाते हुए कहा, 'आज कंप्यूटर पर मैंने तुम्हारा चित्र बनाया है उमंग। उस चित्र में तुम एक ऊँची पहाड़ी पर खड़ी हो और आसमान में उड़ रहे परिंदों को देख रही हो।'

उमंग ने अपने हाथों में थामी एक बड़ी तस्वीर उड़ान को भेंट करते हुए कहा, 'यह एक संयोग ही है कि वही चित्र मैं तुम्हें इस सालगिरह पर भेंट करने आई हूँ। उस चित्र में मैं नहीं, तुम स्वयं हो।'

उड़ान ने उमंग के बनाए चित्र को देखा तो वह विस्मित हो उठी। सचमुच उस चित्र में वह स्वयं ही थी। एक ऊँची पहाड़ी पर खड़ी परिंदों को देखती हुई वह अपने आकाश की ऊँचाइयों को माप रही थी। वह स्वयं को देर तक एक दर्शक बनकर देखती रही और स्वयं को ही सार्थक करती रही।

काठमंडी, सिरसा 125055

सुदर्शन रत्नाकर

शर्मिन्दगी

पॉश कॉलोनी के हमारे पड़ोस में ख़ाली पड़े प्लॉट पर जबसे मकान बना है, अर्चित और अलिका के साथ कपिल भी निराश और उदास हो गए थे। पड़ोसी किसी गाँव में रहते थे। पिछले वर्ष ही उन्होंने मकान बनवाना शुरू किया था। उनको देखकर वे सब अनमने से रहने लगे। पड़ोसी यदि अपने स्तर के न हों तो रहने का मज़ा ही किरकिरा हो जाता है। उनका रहन-सहन, बातचीत का ढंग सब-कुछ अजीब-सा है। सारा दिन शोर-शराबा हल्ला-गुल्ला और गाँव के लोगों का आना-जाना लगा ही रहता है।

यह तो अच्छा है कि दाईं ओर के तथा सामने के पड़ोसी अच्छे हैं। अपने जैसे लोगों के साथ जीवन जीने का नज़रिया ही बदल जाता है। उनके बच्चे भी अर्चित और अलिका के बराबर ही हैं। दोनों को उनके साथ खेलना, उठना-बैठना अच्छा लगता है।

रात घर में पार्टी थी। कुछ पारिवारिक मित्र और ऑफिस से कुछ लोग आए थे। नए पड़ोसियों को छोड़ कुछ और पड़ोसी भी थे। रात देर तक जश्न चलता रहा। सब-कुछ सँभालने, सोने में रात का एक बज गया था। अभी सोए कुछ ही समय हुआ था कि कपिल के कराहने की आवाज़ सुनाई दी। बत्ती जलाकर देखा। वह हाथ से छाती दबाए हुए थे तथा पसीने से लथपथ हो रहे थे। मैं समझ गई कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा है। फैमिली डॉक्टर बाहर गए हुए थे और अस्पताल घर से बहुत दूर था। एम्बुलेंस पहुँचने में भी समय लग जाएगा।

कपिल ने मित्रों को फ़ोन किया। सभी सो रहे थे। किसी ने फ़ोन नहीं उठाया और किसी ने काट दिया। यहाँ तक कि दोनों पड़ोसी भी नहीं उठे।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। एकाएक नए पड़ोसियों का ध्यान आया। जल्दी से उनके घर की कॉल बैल बजाई। दो मिनट बाद ही लुंगी और बनियान पहने घर का मालिक बाहर आ गया। मैंने उसे सारी स्थिति बताई। उसने कहा, 'बहनजी आप घर जाएँ, मैं अभी आता हूँ।'

मैं अंदर पहुँची ही थी कि वह पीछे-पीछे आ गया, साथ में उसका बेटा भी था। दोनों ने मिलकर कपिल को उठा लिया और गेट से बाहर ले आए; जहाँ उनका दूसरा बेटा कार का दरवाज़ा खोले खड़ा था। उन्होंने सँभालकर कपिल को कार में बैठा दिया। यह सब पलक झपकते हो गया।

अस्पताल पहुँचकर मैं तो कपिल के साथ खड़ी रही और उन लोगों ने दाख़िले की सारी औपचारिकताएँ पूरी कर इलाज भी शुरू करवा दिया आपातकाल में ऑपरेशन भी करवाना पड़ा।

हम लोग समय पर पहुँच गए थे, वरना पता नहीं क्या हो जाता। मैं घबराहट में पर्स ले जाना ही भूल गई थी। ख़र्चे के रुपये उन्होंने जमा करवाए। ऑपरेशन के बाद कपिल के होश आने पर मुझे सब ध्यान आया।

स्वस्थ होकर जब तक कपिल घर नहीं आए, वे लोग साये की तरह मेरे साथ रहे। संकट का वह समय उनके सहयोग से बीत गया था, पर मैं और कपिल उनसे आँख मिलाने में कतराते रहे। मन में छाए शर्मिंदगी के भाव ऐसा करने से रोक रहे थे।

मुक्ति

माँ को सात वर्ष से पागलपन के दौरे पड़ रहे थे और पिछले वर्ष से उसने चारपाई पकड़ ली थी। वहीं खाना-पीना। वहीं मल-मूत्र। माँ को सँभालना उसके लिए कठिन हो गया था। ऊपर से कितनी ही बीमारियों ने उन्हें घेर रखा था। डॉक्टर ने जवाब दे दिया था। ईश्वर ने जाने कितनी साँसें लिखी हैं, वे तो उन्हें पूरी करनी पड़ेगी। वह आजिज आ गया था। कई बार खीझ उठता। माँ की सेवा भी करता और गुस्सा भी करता। जेब बेकाबू हो जाती।

गत कई महीनों से वह माँ की मुक्ति के लिए मृत्युंजय मंत्र का जाप भी करने लगा था। किसी तरह इस नारकीय जीवन से माँ मुक्त हो जाए, उसे छुटकारा मिल जाए। और ईश्वर ने बरसों बाद उसकी पुकार सुन ली थी। माँ को मुक्ति मिल गई थी। वह भी कर्त्तव्य-भार से मुक्त हो गया था। सभी रस्मों को पूरा करने के बाद आज वह घर में नितांत अकेला रह गया था। चारपाई, जिस पर माँ सोती थी, सूनी पड़ी थी। घर में सन्नाटा पसरा था। वह चारपाई के पाए पर सिर रखकर फफक पड़ा। उसे उसमें से माँ की ममता की अजीब-सी महक आ रही थी।

ई-29, नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद 121001

डॉ॰ हरदीप कौर संधु

घर और कमरे

शहर की पॉश कॉलोनी के एक आलीशान मकान में कांताबाई पहले दिन काम करने आई थी, तब उसे पता नहीं लगा था कि इतने बड़े मकान में कितने लोग रहते होंगे? उसे कितना काम करना होगा? नीचे लिविंग रूम, ड्रॉइंग रूम, स्टडी रूम, रसोई और ऊपर पाँच कमरे, तीन बाथरूम। इतने बड़े घर में काम करते हुए उसे यह भी याद न रहता कि कौनसा कमरा हो गया और कौनसा छूट गया।

इतना सुंदर घर उसने अपनी ज़िंदगी में पहली बार देखा था। कीमती फर्नीचर, रेशमी पर्दे, मखमली बिछौने, दीवार पर टँगी बड़ी-बड़ी तस्वीरें, घर के एक तरफ़ झरने से गिरते पानी का मधुर संगीत और फूल-पौधे हर देखने वाले को मंत्रमुग्ध कर देते। काम करते समय कांता सोचे जा रही थी कि काश! उसका घर भी ऐसा ही होता। प्रभु ज़्यादा नहीं तो इस घर में से अगर रत्तीभर भी मुझे दे दे! अपने आपसे बातें करती वह बोली, 'कितना मुश्किल है मुझे, एक कमरे का भी कोई घर होता है, वहीं नहाना-धोना और वहीं खाना-पकाना, ऊपर से पाँच बच्चों का इतना बड़ा परिवार। कोई कैसे सँभाले?'

पर एक बात उसे खटक रही थी—वह जब भी सुबह-सुबह इस घर में आती तो उसे घर की मालकिन कभी भी घर न मिलती। घर का मालिक कभी-कभी दिखाई दे जाता। उनकी 15-16 वर्ष की बेटी शीतल कॉलिज जाने के लिए तैयार हो रही होती। कांता आते ही सबसे पहले उसके लिए नाश्ता बनाती और फिर दूसरे कामों में लग जाती।

'मालकिन कभी नहीं मिली बिटिया?' एक दिन उसने पूछा तो शीतल ने बेमन से बताया कि उसकी मम्मी कुछ समय के लिए शहर से बाहर गई हैं और जल्दी ही लौट आएँगी।

आज जब कांता आई तो शीतल चुप-सी एक कोने में बैठी थी।

'ए रानी बिटिया...का हुआ? कॉलेज नहीं जाना आज?' उसके इतना कहने की देरी थी कि शीतल की आँखें भर आईं। उसने बताया कि कल डॉक्टरी रिपोर्ट आई है, उसको केंसर हो गया है।

कांता सुनकर परेशान हो उठी, 'हाय राम! तेरी उम्र से भी बड़ी बीमारी। ये का हो गया बिटिया कैसे हुआ, कब हुआ, तूने कभी कुछ बोला भी नहीं इसके बारे में, भीतर-ही-भीतर अकेले ही झेले जा रही हो, मैं बोल देती हूँ आज तुझे, हाँ, अपनी मम्मी को फ़ोन लगा बस तू, अभी, बुला उसे अपने पास, नन्ही-सी जान। कैसे झेलेगी रे तू?'

आज शीतल ने सुबकते हुए उसे एक और कड़वा सच बताया कि उसकी मम्मी घर छोड़के चली गई है। घर में होते क्लेश से तंग आकर उसने ये क़दम तब उठाया जब उसके पिता ने उसे मरवाने की धमकी दी। अब वह कभी भी इस घर में वापिस नहीं आएगी।

यह सुनकर कांता सोचने लगी। तभी तो मेरा मन न माने, इतना कुछ होते भी यहाँ सूनापन क्यों लगता है? उसे कभी यहाँ घर दिखाई क्यों नहीं देता था। उसका पति चाहे रिक्शा चलाकर कम ही कमाता है, लेकिन वह कितना अच्छा है? उसका कितना ख़्याल रखता है? और कभी-कभी उसे रिक्शे पर यहाँ छोड़ भी जाता है।

हिचकी लेते शीतल बोली, 'मेरी सहेलियाँ कितनी भाग्यशाली हैं; जिनके पास उनकी माँ है। मेरे पिता को रुपया कमाने से फ़ुर्सत नहीं है, मैं उनको कैसे कुछ बताऊँ। पापा कहते हैं कि हमारे पास बहुत पैसा है, मुझे चिंता करने की आवश्यकता नहीं, इलाज हो जाएगा।'

कांता अपनी चुनरी के पल्लू से शीतल के आँसू भी पोंछे जा रही थी और सोच रही थी कि वह अपने एक कमरे के घर में कितनी सुखी है! उसे यहाँ हमेशा कमरे ही दिखाई दिए, घर कभी दिखाई नहीं दिया।

28 Bellenden Close,Glenwood-2768,NSW,(Sydney-Australia

डॉ॰ रामनिवास 'मानव'

बहाव के सामने

मैं आज सुबह से ही परेशान हूँ। बिटिया बीमार है। तेज बुख़ार है। कुछ जुकाम-खाँसी भी है। डॉक्टर की दवा का भी कोई असर नहीं हुआ। बुख़ार ज्यों-का-त्यों है।

मैं बार-बार उसके माथे पर हाथ रखकर देखता हूँ, जल रहा है। फिर उसके हाथों को अपने हाथों में ले लेता हूँ। प्यार करता हूँ। सांत्वना भी देता हूँ–'चिंता की कोई बात नहीं है। बहुत जल्दी ठीक हो जाएगी हमारी बिटिया। बुख़ार तो आता ही रहता है।'

मेरे प्यार की गर्माहट से वह आँखें खोल देती है। आँखें लाल हैं, लगातार पानी बह रहा है। वह मुस्कराने की चेष्टा करती है। फिर धीरे-से कहती है–'डैडी, जी करता है, बीमार ही रहूँ।'

'क्यों बेटे?' मैं हैरान होकर पूछता हूँ।

'जब बीमार होती हूँ तो आप मुझे भी आशु भैया जितना ही प्यार करते हैं ना!' बिटिया स्पष्ट करती है।

मैं सन्न रह गया। बेटी की अदालत ने मुझे अपराधी घोषित कर दिया था। बेटे-बेटी में मैंने कभी कोई अंतर नहीं किया। लेकिन दो वर्ष छोटा होने के कारण, बेटे आशु के प्रति कुछ अधिक लगाव होना स्वाभाविक है। निशि ने उसे अपने प्रति भेदभाव समझ लिया था।

मैं उसे कसकर भींच लेता हूँ। मुझे लगता है कि यदि मैंने अपनी पकड़ ढीली कर दी, तो उसकी आँखों से उमड़ने वाली जलधारा मुझे भी बहा ले जाएगी।

खिलौने

हरिबाबू ने नज़र घुमाकर देखा, तो उन्हें अपने ड्राइंग-रूम की हर चीज़ बड़ी सस्ती और घटिया नज़र आई। 'यह भी कोई ड्राइंग-रूम है!' सोचकर वह उदास से हो गए।

ड्राइंग-रूम तो धीर साहब का है, एकदम फस्स क्लास। कल जन्मदिन की बधाई देने गए, तो देखते ही रह गए। क्या सोफ़े, रंगीन टी॰वी॰, वी॰सी॰आर॰ थे! और क्या डेकोरेशन थी, वाह!!

और हाँ, शो-केस में कितने शो-पीस सजे थे, एक से बढ़कर एक, पीतल के, लकड़ी के, संगमरमर के! एक रैक तो पूरे-का-पूरा खिलौनों से भरा था और हर खिलौना कितना क़ीमती, ख़ूबसूरत और चमचमाता हुआ लगता था।

क्षण-भर के लिए हरिबाबू कहीं खो गये थे कि तभी उनके चुन्नू-मुन्नू 'पपा आ गए, पापा आ गए' का शोर मचाते हुए अंदर घुस आए। फिर उछलते-गाते-झूमते उन दोनों ने, पूरे ड्राइंग-रूम को, एक संगीतमय ताज़गी से तर कर दिया।

हरिबाबू के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान झलक आई। बस, फिर क्या था, दोनों बच्चे चढ़ बैठे उनके कंधों पर और लगे उछल-उछलकर खेलने।

अब पुनः निगाह डाली, तो हरिबाबू को अपनी सारी-की-सारी चीज़ें बदली हुई नज़र आईं।

'धीर साहब के ड्राइंग-रूम में सब-कुछ तो है, लेकिन ऐसे सजीव खिलौने तो नहीं हैं।' उन्होंने अपने आपसे कहा और बच्चों को कसकर छाती से लगा लिया।

'अनुकृति', 706,
सैक्टर-13
हिसार
(हरियाणा)125005

डॉ॰ प्रद्युम्न भल्ला

बेटियाँ

बच्चों को स्कूल ले जाने व छोड़ने वाले के चेहरे पर कई दिनों से मैं चिंता की रेखाएँ साफ़ पढ़ सकता था। एक दिन रहा न गया तो दोपहर को बच्चे छोड़कर जाते हुए मैंने उसे रोक ही लिया।

—आओ बुद्धराम, पानी पी लो, बड़ी गर्मी है।

वह रुक गया। मैंने उसे अपने कमरे में बिठाकर पानी पिलाया। पानी पीकर वह माथे और चेहरे का पसीना पोंछने लगा।

—क्या बात है भई, लगता है कई रोज़ से तुम परेशान हो।

—नहीं बाबूजी, ऐसी कोई बात नहीं है। उसने कह तो दिया मगर वह अपनी पीड़ा छुपा न सका।

—नहीं बाबूजी, ऐसी कोई बात नहीं है। दरअसल दस दिन बाद बिटिया की शादी है और थोड़ी-सी पैसे की कमी रह गई है, अपने भाइयों बिरादरी वालों यहाँ तक कि जिनके घर बच्चे छोड़ता हूँ सभी से पूछ चुका हूँ—वह सकुचाते हुए बोला।

—लेकिन मुझसे तो नहीं पूछा।

—वो बाबूजी क्या है कि मेम साहब से पूछा था, उन्होंने मना कर दिया था। कहते-कहते लगा कि वह शायद रो ही देगा।

—कितनी कमी रह गई।

—यही पाँच हज़ार रुपये।

—लौटाओगे कैसे, मैंने पूछा।

—हर महीने पाँच-पाँच सौ देकर, आप चाहें तो ब्याज भी.....कहते हुए उसकी आँखों में चमक-सी आ गई थी।

—ये लो पाँच हज़ार रुपये, जब चाहो लौटा देना। उसके जाते ही और घर के भीतर घुसते ही पत्नी की आवाज़ सुनाई दी।

—आपने पाँच हज़ार रुपये उठाकर उसे दे दिए, न पता मालूम है न ठिकाना और ये रुपये तो वैसे भी मैंने अगले सप्ताह आ रही बिटिया के लिए रखे थे। उसे कपड़े, सामान वगैरह देना था।

मैंने भी तो वे पैसे बिटिया को ही दिए हैं। बेटी चाहे ग़रीब की हो या अमीर की, बेटी तो बेटी होती है।

अब पत्नी ख़ामोश थी।

508 **सेक्टर**-20, **अर्बन एस्टेट, कैथल (हरियाणा)** 136027

शशि पाधा

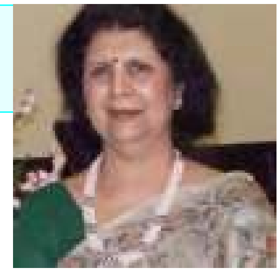

घर

लता को इस घर में दुल्हन बने आए दो सप्ताह ही हुए थे। वह सुंदर तो थी ही, किंतु उसकी शालीनता और मृदुभाषिता ने सबका दिल जीत लिया था। रस्मो-रिवाज़ की औपचारिकता के बाद अब लता धीरे-धीरे अपना सामान अलमारियों में लगाने में लगी थी। उसकी सास मीरा लता को इस घर के परिवेश में पूर्णतया ढल जाने में सहायता कर रही थी। दोनों को ही इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता था कि कोई भी एक-दूसरे की परिधि को न लाँघें।

दो सप्ताह के बाद मीरा ने देखा कि लता ने अपने कपड़े, जूते सभी सुचारु रूप से लगा दिए थे; किंतु नीचे के कमरे में पड़े उसके खाली सूटकेसों के पास ब्राउन कागज में लपेटा एक छोटा-सा पैकेट पड़ा रह गया था। कुछ दिन तक मीरा ने सोचा—कुछ होगा, खोल लेगी; किंतु काफ़ी दिनों तक जब वह नहीं खुला तो मीरा ने उत्सुकतावश लता से पूछा, 'बेटी, इस पैकेट में क्या है? आप इसे खोलना भूल गई हो। काफ़ी दिनों से यहीं पड़ा है।'

लता ने नीची गर्दन करके सकुचाते हुए कहा, 'माँजी, इसमें मेरे मम्मी-पापा की तस्वीर है। समझ में नहीं आया कि कहाँ रखूँ?'

मीरा ने बड़े स्नेह से उसे कहा, 'अरे ज़रा खोलो तो। देखें तो कैसी तस्वीर है?'

लता ने तस्वीर को ब्राउन कागज से निकाला और बड़े ही प्रेम से उसे निहारते हुए अपनी सासू माँ को पकड़ा दिया।

मीरा ने कहा, 'अरे इतनी सुंदर तस्वीर, दिखाओ तो। कहाँ रखूँ? अरे इनकी जगह यहाँ है न।' और उसने बिना वक़्त गँवाए उस तस्वीर को घर की बैठक के कोने वाली टेबल पर रख दिया। आज से 35 वर्ष पहले मीरा ने ऐसा ही अपने लिए सोचा था; किंतु वह कर नहीं पाई थी।

अब उस टेबल पर मीरा और उसके पति की तस्वीर के साथ-साथ लता के माता-पिता की तस्वीर भी सज गई।

174/3 **त्रिकुटा नगर, जम्मू**. 180003

पवित्रा अग्रवाल

बैठी लक्ष्मी

रतन के घर में घुसते ही मनीषा ने कहा–'आज तुमने लंच पर आने में बहुत देर कर दी। कुछ परेशान भी दिख रहे हो।'

'हाँ पुलिस स्टेशन से आ रहा हूँ।'

'क्यों,क्या हुआ ?'

'बैंक से पचास हजार रुपए ले कर आ रहा था। मोटरसाइकिल पर सवार दो लोगों ने किसी का पता पूछा। मैं उनको बता ही रहा था कि वह मेरे हाथ से बैग छीन कर भाग गए। स्कूटर नंबर मैंने देख लिया था। पुलिस में रिपोर्ट लिखा कर आ रहा हूँ।'

'अरे ऐसे लोग स्कूटर भी चोरी का ही इस्तेमाल करते हैं। तुम तो इतने सावधान रहते हो।'

'बस नुकसान होना था सो हो गया, पर पचास हजार कोई छोटी रकम नहीं होती और इस समय तो पैसे की ज़रूरत भी बहुत थी। रत्ना का एम॰बी॰ए॰ में एडमिशन कराना था।'

मनीषा को बैठी लक्ष्मी की याद आ गई, तीन-चार महीने पहले की ही तो बात है। धनतेरस के दिन उसने पति से कहा था–'आज का दिन शुभ है, आज मैं चाँदी की बैठी हुई लक्ष्मी जी की मूर्ति खरीदकर लाऊँगी। दीपावली के दिन अपने मंदिर में इसकी स्थापना करके लक्ष्मी पूजन करेंगे।'

रतन ने टोका था–'अपने मंदिर में चाँदी की इतनी बड़ी लक्ष्मी जी हैं तो दूसरी क्यों?'

'हाँ हैं, पर वह खड़ी हुई लक्ष्मी की है। उस दिन मिसेज चारु आई थीं, आपको तो मालूम है कि वह कितनी धनी हैं। हमारे मंदिर को देखते ही बोलीं–'अरे आपने मंदिर में खड़ी लक्ष्मी की मूर्ति क्यों रख रखी है? मूर्ति बैठी हुई लक्ष्मी की होनी चाहिए।'

मैंने कहा–'मुझे तो यह सब पता नहीं था। क्या इसका कुछ खास कारण है?'

वह बोलीं–'लक्ष्मी जी बड़ी चंचल प्रवृत्ति की होती हैं, आराम से बैठी लक्ष्मी की तुलना में खड़ी लक्ष्मी के जल्दी चल देने की संभावना रहती है। मेरे घर में तो खड़ी लक्ष्मी की एक तस्वीर तक नहीं है।'

'अरे यार तुम भी कैसी-कैसी बातों में विश्वास करने लगती हो, ऐसे..'

'बस-बस तुम मुझे कुछ मत समझाओ, मैंने निर्णय कर लिया है कि बैठी हुई लक्ष्मी की मूर्ति लाऊँगी तो बस लाऊँगी।'

'ठीक है ज़रूर लाओ।'

और वह लाई थी।

अपने मंदिर में जाकर उसने देखा। लक्ष्मी जी तो अभी भी मंदिर में बैठी हुई हैं पर..।

स्टेटस

वह घर पहुँचा तो पत्नी मुँह लटकाए हुए बर्तन साफ़ कर रही थी–'आज कामवाली नहीं आई?'

'अब आएगी भी नहीं।'

'अब क्या हो गया? पहले तो कामवाली हमारी जात पता लगने पर भाग जाती थी, पर यह नई कामवाली तो अपनी जात की है, यह क्यों भाग गई?'

'हमारी जात की है तो क्या हमारे सर पर चढ़कर बैठेगी? हमारे स्टेटस की हो जाएगी? अब तक तो चाहे जब कुर्सी पर बैठ जाती थी...मुझे बुरा तो लगता था, पर यह सोचकर चुप हो जाती थी कि बहुत परेशानी के बाद तो इसे पा सकी हूँ कहीं यह भी न भाग जाए, पर आज तो वह टी॰वी॰ देखने के लिए सोफे पर बैठ गई। पारुल ने कहा–'सोफे पर नहीं, कारपेट पर बैठ जाओ। तो बस तुनककर बोली, 'अब तक जब ऊँची जात के लोग हमें अपने से नीचा समझते थे तो बहुत गुस्सा आता था, लेकिन पारुल हम-तुम तो एक ही जात के हैं, तुम हमसे अछूतों का-सा व्यवहार क्यों कर रही हो? तुम चार अक्षर पढ़ गए तो हमसे ऊँची जात के तो नहीं हो गए? ..नहीं करना तुम्हारा काम।' कहकर वह पैर पटकती हुई बाहर चली गई।

घरौंदा, 4-7-126 **ग्राउंड फ़्लोर**
इसामियाँ बाज़ार, हैदराबाद 500027

पॉकेटमारी

डॉ॰ शील कौशिक

'इसने शराब पी रखी है। खतरे से तो बाहर है, पर चोट काफ़ी लगी है। इसलिए यहाँ एडमिट करना पड़ेगा।' डॉक्टर ने मोटरसाइकिल सवार का मुआयना करते हुए कहा।

'क्या आप इसके खिलाफ़ एफ॰आई॰आर॰ लिखवाएँगे?' डाक्टर ने साथ आए श्री पारीक से पूछा।

'इसने शराब के नशे में मेरी कार को टक्कर मार दी। कार का काफ़ी नुकसान हुआ है। ग़लती तो इसकी थी। इसे और इसके माँ-बाप को कुछ तो सबक सिखाना चाहिए।' कार के मालिक श्री पारीक ने उत्तेजित स्वर में कहा।

'छोड़ो भी, आपके नुकसान की भरपाई तो इंश्योरेंस के क्लेम से हो जाएगी। सोच लो आपका अपना बच्चा है, ग़लती हो गई, माफ़ कर दो इसे।' डॉक्टर ने समझाया।

श्री पारीक ने डॉक्टर की बात मान ली।

डॉक्टर ने लड़के के घर वालों को डराया, 'आपका बचाव इसी में है कि आप इसे यहीं दाख़िल रहने दें। कारवाला केस करने की धमकी दे रहा है। मैं किसी तरह उसे मना लूँगा।'

डॉक्टर की जेब गर्म हो गई।

उधर पुलिस वाले ने श्री पारीक से पूछा, 'बोलो रिपोर्ट लिखवानी है क्या?' और उन्हें सोच में पड़ा देख कहा, 'छोड़ो साहब! नादान बच्चा है, ग़लती कर बैठा। आप कोर्ट-कचहरी के चक्कर में पड़े रहेंगे और इस बेचारे का कैरियर चौपट हो जाएगा।'

एक क्षण के लिए श्री पारीक को अपने जवान बेटे का ख़्याल आया। वे तुरंत बोले, 'मुझे रिपोर्ट नहीं लिखवानी।'

तब पुलिसवाले ने लड़के के घर वालों को कहा, 'तुम्हारे बेटे के खिलाफ़ रिपोर्ट लिखवाई जा रही है, केस रफ़ा-दफ़ा करवाना है तो कुछ करो।'

मेजर हाउस-17, **सेक्टर** 20, **सिरसा (हरियाणा)**125055

अब लौट चलें

डॉ॰ अनीता राकेश

ऑफ़िस से भरत घर लौटता है। घर के बाहर भीड़ देख घबराया हुआ भीतर जाता है। उसे देखते ही लोगों ने कहना शुरू किया-'अरे! इतनी बीमार माँ को अकेला छोड़ कर कैसे चले गए! हद कर दी तुमने', 'ऑफ़िस से छुट्टी नहीं ले सकते थे क्या? आदि-आदि। बेटे को उलाहना अच्छा नहीं लगा। रात अकेला पड़ते ही तनिक झल्लाया हुआ बोला-'क्या माँ तुम भी कम नहीं हो। मेरी परेशानी तो समझो। और हाँ, मोबाइल तो तुम्हारे पास था ही। पड़ोसियों को जुटा लिया और मुझे एक कॉल नहीं कर सकती थीं।'

बेटे की परेशानी एवं उलझन को भली-भाँति समझते हुए थरथराती आवाज़ में कहा-'सच बच्चे, मैं तुम्हें परेशान करना नहीं चाहती थी। जब दर्द अधिक बढ़ गया तो तुम्हे कॉल करने की कोशिश की, पर समझ ही नहीं आया। और तो और काँपते हाथों से मोबाइल भी गिरकर टूट गया। थरथराते हाथों में टूटा मोबाइल लिए माँ ने रोते हुए कहा-'उसे उठाने लगी तो मैं भी गिर पड़ी। पड़ोसियों ने शायद खिड़की से मुझे गिरा हुआ देखा और सब जमा हो गए।' रो-रोकर बोलते-बोलते माँ की हिचकियाँ बँधने लगीं।

माँ के आँसुओं और शब्दों के साथ भरत का क्षोभ भी पिघलता गया। पिघले मन एवं तन की आँखों के सामने अपना गाँव तैरने लगा। जहाँ बड़ी-बड़ी मुसीबतों एवं तकलीफ़ों में भी पूरा परिवार ही नहीं सौ साल की दादी भी कभी अकेली नहीं पड़ी और माँ सिर्फ पचपन में ही नितांत अकेली!

एसो॰ प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जे॰पी॰ वि॰वि॰
छपरा (बिहार) 9835093696

प्रियंका गुप्ता

भेड़िए

माँ अक्सर अपने नन्हे से मेमने को समझाती, घर के बाहर दूर तक अकेले न जाना। घना, अँधेरा, बिल्कुल काला जंगल, जिसमें खूँख़ार जंगली जानवर बसते हैं। बाकी तो तब भी ठीक हैं, शायद बख़्श भी दें, पर भेड़िया वो जीव है, जिससे उसे सबसे ज़्यादा होशियार रहना है। अपनी आँख-नाक-कान सब खुले रखने हैं। माँ जब काम पर जाए तो दरवाज़ा बद करके घर के अंदर ही रहना है। मेहमान का भी भरोसा नहीं करना है बिल्कुल। दूर से भी कहीं भेड़िया छुपे होने का शक हो, तो तुरंत भागकर घर में घुसकर दरवाजे-खिड़कियाँ मजबूती से बंद कर लेने हैं।

माँ ने दुनिया देखी थी, जंगल देखा था, वो सब जानती थी। मेमना माँ की सब बात मानता था। ये बात भी मानी। इसलिए अब वह अकेले कहीं नहीं जाता था। किसी अजनबी तो दूर, जानने वाले से भी ज़्यादा बात नहीं करता था। माँ के जाते ही मजबूती से घर के सब खिड़की-दरवाज़े बंद कर लेता था।

एक दिन माँ जब काम से लौटी, मेमना कहीं नहीं मिला। मिले, तो बस खून के कुछ कतरे। माँ नहीं समझ पा रही थी कि उसके इतने आज्ञाकारी बच्चे का शिकार आख़िर हुआ कैसे? समझ तो शिकार होने तक मेमना भी नहीं पाया था। माँ उसे घर के भेड़िए के बारे में बताना जो भूल गई थी।

ज़ख्म

अँधेरी, बिना चाँद- तारों वाली रात में चलते हुए सहसा उसे जोर की ठोकर लगी। उस बेनूर रात में भी उसका साया उसके साथ था, वो हाथ न पकड़ लेता तो थोड़ी दूर पर ही मौजूद जाने कितने गहरे अंधे कुएँ में वो जा गिरती। वो भीषण दर्द के बावजूद साए की शुक्रगुजार थी। दर्द की दवा खाकर, मलहम लगाकर किसी तरह उसने घाव पर पट्टी बाँध तो ली, पर फिर भी जख़्म भरते-भरते वक़्त तो लगना ही था न। वो अपने ज़ख़्म के साथ अकेले में आँसू बहाती अक्सर खुद को कोसती, क्यों आसमान की रौशनी के आसरे बाहर निकलीऔर निकली भी तो बुद्धि क्यों नहीं लगाई कि कम- से-कम एक दिया ही साथ लेकर चलती। हल्की रौशनी भी मौजूद होती आँखों के आगे तो यूँ चोट न खाती।

साया जब भी सामने आता, ज़ख़्म टहो कर पूछता, अब भी दर्द है क्या? टीस से उभरती चीख गले में ही घोंट वो भरसक सहजता से मुस्करा कर कहती-थोड़ा दर्द अब भी है, तुम न होते तो बहुत गहरी चोट खाती। शुक्रिया मेरे साए, यूँ ही साथ रहना। साया भी अपनी पीठ ठोंक लेता। हाँ, मैं न होता तो? सोचो, तुम कहाँ होतीं? पर साया ये भी जोड़ना न भूलता, ठोकर तुमने खाई, तुमसे ज़्यादा तकलीफ़ मुझे हुई। तुमसे ही मेरा वजूद था। तुम कुएँ में जातीं तो मैं भी तो ख़त्म ही हो गया होता। वो साए की बात से पूरी तरह सहमत थी और पछतावे की आग में लगातार जल भी रही थी।

वक़्त बीतता गया। जख़्म भर भी गया तो भी निशान बाकी था। वो हरसंभव प्रयास करती थी, कोई उपाय तो मिले, जिससे वो निशान भी मिट जाए। पर इससे पहले कि कोई उपाय कारगर होता। हर बार नए सिरे से साया सामने आता, उसका जख़्म टहोकता और टीस उठने पर बेपरवाही से कहता-सिर्फ ये देख रहा था कि तुमको अपनी लापरवाही से लगी इस चोट की याद है भी कि नहीं, वरना कहीं ऐसा न हो कि मैं साथ न रहूँ तो तुम सीधे जाकर एक नया अंधा कुआँ तलाशकर उसमें गिर पड़ो ठोकर खाकर।

वो साए की बात से पूरी तौर से सहमत है। आज भी पछताती है, पर फिर भी सोचती है, कोई नया जख़्म न मिले इसके लिए पुराने घाव का लगातार रिसते रहना क्या ज़रूरी है?

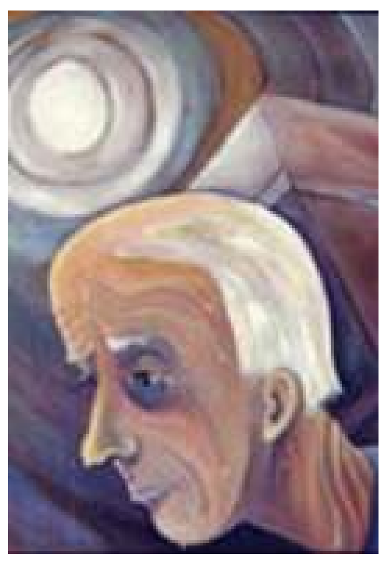

एम.आई.जी॰ 292 कैलाश विहार, आवास विकास योजना संख्या एक, कल्याणपुर, कानपुर 208017

दीपक मशाल

डर

ऐसा नहीं कि बूढ़े के पास पैसों की कमी थी। बच्चे भी अपनी-अपनी जगह सैटिल हो चुके थे, बेटा-बहू पुणे में डॉक्टर थे और बेटी-दामाद दोनों चंडीगढ़ में इंजीनियर, कई बार बच्चों ने उनसे कहा भी कि हमारी ख़ातिर आपने सारी उम्र एक जगह रह कर गुज़ार दी। न दिन देखा न रात और न दुनिया, बस हम दोनों का भविष्य सँवारने में लगे रहे। अब ईश्वर और आपके आशीर्वाद से जब सब आनंद है तो क्यों नहीं मम्मी और आप दुनिया घूम लेते? हम भी आपके साथ चलने को तैयार हैं। लेकिन बूढ़ा तैयार न होता, बेटी ने एक-दो बार फिर जोर दिया कि कुछ नहीं तो कम से कम तीर्थ ही कर आइए, या फिर मेरे या भैया के साथ शहर में रहिए। कहाँ इस कस्बे में पड़े रहते हैं जहाँ ढंग से बिजली-पानी तक नहीं आता उसकी पत्नी ने भी कई बार घूमने की इच्छा जताई लेकिन वो कहाँ मानने वाला था। पत्नी से भी कह देता- 'अगर तुम्हें घूमना हो तो घूम आओ, मैं नहीं जाने वाला।'

उस शहर से उसकी आसक्ति किसी से छुपी नहीं थी, जबकि न ही वहाँ उसका कोई दोस्त था न सगा-संबंधी। ऊपर से हवेलीनुमा उस मकान में बूढ़ा-बुढ़िया दो कमरों और एक किचेन से ज़्यादा कुछ इस्तेमाल भी ना करते फिर भी उसे किराए पर न उठाते। जाने ये उसका डर था या उस घर से लगाव। सब यही समझते कि बेटा-बेटी अपने-अपने घरों में सुख से हैं पैसों की कोई कमी नहीं इसलिए किराए पर उठाएँ भी क्यों!!

पर एक रात की बात बूढ़ा नींद में जोर-जोर से बड़बड़ाने लगा-'नहीं, नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। मेरे मकान पर कब्ज़ा नहीं कर सकते। इसीलिए मैं किराए पर नहीं देता था, मुझे पता था तुम सब मेरे मकान पर आँख गड़ाए बैठे थे, पर तुम मेरे जीते-जी ऐसा नहीं कर सकते।

अचानक बुढ़िया को पैंतीस साल पहले का वो दृश्य याद आ गया जब वह और उसका पति उस घर में अकेले रहने वाले बूढ़े के पास किरायेदार बनकर आए थे और फिर एक सुबह अचानक उसके मालिक बन बैठे थे। अब वो बूढ़े पति का डर समझ सकती थी।

584 Stinchcomb Dr Apartment 2 Columbus-Ohio 43202 United States

शशि पुरवार

रोज़ दिवाली

रामू धन्नी सेठ के यहाँ मजूरी के हिसाब से काम करता था। सेठ रामू के काम और ईमानदारी से खुश रहता था, परंतु काम के हिसाब से वह उसे मजूरी कम देता था। रामू को जितना भी धन मिलता, वह उसमें ही संतुष्ट रहता था। इस बार सेठ को त्योहार के कारण अनाज में तीन गुना मुनाफ़ा हुआ, तो ख़ुशी उसके चेहरे से टपक पड़ी। घमंड भरे भाव में वह रामू से बोला, 'रामू इस बार मुनाफ़ा ख़ूब हुआ है, सोच रहा हूँ कि इस दिवाली घर का फ़र्नीचर बदल दूँ, घरवालों को खूब नए कपड़े, गहने और मिठाई इत्यादि लेकर दूँ, तो इस बार उनकी दीवाली भी खास हो जाए...!'

सेठ बोलता जा रहा था और रामू शांत भाव से अपने काम में लगा हुआ था। जब धन्नी सेठ ने यह देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया और रामू को नीचा दिखाने के लिए उसने कहा, 'मैं कबसे तुमसे बात कर रहा हूँ, तुम कुछ बोल नहीं रहे हो, ठीक है तुम्हें भी 100 रुपये दे दूँगा, अब तो खुश हो ना? यह बताओ कि तुम क्या-क्या करोगे इस दिवाली पर...?'

रामू शांत भाव से बोला, 'सेठ हमारे यहाँ तो रोज़ ही दीवाली होती है।'

'रोज़ दिवाली होती है? क्या मतलब? आश्चर्य का भाव सेठ के चेहरे पर था।'

'जब रोज़ शाम को पैसे लेकर घर जाता हूँ, तो सब पेट भरकर खाना खाते है और ख़ुशी उनके चेहरे पर होती है, यह हमारे लिए किसी दिवाली से कम नहीं है।' कहकर रामू अपने काम में मगन हो गया।

ए /3, सरकारी आवास जिला एवंसेशन कोर्ट डी॰आई॰सी॰ ऑफिस, सिविल लाइंस वर्धा (महाराष्ट्र) 442001

जल-संरक्षण

कमला निखुर्पा

सीमा आज वह बहुत खुश थी। उसने प्रार्थना-सभा में जल-संरक्षण पर भाषण दिया था। भाषण सुनकर सभी ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। साथी अध्यापकों ने उसकी भाषण-कला की तारीफ़ की।

दुबेजी बोले, वाह सीमा मैडम! क्या ज़बरदस्त भाषण था आपका, भई हम तो कायल हो गए हैं आपके, अरे भई शर्माजी! सबसे ज़्यादा पानी तो आप ही बरबाद करते हैं पूरी कॉलोनी में, बारिश के मौसम में भी बगीचे में रोज़ पाइप से सिंचाई हो रही है, सीमा मैडम! ज़रा समझाइए इन्हें भी, आज सारा पानी ये बगीचे में गिराते रहे तो कल इनके पोते-पोतियाँ प्यासे रह जाएँगे।

कक्षा में सीमा मैडम ने विद्यार्थियों को जल-संरक्षण पर प्रोजेक्ट दिया। उनको निर्देश दिया कि वे अपने मुहल्ले में वर्षा-जल-संरक्षण के बारे में लोगों को जागरूक करें।

जल-संरक्षण पर विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए प्राचार्य ने सीमा के प्रयासों की सराहना की। सीमा स्कूल से गुनगुनाते हुए घर आई। घर आकर उसने पानी का मोटर ऑन किया, शॉवर खोला और आँखें बंद कर ठंडे पानी से थकान मिटाने लगी। तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। जल्दी-जल्दी गाउन पहनकर उसने दरवाज़ा खोला, देखा तो सामने पड़ोसन परेशान-सी खड़ी थी।

'मैडम आप अपना मोटर बंद कर दीजिए, मेरे यहाँ पानी बिलकुल नहीं आ रहा है।'

'पानी नहीं आ रहा है तो मैं क्या करूँ? आप अपनी कोई और व्यवस्था कर लीजिए।'

'मैडम आपकी और हमारी पाइपलाइन एक है, जब आप मोटर चलाती हैं तो मेरे यहाँ पानी बंद हो जाता है।'

'ये आपकी प्रॉब्लम है मैं क्या कर सकती हूँ?'

सीधी-सादी पड़ोसन अपना-सा मुँह लेकर वापस चली गई।

स्कूल का आख़िरी कार्यदिवस, कल से दो महीने की छुट्टियाँ हैं। जल-संरक्षण पर जनजागरूकता अभियान चलाने के लिए सीमा को आज ज़िलाधिकारी महोदय के हाथों प्रशस्ति-पत्र मिला है। सीमा ख़ुशी से फूली न समाई। तुरंत मिठाई ख़रीदी, घर आकर अपने पति और बच्चों को मिठाई खिलाकर ख़ुशख़बरी सुनाई। बच्चे छुट्टियों में नानी के घर जाने की ख़ुशी में शोर मचाने लगे। जल्दी-जल्दी सामान पैक होने लगा। सीमा के पतिदेव टैक्सी लेकर आ गए। सीमा और उसका परिवार छुट्टी मनाने चला गया।

ठीक पाँच बजे सीमा के रसोईघर के नल से आवाज़ आई—सूँ सूँ...।

फिर बाथरूम के नल ने भी सिसकारी भरी। सभी नलों से पानी बहने लगा—झर-झर-झर-झर।

नलों का स्वच्छ पानी गंदी नाली में मिलकर बहने लगा और पूरे दो महीने तक बहता रहा।

प्राचार्या केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2,
कृभको, सूरत (गुजरात) 384515

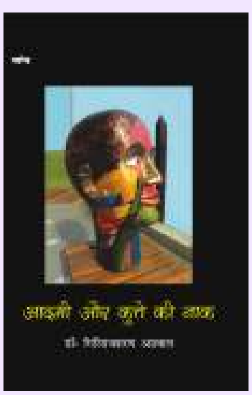

आदमी और कुत्ते की नाक
व्यंग्य-संग्रह
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मूल्य : 150 रुपए
हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

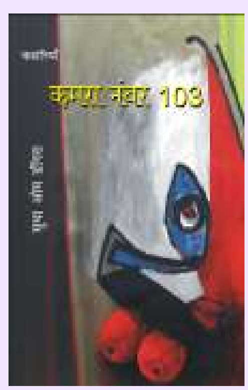

कमरा नं॰ 103
कहानी-संग्रह
डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा
मूल्य : सजिल्द 150 रुपए
हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

डॉ॰ हरीश नवल

गृह-प्रवेश

बाबू रामदीन ने छब्बीस वर्ष तक क्लर्की करते-करते एक छोटा सा फ़्लैट किसी तरह से अपने नाम कर ही लिया। अपने नाम भी क्या, वास्तव में तो उस बैंक के नाम ही अभी हुआ था, जिसने रामदीन को चौदह प्रतिशत ब्याज की दर से फ़्लैट ख़रीदने का पैसा दिया था।

बाबू रामदीन और उसका परिवार अभी वर्षों से एक कोठरीनुमा कमरे में रहने की विवशता को तोड़कर फ़्लैट में तब तक नहीं रह सकता था; जब तक कि आगामी नौ वर्ष तक वे उसे किराए पर चढ़ाकर ऋण चुकता न कर दें।

फिर भी गृह-प्रवेश का एक छोटा-सा उत्सव तो रामदीन और उनकी पत्नी करवाना ही चाहते थे। पचास-व्यक्तियों को निमंत्रित करने के विचार को छोटा करते-करते वे केवल दस तक आ गए, जिनमें उनकी पत्नी और दोनों बच्चे भी सम्मिलित थे। शेष छह में उनके मित्र दीपक मल्होत्रा का परिवार था। दीपक मल्होत्रा शहर में एक प्राइवेट टैक्सी चलाता था। उसका परिवार भी इसीलिए शामिल था ताकि घर से फ़्लैट तक की छब्बीस किलोमीटर की दूरी को शान से और सरलता से तय किया जा सके।

पंडित जी ने बताया था कि तारा तेरह मई को डूब जाएगा, उससे पहले-पहले मुहूर्त करवा लिया जाए तो परिवार ख़ुशियों से भरपूर रहेगा।

सात मई का सख़्त लू भरा दिन, तिस पर पंडित जी ने झुलसती दोपहर के दो बजे का ही मुहूर्त 'गृह-प्रवेश' के लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया था।

पंडित जी तो फ़्लैट के समीपवर्ती मंदिर में ही रहते थे, अतः उन्होंने सिर पर गीला तौलिया और बगल में प्याज की गाँठ दबाकर अपने पर गर्मी का असर नहीं होने दिया। परंतु मल्होत्रा की ठसाठस भरी हुई अंबैसेडर टैक्सी की ठीक से बंद न होने वाली खिड़कियों से आ रहे लू के थपेड़ों से रामदीन का तेरह वर्षीय एकमात्र पुत्र रामेश्वर फ़्लैट पर पहुँचत-पहुँचते भारी सिरदर्द की शिकायत कर गरम फर्श पर ही लेट गया। हवन आरंभ होने पर कुंड से निकल रही ज्वालाएँ मानो उसे अपनी ओर लपकती हुई लगी। विचार भी हुआ कि रामेश्वर को किसी पड़ोसी के घर पंखे या कूलर की हवा में लिटाकर डॉक्टर को बुलवाया जाए। परंतु पंडित जी का कथन और रामदीन की बीवी का आग्रह कि पुत्र के हाथों हवन में अवश्य आहुति देनी चाहिए, उसकी उपस्थिति अनिवार्य है से विचार ठंडा पड़ गया। उधर रामेश्वर की बेचैनी बढ़ने लगी।

दो घंटे के दीर्घ अनुष्ठान के बाद घर की ओर लौटते समय भी गर्मी और लू का प्रकोप कम नहीं हुआ था। रामेश्वर ने चलती टैक्सी में ही कै करना प्रारंभ कर दिया था।

तेरह मई का तारा पता नहीं डूबा कि नहीं डूबा, पर बाबू रामदीन का परिवार अवश्य डूब गया। गृह-प्रवेश के हवन में साक्षात् रामेश्वर की ही आहुति उस दिन दे दी गई।

65 **साक्षर अपार्टमेण्ट्स, ए**-3, **पश्चिम विहार**
नई दिल्ली 110063

प्रपत्र 4 (नियम 8)

1. प्रकाशन का स्थान : बिजनौर
2. प्रकाशन की आवर्तिता : त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : श्री लक्ष्मी आफसैट प्रिंटर्स, ज्योतिष भवन, बिजनौर 246701
4. प्रकाशक का नाम : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)
5. संपादक का नाम : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)
6. उन व्यक्तियों के नाम- पते जो इस अखबार के मालिक या साझेदार हैं या इसकी सारी पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हैं। : हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ.प्र.)

मैं डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल यह घोषित करता हूँ कि उपयुक्त विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

ह॰ डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
प्रकाशक

कृष्णा वर्मा

हैप्पी मदर्स डे

फ़ोन की घंटी बजी देखा तो रमाजी का फ़ोन था, 'नमस्कार रमाजी, कहिए कैसी हैं?'

'मैं ठीक हूँ, तुम सुनाओ निशा सब कुशल-मंगल?'

'जी बिल्कुल।'

'काफ़ी समय हो गया मिले हुए। बात करने को मन हो रहा था इसीलिए फ़ोन कर दिया। कहीं तुम ख़ास काम में व्यस्त तो नहीं थीं?

'नहीं-नहीं, ऐसा कुछ विशेष नहीं कर रही थी। आपने फ़ोन किया, बहुत अच्छा लग रहा है। पहले तो कभी-कभी आप मिल लेती थीं; लेकिन आजकल तो बिलकुल ही घर पर रहने लगीं।

'बस जबसे अनु ने नौकरी के लिए जाना शुरू किया है, मैं गुड़िया के साथ इतना व्यस्त हो गई हूँ कि फ़ुर्सत ही नहीं मिलती। क्यों नहीं तुम ही आ जातीं। आज साथ बैठकर चाय भी पिएँगे और बातचीत भी हो जाएगी।'

'चलिए ठीक है। दोपहर के खाने के बाद आती हूँ।'

करीब चार बजे निशा ने घंटी बजाई। दरवाज़ा खोलते ही रमाजी के मुखमंडल पर खुशी झलक गई। 'आओ-आओ निशा, बहुत अच्छा लग रहा है मिलकर।'

निशा और रमाजी बैठकर बातचीत करती रहीं, बीच में उठकर रमाजी चाय-नाश्ता ले आईं। चाय पीते-पीते बताती रहीं कि गुड़िया के साथ कैसे समय निकल जाता है, दिन का पता ही नहीं चलता।

'आज गुड़िया घर पर नहीं है क्या?'

'घर पर ही है, बस अभी थोड़ी देर पहले ही सोई है। आजकल उसके दाँत आ रहे हैं तो चिड़चिड़ी-सी हो गई है।

निशा ने पूछ ही लिया, 'आज आप भी कुछ उखड़ी-उखड़ी-सी लग रही हैं। सब ठीक तो है? तबियत तो ठीक है न?'

'हाँ सब ठीक है थोड़ा थक गई हूँ, उम्र भी तो हो रही है। इतना काम अब कहाँ हो पाता है। ऊपर से गुड़िया को दिन भर सँभालना। आज तो अनु ने हद ही कर दी। घर का काम यूँ ही फैला छोड़ इतनी जल्दी चली गई कि मेरे उठने का इंतज़ार भी नहीं किया। ऐसा तो पहले कभी हुआ नहीं। इतना भी नहीं कि एक फ़ोन ही कर दे। बस यही सोच मन खिन्न-सा हो गया था। सोचा तुमसे ही बातचीत करके मन हलका कर लूँ। अनु को क्या चिंता, मैं हूँ ना सब काम देखने के लिए।'

बातों का सिलसिला अभी ज़ारी ही था कि दरवाज़े की घंटी बजी और उधर से गुड़िया के रोने की आवाज़ आई।

'काफी देर से सो रही थी शायद उठ गई है, रमाजी आप गुड़िया को देखो, दरवाज़ा मैं खोल देती हूँ।'

निशा ने दरवाज़ा खोला सामने अनु खड़ी थी।

'नमस्ते आंटी, आप कब आईं?'

'बस थोड़ी देर पहले ही।'

इतने में रमाजी गुड़िया को लेकर आ गईं और बोलीं–'अरे अनु, आज इतनी जल्दी घर?'

'मम्मी जी, आज से मैंने सोमवार के व्रत शुरू किए हैं। सुबह जल्दी निकल गई थी कि मंदिर दर्शन करके समय से दफ़्तर पहुँच जाऊँ। आपकी नींद ख़राब न हो सो आपको सुबह उठाना उचित नहीं समझा। मैं नवीन से कह गई थी कि आपको बता दें।'

हाथ में पकड़ा लिफ़ाफ़ा सासू माँ के आगे बढ़ाती हुई बोली, 'हैप्पी मदर्स डे मम्मी जी'! आज शाम आपको खाने के लिए बाहर ले जा सकूँ; इसलिए ही जल्दी आई हूँ।

'मन-ही-मन स्वयं को धिक्कारते हुए रमाजी ने उपहार स्वीकार कर बहू को गले से लगा लिया।

62 Hillhurst Drive, Richmond Hill,
ON L4B 2V3

डॉ॰ मोहम्मद साजिद ख़ान

विमर्श

कुछ स्त्रियों में विमर्श चल रहा था।

एक ने कहा–'हम युगों-युगों से दबाई जाती रही हैं, पर अब नहीं दबेंगी।' दूसरी ने कहा–'हमें घर की चारदीवारी में कैद रखा गया।' तीसरी ने कहा–'तुम घर की जीनत हो' जैसे लुभावने शब्दों के जाल में हमारी संवेदनाओं का शोषण किया जाता रहा।'

चौथी ने कहा–'यही नहीं, साहित्य में भी 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' जैसी मकड़जाली, मनभावन व्याख्या के पीछे भी कहीं-न-कहीं हमारा शोषण निहित था।'

पाँचवीं ने कहा–'हाँ, हमें तो यहाँ तक कहा गया कि 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी'–बताइए, क्या हम केवल 'बेचारी' और 'बच्चा' खिलाने वाली ही बनी रहेंगी?'

इस पर पहली ने कहा–'वह तो छोड़िए, अब पुरुषों ने यह जान लिया कि काम ऐसे नहीं चलेगा तो उन्होंने 'नारी-मुक्ति' का नारा लगाना शुरू कर दिया और फिर पूरे 'तंत्र' में हमारी स्वाधीनता को अपने ढंग से 'कैश' कराने लगे।' उसने सामने के पोस्टर की ओर इशारा करते हुए कहा।

पहली की तर्कबुद्धि से पाँचवीं अभिभूत हो उठी। उसने पोस्टर को देखते हुए कहा–'आप सच कह रही हैं दीदी, शोषण का तंत्र तो यहाँ तक हावी है कि आज जबकि, स्त्रियाँ अपने अधिकार एवं अस्मिता के प्रति सचेत हो चुकी हैं, तब भी पुरुष उन्हें खुलेआम बेच रहा है। अब आप ही बताइए, शेविंग-ब्लेड का ऐड होता है और फ़ोटो हमारी, परफ़्यूम पुरुषों का और आकर्षक देह हमारी, आख़िर क्यों?' उसने कई उदाहरण दे डाले।

डॉ॰ प्रकाश, जो पाँचवीं स्त्री के पति थे, उनकी बहस को सुन अचानक बोल उठे–'माफ़ कीजिएगा, मैं एक क्षण के लिए आप लोगों की बातें काट रहा हूँ। आप लोगों की बातें सुनकर यह निष्कर्ष निकल रहा है कि आज नारी के बिना पुरुष का किसी भी स्तर पर 'सरवाइव' कर पाना संभव ही नहीं है। हर स्तर पर पुरुष को उसका सहारा लेना पड़ रहा है। विज्ञापनों आदि में उसकी धमक यह सिद्ध करती है कि स्त्री 'डॉमिनेट' कर रही है।' उन्होंने सहजता से समझाने के लहजे में कहा–'भई, आप ग़लत सोचती हैं। आज के समय में तो आप सभी 'लीड' कर रही हैं!'

फिर डॉ॰ प्रकाश ने उबासी लेते हुए कहा–'अरे रेखा, जरा चाय तो पिला दो। यार, तुम्हारी चाय का तो जवाब ही नहीं।'

रेखा खुशी-खुशी पति के लिए चाय बनाने चली गई। विमर्श अब शांत था। स्त्रियाँ अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही थीं।

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
जी॰ एफ॰ (पीजी) कॉलेज
शाहजहाँपुर (उ॰प्र॰)

शोध
दिशा
के
आजीवन सदस्य बनिए
और पाइए हिंदी साहित्य निकेतन से
प्रकाशित पुस्तकें आधे मूल्य में।

शोध-दिशा के पाठकों के लिए एक विशेष योजना

शोध-दिशा का आजीवन सदस्यता-शुल्क 1500 रुपए है।

हिंदी साहित्य निकेतन की पुस्तकों की सूची पत्रिका के अंत में प्रकाशित की गई है।

कृपया पत्रिका के लिए अपना बैंक ड्राफ़्ट **'शोध-दिशा'** के नाम प्रेषित करें।

पुस्तकों के लिए अपना बैंक ड्राफ़्ट **'हिंदी साहित्य निकेतन'** के नाम से भेजें।

हिन्दी साहित्य निकेतन
16 **साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)**
फ़ोन : 01342-263232, 09368141411

इंदिरा दांगी

जब तक कविता बाक़ी है

हद से ज़्यादा तकलीफ़देह हवा है-जलती, चुभती, उमस से दम घोंटती।

जून के बे-बरसे दिन हैं। ठेले पर जूते-चप्पल बेचने वाला अपने दस साला नौकर अशोक के साथ चौड़ी-तपती सड़कों पर फेरी लगा रहा है। आवाज़ें लगाने और ठेले को ढोने का काम नौकर बच्चे का है–इसके आने से बिक्री बढ़ी है। ग्राहक छोटे बच्चे पर दया कर कम-से-कम देखते तो हैं, कभी कुछ ख़रीद भी लेते हैं।

'जूते ही जूते, मुफ़्त के भाव जूते! चप्पल ही चप्पल, मुफ़्त के भाव चप्पल!'

अशोक को बड़ी ज़ोर की भूख लग रही है, पेट दर्द की हद तक की भूख! हर दिन सवेरे अम्मा दिहाड़ी पर निकलने से पहले कितनी मनुहार करती हैं, 'लल्ला, और एक गक्कड़ डाल ले पेट में! दिन-भर काम में जुतना है मौड़ा!'

अम्मा की आवाज़ में बापू के लिए एक अव्यक्त घृणा होती है, 'हम भी मज़दूरी करें, हमारा तनिक-सा बच्चा भी!'

बापू पश्चात्तापी अपराधी की तरह उसके सिर पर हाथ फेरते हैं, 'बस, इस बरस और! अगली साल तक इतने पैसे जुड़ जाएँगे कि हमें अपना घर-गाँव छोड़ मज़दूरी को इस देश नहीं आना पड़ेगा, फिर लल्ला का स्कूल में दाख़िला कराएँगे, बाबू साहेब बनकर स्कूल जाना, गिटिर-पिटिर अँग्रेज़ी बोलना, दूध-बिस्कुट खाना!'

बापू कविता करने लगते हैं, पर दूध-बिस्कुट पिछले तीन सालों से सिर्फ़ कविताओं में ही है!

अब आसमान से धीरे-धीरे धूप ग़ायब हो चली थी, काले बादल कहीं से दौड़े चले आ रहे हैं। हाँफते अशोक को अपने गाँव के धूल भरे दौड़-खेल याद आ रहे हैं।

मालिक ने कोंचा, वो फिर आवाज़ें देने लगा, 'जूते ही जूते, मुफ़्त के भाव जूते! चप्पल ही चप्पल, मुफ़्त के भाव चप्पल!'

अचानक ज़ोर-ज़ोर से बारिश होने लगी। मालिक-नौकर तेज़ी से यहाँ-वहाँ सिर छुपाने की जगह तलाश करते हुए अंततः एक घने पेड़ के तले आ गए। पान-गुमटी के छप्पर तले आता ठेला-मालिक बोला, 'एक पान लगा दियो, जाफरानी डाल के।'

इधर पान लग रहा है, उधर ठेले के पास खड़ा नौकर लड़का सोच रहा है, अगर डिब्बा खोलकर एक गक्कड़ खा लूँ तो बेपूछे खाऊँगा तो गक्कड़ के कौरों के बराबर थप्पड़ भी तय रहे। मालिक से पूछे तो पूछे कैसे! अभी तो एक ही जोड़ी चप्पल बिकी है, जब तक चार-छह नग न बिक जाएँ, मालिक मुस्कुराता नहीं है। पान लेकर ठेला-मालिक ने जब मूल्य चुकता करने के लिए नोट दिया तो दुकानदार ने फेर दिया (नोट फटा था)।

'उस बिल्डिंग वाली ने चप्पलें ख़रीदी थीं अभी, उसी का दिया नोट है! अशोक, तू दौड़कर जा और ये नोट बदल ला उससे।'

अशोक दौड़ गया मूसलाधार बारिश में। उसकी फटी शर्ट, हाफ पैंट और घिसी चप्पलें छप-छपकर हिलोरें-सी लेती हैं। गाँव की बारिश याद आती है (पानी के मटमैले, मिट्टी घुले गड्ढों-तलैयों में छप-छप-छपाक! उसका वश चले तो ये दौड़ गाँव तक पहुँचकर पूरी करे, पर अम्मा कहती हैं, वहाँ खाएँगे क्या? सब योजनाओं का

हर अंग में इक दीप-सा जलते देखा
मुद्राओं को शब्दों में बदलते देखा
अँगड़ाई में वो गीत-सी गाती बाहें
संगीत को आकार में ढलते देखा

मत पूछ वो जीवन में सफल कितना है
उस शख़्स के बरताव में छल कितना है
ढल जाता है, बर्तन के मुताबिक जल-सा
वो ठोस है, इस पर भी तरल कितना है
–डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

पैसा सरपंच-सचिव खा जाते हैं! हम शहर से ही इत्ता रुपया जोड़कर चलेंगे एक दिन।

पर वह दिन जैसे कभी नहीं आएगा, दस साल के अशोक का दिल डरता है। अम्मा कहती हैं, बाज़ार में पच्चीस रुपये किलो आटा है, सौ रुपया लीटर तेल, बीस रुपये किलो आलू। राशन की दुकान पर सब कूड़ा मिलता है, बीमार कर देने वाला राशन। बाज़ार से ख़रीदकर खाएँ तो बचाएँ क्या और कब तक? अम्मा की बातें सुनकर उसका दिल बापू की उम्मीद-कविता दोहराता है।

बाबू साहेब बनकर स्कूल जाना, गिटिर पिटिर अँग्रेज़ी बोलना, दूध-बिस्कुट खाना! अशोक उस बिल्डिंग तक आ पहुँचा। मेमसाहब चार-छह आवाज़ों में बाहर आ भी गईं।

'क्या कहा तूने? शर्म नहीं आती, मुझ पर इल्ज़ाम लगाता है! मैंने बिल्कुल सही नोट दिया था। चल भाग यहाँ से! आ गया अपना फटा नोट मेरे मत्थे मढ़ने!'

बड़बड़ाती अमीर औरत ने बड़ी जल्दी दरवाज़ा बंद कर लिया। वह कुछ देर बारिश में नहाता किंकत्तर्व्यमूढ़ खड़ा रहा, फिर थका-थका-सा भागता लौट आया।

मालिक उसकी सूरत देखते ही सब जान गया, तड़ाक! थप्पड़ इतना झन्नाटेदार था कि नौकर बच्चा गिरते-गिरते बचा, 'नहीं बदला न उसने नोट! क्यों वे, जब वो मुझे नोट दे रही थी, तब क्या तेरी आँखें फूट गई थीं! मैंने तुझे इन मक्कारियों के लिए नहीं रखा है! तेरी पगार में से काटूँगा ये पचास रुपये!'

निरीह-नर्म गाल पर हिंसा की सुर्खी उतर आई, आसमान का बरसना एकाएक बंद हो गया। अभी उसे अपने आँसू रोकने हैं, अपमान पी जाना है। ओ नन्हे नीलकंठ!

'जूते ही जूते, मुफ़्त के भाव जूते! चप्पल ही चप्पल, मुफ़्त के भाव चप्पल!'

ठेलेवाले अपने मालिक के साथ नौकर बच्चा फिर सड़क पर है। झोंके-सी आकर बीत गई बरसात के पीछे से, पैनी उमस-धूप चारों ओर फैल गई है।

अशोक का दिल बापू की उम्मीद-कविता दोहरा रहा है, बाबू साहेब बनकर स्कूल जाना, गिटिर पिटिर अँग्रेज़ी बोलना, दूध-बिस्कुट खाना!

हद से ज्यादा तकलीफ़देह हवा है!

खेड़ापति हनुमान मंदिर के पास
लाऊखेड़ी, एयरपोर्ट रोड
भोपाल (म॰प्र॰) 462030

डॉ॰ ध्रुवकुमार

मोल-भाव

'बच्चे का मुंडन-संस्कार करा रहे हैं, कोई सत्यनारायण भगवान की कथा है, जो दो सौ रुपये में काम चलाना चाहते है। 1001 रुपये से एक धेला कम नहीं लूँगा।'

नगर के अति प्राचीन देवी मंदिर में पुजारी की ज़िद के आगे फुटपाथ पर सब्ज़ी बेचकर अपना और अपने परिजनों का पेट भरने वाला रामदीन रुआँसा होकर गिड़गिड़ाने लगा, 'झूठ नहीं बोल रहे हैं पंडित जी। इससे अधिक हमारी हैसियत नहीं है। 201 रुपये स्वीकार कीजिए और बच्चे को आशीर्वाद दीजिए।

ये 201 रुपये भी रखो और जाओ बच्चे का केश मुड़वा लो, किसने रोका है। पुजारी जी अब झुँझला उठे थे। स्थिति बिगड़ती देख रामदीन ने पंडितजी के पाँव पकड़ लिए। मंदिर के गर्भगृह में देवी माँ के दर्शन के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा में कतारबद्ध भक्तों की निगाहें पुजारी पर टिकी थीं। एकाएक पुजारी ने आदेशात्मक लहजे में कहा—'ठीक है, 50 रुपये और निकलो।' रामदीन के इशारे पर उसकी पत्नी ने साड़ी के पल्लू में बाँध कर रखे दस रुपये के पाँच तुड़े-मुड़े नोट पुजारी की ओर बढ़ा दिए। देवी माँ की मूर्ति के सामने पड़ी थाल के जल को गेंदे के फूल से लेकर बच्चे के सिर पर तीन बार छिड़कते हुए पुजारी बोले—'जाओ अब मुंडन कराओ। माँ सबका कल्याण करेगी।'

10 रुपये किलो खरीदकर 12-13 रुपये के भाव से सब्ज़ी बेचने वाला रामदीन मंदिर की सीढ़ियाँ उतरता हुआ अपना और पुजारी के नफ़े-नुकसान की उलझन से निकलने की कोशिश कर रहा था।

पी॰डी॰ लेन, महेंद्रू, पटना 800006

सुनील सक्सेना

आठ सिक्के

ठंड लगभग जा चुकी थी। गंगा-किनारे के जो घाट ठंड में सूने पड़े रहते थे, ठंड का असर कम होते ही फिर आबाद होने लगे थे। घाटों पर चहल-पहल बढ़ने लगी थी। पिछली रात ओले क्या पड़े। ठंड पलटकर आ गई। सर्द हवाओं ने एक बार फिर गंगा के किनारों को निर्जन बना दिया था। किनारों पर वही इक्का-दुक्का नज़र आते, जो बरसों से बिना नागा किए गंगा मैया के तट पर आते रहे हैं।

कड़ाके की ऐसी ठंड में शिव मंदिर के पास यही कोई सात-आठ बरस का लड़का अधनंगा बैठा था। हड्डियों को गला देनेवाली ठंड में कपड़े के नाम पर उसके तन पर सिर्फ़ अधोवस्त्र था। गंगा-दर्शन को आए लोग घाट पर खड़े होकर नदी में सिक्का फेंकते और वह लड़का छपाक से नदी में कूद जाता और कुछ ही पलों में अपनी मुट्ठी में सिक्का दबाए ऊपर आ जाता। वह बहते हुए पानी में गोता लगाकर सिक्का ढूँढ लाता। लोग हतप्रभ होकर उसे देखते। उसके इस अनोखे करतब पर वे तालियाँ तो नहीं बजाते, अलबत्ता वही सिक्का उसके हाथ में थमाकर आगे बढ़ जाते। वह रोज़ इसी तरह गंगा मैया के पेट से सिक्के निकालकर अपने पेट का इंतज़ाम करता।

दोपहर का वक़्त था। सूरज अपनी प्रकृति के हिसाब से चरम पर था, लेकिन ठंड के तीखे तेवरों के आगे आज वो भी नतमस्तक था। शिव मंदिर की सीढ़ियाँ उतरती हुई महिला के सामने उस लड़के ने हाथ फैलाया। महिला उसे नज़रअंदाज़ कर आगे बढ़ने लगी तो साथ चल रहे पति ने उसे रोका। अपनी जेब से एक सिक्का निकाला और नदी में फेंक दिया। लड़का फुर्ती से मंदिर के चबूतरे पर चढ़ा और कुल्फी जमा देने वाली ठंड में कल-कल बहती गंगा नदी में कूद पड़ा। छपाक की आवाज़ के साथ लहरें गोल होने लगीं। लड़का कुछ ही पलों में उन वलयाकार लहरों को चीरता हुआ मुट्ठी में सिक्का दबाए हाज़िर था। 'ओह नो' महिला ने विस्फारित आँखों से उस लड़के को देखते हुए कहा। अपने बेटे के सिर से सरक आए स्कार्फ को उसने व्यवस्थित किया और कसकर गठान लगा दी, ताकि कानों में ठंडी हवा न जा सके।

'मैंने तो एक ही सिक्का फेंका था। तुम चाहो तो एक साथ कई सिक्के फेंक सकती हो। ये लड़का उन्हें भी निकाल लाएगा। यू केन ट्राय।' पति ने कहा। महिला ने पर्स से मुट्ठी भर कलदार निकाले। गिने तो कुल आठ सिक्के थे। महिला ने हाथ को हवा में उछाला और पूरी ताक़त से सिक्के नदी में फेंक दिए। लड़का चीते-सी तेज़ी के साथ शिव मंदिर के चबूतरे पर चढ़ा और नदी में कूद गया। इस बार नदी में लहरें एक जगह नहीं कई जगह गोल हो गई थीं। नदी का वो हिस्सा जिस जगह पर लड़का कूदा था, वहाँ पानी की हलचल कम हो गई थी। महिला ने पति की ओर देखा और चलने लगी।

'रुको वो आता ही होगा। इस बार सिक्के ज़्यादा हैं।' पति ने कहा।

'वो नहीं आएगा। चालाक है वो। अब तक तो चुपचाप अंदर-ही-अंदर तैरकर किसी दूसरे किनारे पर चला गया होगा। आज की कमाई हो गई उसकी।' महिला ने बेटे की लेदर जैकेट की चैन को गले तक कसकर लॉक कर दिया। अब सर्द हवाओं को कहीं से भी घुसने की गुंजाइश नहीं थी। साथ ही बेटे को हिदायत भी दी– 'डोंट प्ले विथ चेन। बीमार हो जाओगे। अब चलो बहुत ठंड है।'

'रुक जाइए मेम साब, देख तो लीजिए–पूरे आठ सिक्के ढूँढकर लाया हूँ।' लड़के के होंठ ठंड से नीले पड़ गए थे।

301 **सागर रेसीडेंस, ई**-6/93,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म॰प्र॰) 462016

मनीषकुमार सिंह

शरीफों का मुहल्ला

जाड़े की धूप में बैठकर गप्पें हाँकी जा रही थीं। चाय व समोसे के सहारे वे बातें कर रहे थे। 'भई श्रीवास्तव इधर आना जरा।' एक आवाज़ गूँजी।

'नहीं यार, हम यहीं ठीक हैं,' श्रीवास्तव चाय के आख़िरी घूँट को गले तले उतारते हुए बोला, 'फार फ्रॉम दी मैडिंग क्राउड।'

लोगों को याद आया कि वह अँग्रेज़ी में एम॰ए॰ भी है, पर फिलहाल क्लर्की कर रहा था।

बात यह थी कि श्रीवास्तव गुप्ता के साथ झुंड से कुछ फ़ासले पर बैठा था। यह फ़ासला उसने जानबूझ कर चुना था। वह गुप्ता को कुछ ऐसी बातें सुनाना चाहता था, जिसके योग्य वह झुंड को नहीं समझता था।

'तो तुम बिल्कुल श्योर हो?' गुप्ता ने पूछा 'हाँ यार, हंड्रेड परसेंट श्योर।' अब क्या काग़ज़ पर लिखकर दूँ। कमबख़्त ये लोग जबसे मुहल्ले में आए हैं, यहाँ की हवा ही ख़राब हो गई है।'

'पर कुछ भी कहो, लड़की है मज़ेदार।' गुप्ता ने चुटकी ली। इस पर श्रीवास्तव गला फाड़कर हँसा। गुप्ता का घर उस लड़की के बिल्कुल बगल में था, परंतु वह इस बात पर पछता रहा था कि श्रीवास्तव का ज्ञान उससे ज़्यादा है। वह भी क्या करे। घर-गृहस्थी से फ़ुर्सत मिले, तब तो इधर-उधर ताक-झाँक करे। वैसे भी उस घर के लोगों से मुहल्ले की महिलाएँ भी अप्रसन्न रहती थीं। मुहल्ले की पंचायत एवं परनिंदा में कभी भी माँ-बेटी ने रुचि नहीं ली थी। अचार बनाने की विधि या स्वेटर के नमूने पर चर्चा तो दूर की बात थी और तो और एक बार श्रीवास्तव की स्त्री को साफ़ कह दिया कि वह दूसरों की निंदा उससे न करे। इस अशिष्टता पर कौन अप्रसन्न न होगा।

तार पर गीले कपड़े फैलाने के लिए लड़की बाहर निकली। दो-चार जोड़ी उत्सुक निगाहों की उपेक्षा करके वह वापस अंदर चली गई।

'देखा न उसे।' निगाहों ने आपस में बातें कीं। 'हाँ यार। सच कहते थे..क्या ख़ूब है।'

श्रीवास्तव को कुछ काम था। वह मंडली से उठकर सीधे घर चला गया। पत्नी के बाज़ार जाने के निर्देशों की उपेक्षा करते हुए वह ऑफ़िस की फ़ाइलों में डूब गया। दफ़्तर से वह फ़ाइलें यहाँ भी ले आया था। यह प्रमोशन जो भी कराए, वह कम है। तभी आहट से उसकी तंद्रा भंग हुई। पड़ोसी का लड़का था। बिन माँ का बेटा। बाप के भरोसे था।

'अंकल सातवीं क्लास की किताबें आपके पास हैं?' बारह-तेरह साल का बालक पूछ रहा था।

'नहीं यार', श्रीवास्तव झुँझला उठा, 'तुम भी क्या।' वह गुस्से में कुछ और भी कहने जा रहा था, लेकिन फिर रुक गया। काम के वक़्त कोई डिस्टर्ब करे, तो किसे अच्छा लगेगा।

पड़ोसी अग्रवाल की स्त्री दो साल पहले मर चुकी थी। वह उसे बेहद चाहता था। तबसे अपने बेटे की ज़िम्मेवारी वह अकेले उठा रहा था। वैसे उसने एक आया रखी थी, जिस पर मुहल्ले में तरह-तरह की चर्चा व्याप्त थी। भला इतने बड़े बच्चों को सँभालने के लिए आया का क्या काम? यह तो उसकी अपनी आवश्यकताएँ होंगी। वह लोगों से बहुत कम मिलता-जुलता था, पर सामने पड़ने पर नमस्कार ज़रूर करता था। उसका लड़का सारे मुहल्ले का चक्कर काटता रहता था। बेचारा बिन माँ का बच्चा। सब उसे तरस भरी दृष्टि से देखते, पर मौक़ा पाकर उसके घर के अंदर क्या हो रहा है, इसकी जानकारी ज़रूर लेना चाहते।

पता चला कि वह लड़का दो-तीन और घरों में किताबों की ख़ातिर घूमा, पर विफलता मिली। क्या उसका बाप उसके लिए किताबें नहीं ख़रीद सकता? क्या पता वह आर्थिक कठिनाइयों में हो। ख़ैर वह जाने। इन सब पराई बातों में कौन सर खपाता है, वह भी तब जबकि एक मसालेदार विषय सामने हो।

मालूम हुआ कि लड़की कॉलेज में पढ़ाती भी है। क्या पढ़ाती होगी भला। युवकों ने एक स्वर से वोट दिया। वह पढ़ाने के लिए थोड़े न है। वह तो देखने के लिए है।

'सुना तुम लोगों ने! एक महत्त्वपूर्ण सूचना आई।' क्या! उत्सुक निगाहों ने पूछा। 'वह लड़की ख़ुद गई थी अग्रवाल के घर किताब पहँचाने।' ऐसी बेहयाई! शरीफ़ों का मुहल्ला ही नहीं रहा। कह रही थी कि किसी बच्चे को किताबों की ज़रूरत है तो पड़ोस में बेकार पड़े रहने से क्या फ़ायदा, सातवीं क्लास की क़िताबें।

'तो इस बच्चों के बहाने अब-सब कुछ होगा।' एक वृद्ध ने आसमान की ओर हाथ उठाकर कहा। बाक़ी लोग शर्म और लज्जा से अपना सर झुका लेते हैं।

एफ-2, 4/273, **वैशाली,**
गाज़ियाबाद (उ॰ प्र॰) 20101

पुष्पा जमुआर

रज़ाई

'आज कड़ाके की ठंड है।'

'हाँ! इस वर्ष, और वर्षों से ज़्यादा ठंड पड़ रही है।'

'प्रताप अभी नहीं आया क्या? आठ बज गए हैं।'

'आप तो जानते ही हैं कि प्रेस का काम है, उसमें देर तो हो ही जाती है।

'हाँ! सो तो है।'

'फिर भी वह कब तक आएगा?'

'बार-बार एक ही बात', पत्नी खीझ उठी।

मगर प्रताप के पिता पत्नी की बात अनसुनी करके, प्रताप के बिस्तर पर उसकी रजाई में जाकर लेट गए। यह देखकर पत्नी बोली, 'आप रोज़-रोज़ क्यों उसकी रज़ाई ओढ़कर लेट जाते हैं? प्रताप को बुरा लगता है।

राधारमण बाबू पत्नी की बात अनसुनी कर गए।

कुछ देर में घंटी बजी। यह प्रताप था। उनींदी-सी उसकी माँ उठी और बुदबुदायी, 'ओह! प्रताप आ गया।' उसने किवाड़ खोल दिए।

'बहुत ठंड है माँ....शीत लहर चल रही है। ओफ्फ! 'कहने के साथ कमरे में जाकर कपड़े बदलने लगा।

रोज़ की तरह पिता को अपने बिछावन पर सोते देख उसका मूड ख़राब हो गया। जाकर माँ से बोला, 'रोज़-रोज़ बाबूजी मेरे बिस्तर पर क्यों सो जाते हैं? थका-हारा ठंड में ठिठुरता दफ़्तर से आता हूँ और यहाँ बाबूजी, उन्हें समझाती क्यों नहीं?'

झुँझलाई-सी माँ पति के पास गई,' उठिए! प्रताप आया है।'

'आ गया!' उठते हुए राधारमण बाबू बोले।

'प्रताप बेटे! खाना लगा दिया है।' रज़ाई में घुसते हुए माँ बोली।

'आता हूँ, माँ।'

पुनः कमरे में आते हुए पति से बोली, 'रोज़-रोज़ उसके बिस्तर में उसकी रजाई ओढ़कर सो जाते हैं, प्रताप को बुरा लगता है।'

'तुम नहीं समझोगी प्रताप की माँ। इस कड़ाके की ठंड में प्रताप रोज़ रात देर से लौटता है, ऐसे में उसे ठंडे बिस्तर में ठंढी रज़ाई में लेटना पड़े, मैं सोकर उसे गर्म कर देता हूँ, ताकि बिस्तर में उसके अच्छी और जल्दी नींद आ जाय।'

खाना खाते प्रताप के कानों में बाबूजी के शब्द जैसे-जैसे पड़ते जा रहे थे। वह ग्लानि के सागर में डूबता जा रहा था। बाबूजी के वाक्य का अंत होते-होते वह सुबक पड़ा। उससे अगला कौर खाया नहीं गया।

काशी निकेतन, रामसहाय लेन
महेंद्रू, पटना 8000006

जानवर

उपेंद्रप्रसाद राय

सूनी गली में आठ-दस हथियारबंद दंगाइयों ने उसे घेर लिया–

'बता, तू हिंदू है?'

'नाहीं तो।'

'मुसलमान?'

'नाहीं।'

'तो फिर ईसाई होगा!'

'नाहीं, नाहीं।'

'सरदार है क्या?'

'नाहीं बाबू।'

'तो तू है क्या?'

'हमका नाहीं मालूम।'

'तुझे मालूम ही नहीं कि तू क्या है?'

'ऐ बाबू लोग, हम तो रेलगाड़ी पर पैदा हुआ। टीसन पर भीख माँगकर खाया। हम को तो कोई अब तलक बतैबे नाहीं किया कि हम हैं का? और कोई ज़रूरत तो नाहीं था उसका, सो...'

सब हँसने लगे।

दंगाइयों का लीडर बोला, 'इसका क्या मारना, यार यह तो आदमी ही नहीं है। जिसका कोई मज़हब नहीं, वह तो जानवर है जानवर। ...लगा साले को चूतर पर और भगा यहाँ से।'

और एक ज़ोरदार लात खाकर वह सरपट भाग खड़ा हुआ।

प्रतिभा निवास, पुराना ई०एम०को० कैंपस संदलपुर
महेंद्रू, पटना 800006

नीलिमा टिक्कू

नासमझ

नन्ही पिंकी आज बहुत खुश थी। जिन गंदी ग़रीब लड़कियों के साथ उसे खेलने की इज़ाजत नहीं थी, आज उन्हें ही बंगले में बुलाया गया था। वह भी दादी माँ के आदेश पर। आज दुर्गाष्टमी जो थी। दादी माँ ने अपने हाथों से उन सभी के ललाट पर रोली का टीका लगाया। उनके हाथों में मौली का धागा बाँधकर उनका पूजन किया फिर उन सभी के आगे बड़े-बड़े थाल भरकर खीर-पूड़ी, हलवा व चने का शाक परोसा।

इस पर माँ ने हल्का-सा विरोध किया था, 'माँ जी, इतनी छोटी बच्चियाँ इतना ज़्यादा खाना नहीं खा पाएँगी।'

दादी भड़क उठी थीं, 'ये कैसी ओछी बात कर दी बहू तुमने। देवी के के शाप से डरो। ये कन्याएँ देवी का ही रूप हैं।'

माँ ने फौरन चुप्पी साध ली थी।

शरमाती-सकुचाती, सहमी हुई बच्चियों ने आधे से ज़्यादा खाना झूठा छोड़ दिया था। दानी ने उन ग़रीब बच्चियों के हाथ में दस-दस रुपए के करारे नोट पकड़ाए।

उनके जाने के बाद दादी के कहने पर नौकर रामू ने उनकी थालियों की जूठन चार प्लास्टिक की थैलियों में भरकर दरवाज़े पर रख दी। ये सब देख पिंकी पूछ बैठी।

'दादी जूठे खाने को रामू ने थैलियों में डालकर क्यों रखा है?'

दादी ने समझाया, 'आज दुर्गाष्टमी है न। जमादारिन खाना माँगने आती ही होगी। उसे देने के लिए ही रखा है।'

पिंकी किंचित् हैरानी से बोली, 'दादी, ये तो जूठा खाना है। आप तो कहती हो कि किसी दूसरे का जूठा खाना नहीं खाना चाहिए। बहुत सी बीमारियाँ लग जाती हैं और पाप भी लगता है?'

दादी मुस्कराई, 'अरे बिट्टो, आज के दिन कन्याओं का ये जूठन, देवी का प्रसाद होता है, इसे खाकर तो जमादारिन की सभी बीमारियाँ ठीक हो जाएँगी, साथ ही उसके कई जन्मों के पाप भी धुल जाएँगे।'

दोपहर को जमादारिन की रोटी माँगने की आवाज़ सुनकर रामू खाने की थैलियाँ लेने अंदर आया, किंतु कमरे का दृश्य देखकर स्तब्ध रह गया। पिंकी थैलियों में रखी जूठन निकालकर अपनी खाने की थाली में डाल रही थी। तभी दादी माँ भी जमादारिन को पैसे देने उधर आ पहुँचीं।

'पिंकी ये क्या गजब कर रही है?'

दादी माँ की दहाड़ सुनकर सहमी पिंकी धीरे से बोली, 'दादी थोड़ा-सा देवी का प्रसाद ले रही थी। इसके खाने से मेरे टांसिल भी हमेशा-हमेशा के लिए ठीक हो जाएँगे।'

दादी भड़क उठी, 'बेवकूफ़ लड़की! ये खाना तेरे लिए ज़हर है। ना जाने कितनी बीमारियाँ समेटे गंदे, ग़रीब व छोटी जात की लड़कियों की जूठन है ये। मूर्खा, दुनिया भर के पाप अपने सिर पर लगाना चाहती है?'

पिंकी हैरान थी, 'पर दादी आपने ही तो कहा था कि ये देवी माँ का प्रसाद है। इसके खाने से जमादारिन की सभी बीमारियाँ ठीक हो जाएँगी तो फिर मेरे टांसिल। दादी आग बबूला हो उसी बात काटती हुई चिल्लाईं, 'चुप कर, बित्ते-भर की छोकरी होकर मुझसे बहस करती है। आज तक तेरी माँ की हिम्मत नहीं हुई, मुझसे इस तरह के सवाल-जवाब करने की।'

नन्ही पिंकी सहमकर चुप हो गई, लेकिन अब भी उसकी समझ में ये नहीं आ रहा था कि जूठा खाना जमादारिन के लिए देवी का प्रसाद है, वह उसके लिए ज़हर कैसे हो सकता है?

ई-311-312 **लालकोठी योजना**
जयपुर (राज॰) 302015

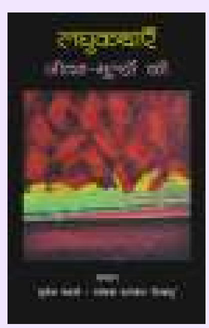

लघुकथाएँ
जीवनमूल्यों की

संपादक
सुकेश साहनी
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

मूल्य : सजिल्द 150 रुपए

हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

सुभाषचंद्र लखेड़ा

बहुत बड़ा आदमी

वह उस इलाके का एक बहुत बड़ा आदमी था। फलस्वरूप, उस इलाके में होने वाले किसी भी सरकारी अथवा गैरसरकारी समारोह में आशीर्वचन देने के लिए सर्वप्रथम उसे आमंत्रित किया जाता था। जब वह इंकार करता था, तभी आयोजक किसी दूसरे नाम पर विचार करते थे। ख़ैर, इलाका बहुत बड़ा था और प्रदेश सरकार बहुत वर्षों से वहाँ एक नया पुलिस थाना बनाने की सोच रही थी। आख़िर, पिछले दिनों वह थाना बनकर तैयार हुआ। इलाके के एसएसपी चाहते थे कि उस थाने का उद्घाटन भी उस बड़े आदमी से ही कराया जाए। आख़िर, उसका रसूख प्रदेश के सभी नेताओं से था तो उससे बेहतर अतिथि भला दूसरा कौन हो सकता था? बहरहाल, नियति को यह मंजूर न था। जिस दिन 11 बजे सुबह उस थाने को तथाकथित बहुत बड़ा आदमी अपने चरण धूलि से आवृत्त करने वाला था, उसी दिन सुबह 8 बजे आयकर विभाग के निर्देश पर उस इलाके की पुलिस को उस बहुत बड़े आदमी के बंगले पर छापा मारने के लिए जाना पड़ा।

अब उस इलाके के एसएसपी फ़ोन पर थाने के उद्घाटन हेतु किसी दूसरे 'बहुत बड़े आदमी' से बात कर रहे थे।

खटमल

चालीस वर्ष पहले हम दोनों दिल्ली में आजू-बाजू में किराये पर रहते थे। उसे पैसे वालों से सख्त नफ़रत थी। उसका मानना था कि दूसरों का शोषण किए बिना कोई धनवान् नहीं हो सकता है। यदा-कदा वह गुस्से में कहता था, 'ये सब साले खटमलों की औलाद हैं। ग़रीबों खून चूसकर पैसा बनाते हैं।'

खैर, फिर हम बिछुड़ गए। मैं मुंबई चला गया। चालीस वर्ष बाद दिल्ली में एक विवाह-समारोह में मुलाक़ात हुई तो बातों-ही-बातों में उसने बताया कि उसके पास तीन फ़्लैट और चार प्लॉट हैं; घर में तीन कारें हैं और ग्रामीण सेवा रूट पर उसकी 10 गाड़ियाँ हैं।

मैं उसकी तरक्की से खुश तो था पर न जाने क्यों मुझे उसके शरीर से खटमल की बू आने लगी थी!!

सी-180, **सिद्धार्थ कुंज, सेक्टर**-7, **प्लाट नंबर**-17
नई दिल्ली-110075

शोभा रस्तोगी

है ऐसा बिस्तर?

'ऐसा बिस्तर दिखाइए कि लेटते ही नींद आ जाए।'

'अजी साहब! लेटते ही क्या, देखते ही नींद पकड़ लेगी आपको।' लगा दुकानदार दनादन बिस्तरों की वैरायटी दिखाने। गुज़राती, राजस्थानी, मधुबनी कलाकृतियों से सजी कलात्मक चादरें, इटैलियन क्राफ़्ट झलकाते गद्दे-तकिये, पुष्प-पँखुरी से रेशमी, सूती, मिक्स्ड नाना टेक्सचर से पटे बैडकवर। बाज़ार खोल दिया था।

उसे कहीं भी नींद का पता न मिला। कुछ खोया हुआ पाने की तलाश में उसकी नज़र शोरूम की सीढ़ियाँ उतर गईं। पास ही भवन-निर्माण चल रहा था। लेंटर मसाला उगलने वाली मशीन का कानफोड़ू शोर, तसला भर तसला पकड़ाते मजदूर, हवा को धकियाता सीमेंट-रेती का गुबार। वहीं कोने में सोता एक बच्चा—बेखबर, बेखौफ़ फ़रिश्ता। नंगी, गंदी, धूल-धूसरित जमीं पर अधनंगा। उसके समीप जूठे पत्ते पड़े थे। एक कुत्ता उन्हें चाटते हुए लगातार साफ़ कर रहा था। उसके उलझे, छितरे बालों में मोटी जुएँ अठखेलियाँ कर रहीं थीं। बच्चे की मजदूरिन माँ फाँय-फाँय भागकर काम कर रही थी।

अपनी आँखों के पीछे-पीछे वह बच्चे के निकट आया। रुका। दुकानदार से बोला—'देखो—ये रही नींद। ऐसा बिस्तर है तुम्हारे पास?'

आर॰ज़ेड॰डी॰-208 **बी, डी॰डी॰ए॰ पार्क रोड, राज नगर**-2,
पालम कालोनी, नई दिल्ली 110077
shobharastogishobha@gmail.com

इक स्रोत था जो निकला था चट्टान तोड़कर
दरिया सफ़र की सारी कहानी सुना गया
निर्बाध चोट करने से पत्थर भी कट गए
पत्थर की सब कठोरता पानी चबा गया
—डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

गोवर्धन यादव

आग

सेठ धरमदास अपनी पाँचमंज़िला इमारत की छत पर अपने ख़ास दोस्तों के साथ काकटेल पार्टी में व्यस्त थे। लोग शराब के नशे में इठलाते-बलखाते- लड़खड़ाते आते और बार-बार उन्हें नगरपालिका के चुनाव में अध्यक्ष पद पर भारी बहुमत से जीतने की बधाइयाँ देते, लेकिन धरमदासजी के मन में आग लगी हुई थी। वे न तो बहुत प्रसन्नता ज़ाहिर कर रहे थे और न ही उनके मुखमंडल पर चुनाव जीत जाने की ख़ुशी ही झलक रही थी।

सेठजी के एक मित्र ने इनकी उदासी के बारे में जानना चाहा, तो उन्होंने अत्यंत ही कातर शब्दों में अपने मन की व्यथा-कथा सुनाते हुए अपने आलीशान बंगले के पीछे लगी झुग्गी-झोपड़ी के बारे में कह सुनाया। सारी बातें सुन चुकने के बाद उनके मित्र ने कहा'-'भाई, इतनी छोटी-सी बात के लिए क्यों तुम पार्टी का मज़ा किरकिरा कर रहे हो। मेरा तुमसे वादा रहा एक हफ़्ते के भीतर ये सारी झुग्गी-झोपड़ियाँ यहाँ से हट जाएँगी और तुम्हारे कब्ज़े में सारी ज़मीन आ जाएगी।' अपने मित्र की सारी बातें सुन चुकने के बाद, उनके भीतर लगी आग की आँच में थोड़ी कमी आई थी। दिन निकलते ही ऐसा लगता जैसे आसमान से आग बरस रही हो। झुग्गी-झोपड़ी में अपना जीवन बसर करते मज़दूर दिन में अपने काम पर निकल जाते और देर रात घर लौटते और खाना खाकर बाहर खुले आसमान के नीचे रात काटते। इसी समय का इंतज़ार था सेठजी के मित्र को। उसने किराये के पिट्ठुओं को आदेश दिया कि आधी रात बीतते ही सारी झोपड़ियों को आग के हवाले कर दिया जाए। देखते-ही-देखते सारी बस्ती को आग ने उदरस्थ कर लिया था। ग़रीब मज़दूर रोने-चिल्लाने-चीख़ने के अलावा कर भी क्या सकते थे। जब सारा आशियाना ही जलकर राख हो गया तो वे वहाँ रहकर करते भी तो क्या करते। धीरे-धीरे पूरी बस्ती के लोग किसी अन्य जगह को तलाश कर अपनी-अपनी झोपड़ियों के निर्माण में लग गए। सेठजी के सीने में बरसों पूर्व लगी आग अब जाकर ठंडी हो पाई थी। फिर तो वही होना था, जो सेठजी चाहते थे। उस जगह पर अब आलिशान कोठियाँ आसमान से बातें करने लगी थीं।

103 **कावेरीनगर, छिंदवाड़ा (म॰प्र॰)** 480001

रमेशचंद्र श्रीवास्तव

एक हाथ वाला बूढ़ा

उस दिन ट्रेन लेट होकर रात्रि 12 बजे पहुँची। बाहर एक वृद्ध रिक्शावाला ही दिखा, जिसे कई यात्री जान बूझकर छोड़ गए थे। एक बार मेरे मन में भी आया, इससे चलना पाप होगा, फिर मजबूरी में उसी को बुलाया, वह भी बिना कुछ पूछे चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद ओवरब्रिज की चढ़ाई थी, तब जाकर पता चला, उसका एक ही हाथ था। मैंने सहानुभूतिवश पूछा, 'एक हाथ से रिक्शा चलाने में बहुत ही परेशानी होती होगी?'

'बिल्कुल नहीं बाबूजी, शुरू में कुछ दिन हुई थी।' रात के सन्नाटे में वह एक ही हाथ से रिक्शा खींचते हुए पसीने-पसीने हो रहा था। मैंने पूछा-'एक हाथ की क्या कहानी है?' थोड़ी देर की चुप्पी के बाद वह बोला, 'गाँव में खेत के बँटवारे में रंजिश हो गई, वे लोग दबंग और अपराधी स्वभाव के थे, मुक़दमा उठाने के लिए दबाव डालने लगे।'

वह कुछ गंभीर हो गया और आगे की बात बताने से कतराने लगा, किंतु मेरी उत्सुकता के आगे वह विवश हो गया और बताया-'एक रात जब मैं खलिहान में सो रहा था, जान से मारने की नीयत से मुझ पर वार किया गया। संयोग से वह गड़ासा गर्दन पर गिरने के बजाए हाथ पर गिरा और वह कट गया।'

'क्या दिन की मज़दूरी से काम नहीं चलता, जो इस उम्र में रात में रिक्शा चला रहे हो?' मुझे उस पर दया आई। 'रात में भीड़ कम होती है, जिससे रिक्शा चलाने में आसानी होती है।' उसने धीरे से कहा।

उसकी विवशता समझकर घर पर मैंने पाँच रुपये के बजाय दस रुपये दिए। सीढ़ियाँ चढ़कर दरवाज़ा खुलवा ही रहा था कि वह भी हाँफते हुए पहुँचा और पाँच रुपये का नोट वापस करते हुए कहा, 'आपने ज़्यादा दे दिया था।'

'आपकी अवस्था देखकर और रात की मेहनत सोचकर कोई अधिक नहीं है, मैं ख़ुशी से दे रहा हूँ।'

उसने जवाब दिया, 'मेरी प्रतिज्ञा है एक हाथ के रहते हुए भी दया की भीख नहीं लूँगा, तन ही बूढ़ा हुआ है, मन नहीं।' मुझे लगा पाँच रुपये अधिक देकर मैंने उसका अपमान कर दिया है।

एल॰आई॰यू॰ ऑफ़िस मऊ 275101 **(उ॰प्र॰)**

चैतन्य त्रिवेदी

अपना ही दुश्मन

पता नहीं उस राज्य का रिवाज ही कुछ विचित्र था। वहाँ दुश्मन रात करते थे। जो दुश्मन नहीं हैं किसी न किसी का, वह राज्यकार्य के लिए सर्वथा अयोग्य समझा जाता। वहाँ अक्ल के दुश्मन राज करते थे। जो कानून का दुश्मन होता, वह कानून की हिफाजत का काम देखता। ग़रीबों का दुश्मन ग़रीबी हटाने के काम देखता था। इस तरह वहाँ रहने के नियम ही कुछ अलग किस्म के थे। आपको यह ज़ाहिर करना ज़रूरी है कि आप किसके दुश्मन हैं। कुछ धर्म के दुश्मन, वे बड़े धार्मिक माने जाते। समाज के दुश्मन समाज-सुधारक। देश के दुश्मन, देशभक्त कहलाते। यानी कि हर फील्ड दुश्मनों से अटा पड़ा था। आप अगर किसी के दुश्मन नहीं हैं तो आप चुपचाप बैठिए। ताज्जुब यह कि जिस बात का जितना बड़ा दुश्मन होता, उसे उसी क्षेत्र का अग्रणी माना जाता। इस तरह वहाँ सारे दुश्मन मिलकर देश और समाज चला रहे थे। वे सारे दुश्मन चाह रहे थे कि हरेक को कहीं-न-कहीं दुश्मनी में संलग्न रहना ज़रूरी है। जो किसी का दुश्मन नहीं, उसकी कोई गारंटी नहीं। कई बेगुनाह लोग इसी वजह से मारे जाते वहाँ। वहाँ नागरिकों का सर्वे होता था, हमेशा और पसंदीदा दुश्मनी बतानी पड़ती। वे सदियों से दुश्मनों की ही तलाश करते आ रहे थे। एक दिन राज्य के कारिंदे मेरे पास आए, पूछने लगे कि 'मैं किसका दुश्मन हूँ।'

मैंने कहा, 'मैं तो किसी का दुश्मन नहीं हूँ।' उन्होंने मुझे चेतावनी दी कि एक हफ़्ते के भीतर मैं यह बता दूँ या तय कर लूँ कि मैं किसका दुश्मन हूँ। उनका कहना था कि इस देश में इतनी वेरायटीज हैं कि उनमें से किसी एक का दुश्मन हो जाना मुश्किल नहीं है। मैंने कहा, 'ठीक है विचार करूँगा।'

एक हफ़्ते बाद मुझे राजा के दरबार में पेश किया गया ताकि मैं अभी भी बता दूँ कि मैं किसका दुश्मन हूँ। यह आख़िरी मौक़ा था। सब चुप बैठे थे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर कैसे बचा लूँ अपना जीवन। किसका नाम लूँ। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था। राजा ने कहा, 'इतनी देर। इतनी देर में तो हम दुनिया को दुश्मन बना लें। कैसे डफर नागरिक हो तुम? इतना बड़ा देश, इतनी विभिन्नताएँ लिए, इतने ढेर आप्शंस तो विदेशों में भी नहीं हैं। कहाँ से पकड़ लाए इसे तुम। जल्दी बताओ। सड़ी-सी बात के लिए इतना समय जाया कर रहे हो। आख़िरकार मैंने चुप्पी तोड़ी। मैंने भरे गले से कहा, 'सरकार! मैं अपना ही दुश्मन हूँ।'

हो-हो-हो!! क्या बात है! लाजवाब! पूरे दरबार में ठहाकों पर ठहाके लग गए। जिसने सुना वो हँस पड़ा।

16 ए भगवती, अन्नपूर्णा नगर
अन्नपूर्णा मंदिर रोड, इंदौर (म॰प्र॰) 452009

प्यार की जीत

निर्मला सिंह

पाँच वर्ष हो गए रीना के अंतर्जातीय विवाह को। सुख-दुःख, तीज-त्योहार में ही रीना मैके जाती है। संबंध औपचारिक ही है। लेकिन इधर पिता के बीमार पड़ने के कारण रीना हफ़्ते में एक-दो बार मैके आ जाती है, पिता की सेवा-टहल करती है। पिता का चट्टानी हृदय मोम-सा पिघल गया। किसी को पता ही नहीं चला, वसीयत में बेदख़ल की गई रीना को वसीयत बदलने से जायदाद में हिस्सा मिल गया। बाप-बेटी का प्यार ज्वार-सा देखकर बेटा दुःखी हो गया। एक दिन अपनी पत्नी से कहने लगा, 'सुनो, यह सब हो क्या रहा है? हमने तो इतनी कोशिशें करके पिताजी से रीना के संबंध तुड़वाए थे, लेकिन सब गड़बड़ हो गया।'

हारे हुए जुआरी-सी पत्नी बोली, 'अब तो सब-कुछ ख़त्म हो गया, तुम देखते ही रहे, पिताजी ने बिटिया रानी को उनके हिस्से की जायदाद दे दी है।' पुनः ऊँचे स्वर में बोली, 'यह सब तुम्हारी ही ग़लती है, बहिन का आना-जाना रोकना था!'

'अरे, मैं कैसे रोक सकता हूँ। बाप से बेटी को मिलने के लिए वह तो सेवा करने आती थी और जीत गई, वैसे रीना हमेशा जीती ही है, शुरू से चाहे खेल हो, डिबेट हो, बहस हो, वह क्लास में भी हमेशा फ़र्स्ट आती रही है। वह इस खेल में भी जीत गई।'

बाहर दरवाज़े पर खड़ी रीना सब-कुछ सुन रही थी, आँखों से आँसू बह निकले थे, धीरे से कमरे के अंदर आकर बोली, 'भैया, यह तो सही है, मैं हमेशा जीती हूँ, लेकिन यह खेल नहीं, बाप-बेटी का प्यार है और जीत हमेशा प्यार की होती है, नफ़रत की नही!'

185 **ए, सिविल लाइंस, बरेली** 243001

अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन एवं सम्मान समारोह

उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद निवासी ब्लॉगर और साहित्यकार कृष्णकुमार यादव, हैदराबाद की संपतदेवी मुरारका और रायपुर छतीसगढ़ के ललित शर्मा को विगत 15 से 18 जनवरी 2015 तक भूटान की राजधानी थिम्पू और सांस्कृतिक राजधानी पारो में आयोजित चतुर्थ 'अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन' के दौरान सर्वोच्च परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान प्रदान किया गया। इस सम्मान के अंतर्गत उन्हें पच्चीस हज़ार की धनराशि, स्मृति चिह्न, सम्मान-पत्र और अंगवस्त्र प्रदान किए गए। साथ ही महाराष्ट्र के औरंगाबाद की अनुवादक सुनीता प्रेम यादव को परिकल्पना सार्क सम्मान प्रदान किया गया। इस सम्मान के अंतर्गत उन्हें पाँच हज़ार की धनराशि, स्मृति चिह्न, सम्मान-पत्र और अंगवस्त्र प्रदान किए गए।

सुल्तानपुर के डॉ रामबहादुर मिश्र को परिकल्पना साहित्यभूषण सम्मान, बाराबंकी के एडवोकेट रणधीरसिंह सुमन व डॉ विनयदास को क्रमश: परिकल्पना सोशल मीडिया सम्मान और परिकल्पना कथासम्मान, लखनऊ की कुसुम वर्मा को परिकल्पना लोकसंस्कृति सम्मान, बहराइच के डॉ॰ अशोक गुलशन को परिकल्पना हिंदी गौरव सम्मान, रायबरेली के सूर्यप्रसाद शर्मा को परिकल्पना साहित्य सम्मान तथा हैदरगढ़ के ओमप्रकाश जयंत व विष्णुकुमार शर्मा को क्रमश: परिकल्पना साहित्यश्री सम्मान व परिकल्पना सृजनश्री सम्मान तथा उन्नाव के विश्वंभरनाथ अवस्थी को परिकल्पना नागरिक सम्मान प्रदान किए गए। इसके अलावा इंदौर के प्रकाश हिंदुस्तानी, रायपुर के गिरीश पंकज, गगन शर्मा, अल्पना देशपांडे, अदिति देशपांडे, दिल्ली की सर्जना शर्मा और निशा सिंह, मुंबई के आलोक भारद्वाज, सिल्चर की डॉ॰ शुभदा पांडेय आदि के साथ-साथ देश-विदेश के लगभग तीस ब्लॉगर्स को विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए परिकल्पना सम्मान प्रदान किया गया।

यह सम्मान भूटान चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के महासचिव श्री फूब शृंग के करकमलों से दिए गए। इस अवसर पर भूटान चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के उपमहासचिव श्री चंद्र क्षेत्री, सार्क समिति के महिला विंग तथा इंटरनेशनल स्कूल ऑफ़ भूटान की अध्यक्ष श्रीमती थिनले ल्हाम, असम विश्वविद्यालय सिल्चर के भाषाविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नित्यानंद पांडेय, इलाबाद परिक्षेत्र के डाक निदेशक श्री कृष्णकुमार यादव और हिंदी के वरिष्ठ व्यंग्यकार श्री गिरीश पंकज विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी के मुख्य ब्लॉग विश्लेषक रवींद्र प्रभात ने की तथा संचालन महाराष्ट्र के औरंगाबाद निवासी श्रीमती सुनीता प्रेम यादव ने किया।

सिवना सम्मान

सीहोर पत्रकारिता की पहचान रहे स्व॰ अंबादत्त भारतीय की स्मृति में स्थापित शिवना सम्मान, जो पत्रकारिता अथवा शोध पुस्तक हेतु प्रदान किया जाता है, साहित्यकार श्रीमती स्वाति तिवारी को उनकी सामयिक प्रकाशन से प्रकाशित भोपाल गैस कांड पर लिखी गई बहुचर्चित पुस्तक 'सवाल आज भी ज़िंदा है' हेतु प्रदान किया गया। श्रीमती स्वाति तिवारी मध्य प्रदेश संदेश पत्रिका की सहसंपादक हैं। पैंतीसवा जनार्दन शर्मा सम्मान प्रतिष्ठित कवि श्री मोहन सगोरिया को साखी प्रकाशन से प्रकाशित उनकी कविता पुस्तक 'दिन में मोमबत्तियाँ' हेतु प्रदान किया गया। गीतकार स्व॰ रमेश हठीला की स्मृति में दिया जाने वाला शिवना सम्मान वरिष्ठ शायरा श्रीमती इस्मत जैदी को प्रदान किया गया। गीतकार श्री मोहनराय की स्मृति में दिया जाने वाला शिवना सम्मान सीहोर के ही वरिष्ठ शायर श्री रियाज मोहम्मद रियाज को दिया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी की सचिव श्रीमती नुसरत मेहँदी ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेश मेवाड़ी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शैलेंद्र पटेल उपस्थित थे।

हिन्दी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०)

फ़ोन : 01342-263232, 07838090732

ई-मेल :

giriraj3100@gmail.com

giriraj@hindisahityaniketan.com

वेबसाइट :

www.hindisahityaniketan.com

महत्त्वपूर्ण कोश एवं संदर्भ ग्रंथ

निश्तर ख़ानक़ाही एवं डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

ग़ज़ल और उसका व्याकरण 150.00

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल एवं डॉ० मीना अग्रवाल

हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-1 495.00

हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-2 700.00

बृहत् हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश 1500.00

हिंदी शोध के नए प्रतिमान 800.00

हिंदी शोध : नई दृष्टि 800.00

हिंदी तुलनात्मक शोधसंदर्भ 995.00

शोधसंदर्भ-भाग-1 500.00

शोधसंदर्भ-भाग-2 550.00

शोधसंदर्भ-भाग-3 525.00

शोधसंदर्भ-भाग-4 595.00

शोधसंदर्भ-भाग-5 895.00

शोधसंदर्भ-भाग-6 1500.00

हिंदी तुकांत कोश 300.00

समीक्षा एवं समालोचना

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

सवाल साहित्य के 200.00

डॉ० चंद्रकात मिसाल

हिंदी सिनेमा और दांपत्य संबंध 500.00

सिनेमा और साहित्य का अंत:संबंध 200.00

नवलकिशोर शर्मा

सिनेमा, साहित्य और संस्कृति 150.00

धर्मेन्द्र उपाध्याय

आमिर खान : हिंदी सिनेमा के सेवक 300.00

डॉ० अंजू भटनागर

डॉ० कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान 500.00

डॉ० योगेश गोकुल पाटिल

अमरकांत का कथासाहित्य 400.00

डॉ० अनुभूति

नारी-समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन 450.00

डॉ० सुषमा सिंह

राजस्थानी चित्रशैली में आखेट दृश्य 250.00

भोपाल के संग्रहालयों की चित्रकला 250.00

डॉ० ज्योति सिंह

मृदुला गर्ग कृत अनित्य : इतिहास और आख्यान का संबंध 150.00

मृदुला गर्ग और नारी-अस्मिता का प्रश्न 300.00

डॉ० मिथिलेश माहेश्वरी

काका हाथरसी : एक समीक्षा-यात्रा 300.00

डॉ० मनोज कुमार

सांप्रदायिकता और हिंदी कथासाहित्य 250.00

डॉ० दीपा के०

अपनी कविताओं में अशोक चक्रधर 250.00

डॉ० मीना अग्रवाल

आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत (पुरस्कृत) 450.00

डॉ० हरीशकुमार सिंह

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य 350.00

डॉ० अनिलकुमार शर्मा

साठोत्तरी हिंदी-ग़ज़ल : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान 350.00

डॉ० वी० जयलक्ष्मी

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल का व्यंग्य-साहित्य : कथ्य एवं भाषा 450.00

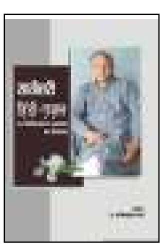

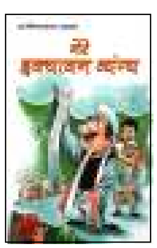
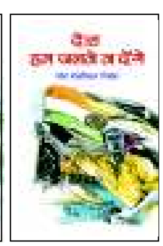
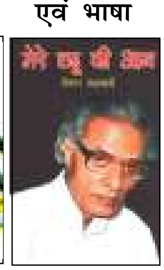
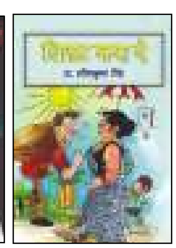

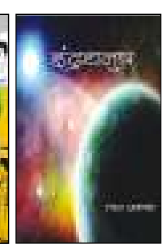

लोकरंगमंच के आयाम/डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा 200.00

देवबंद की स्वांग-परंपरा/डॉ॰ सुरेंद्र शर्मा 200.00

डॉ॰ शंकर क्षेम

एक साक्षात्कार : पं॰ अमृतलाल नागर के साथ 150.00

अनिरुद्ध सिन्हा

ग़ज़ल : सौंदर्य और यथार्थ 150.00

डॉ॰ ज्योति व्यास

समय के हस्ताक्षर (हिंदी के आधुनिक कवि) 150.00

डॉ॰ लालबहादुर रावल

कालिदास के साहित्य में भौगोलिक तत्त्व 300.00

डॉ॰ अशोककुमार

जनपद बिजनौर के आधुनिककालीन साहित्यकार 350.00

डॉ॰ ओमदत्त आर्य

बिजनौर क्षेत्र की ग्रामोद्योग-संबंधी शब्दावली का अध्ययन 500.00

डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित

आस्थावाद एवं अन्य निबंध 300.00

साहित्य और संस्कृति 300.00

डॉ॰ आशा रावत

हास्य-निबंध : स्वतंत्रता के पश्चात् 350.00

डॉ॰ प्रेम जनमेजय

आज़ादी के बाद का हिंदी गद्य व्यंग्य 500.00

विनोदचंद्र पांडेय

हिंदी बालकाव्य के विविध पक्ष 300.00

डॉ॰ स्वाति शर्मा

हिंदी बालसाहित्य : डॉ॰ सुरेंद्र विक्रम का योगदान 450.00

डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन

भीष्म साहनी का कथासाहित्य : सांप्रदायिक सद्भाव 300.00

अविनाश वाचस्पति/रवींद्र प्रभात

हिंदी ब्लॉगिंग : अभिव्यक्ति की नई क्रांति 495.00

रवींद्र प्रभात

हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास 300.00

डॉ॰ विजय इंदु

सूरदास का सौंदर्यचित्रण 250.00

हरिऔध का सौंदर्यचित्रण 500.00

डॉ॰ मीनल रश्मि

साठोत्तरी हिंदी रेखाचित्र : शैलीवैज्ञानिक अध्ययन 495.00

डॉ॰ शीला गहलोत

समकालीन हिंदी कविता सामाजिक चेतना के संदर्भ में 500.00

डॉ॰ राजकुमार जमदग्नि

हरिवंश राय बच्चन के काव्य में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्तियाँ 400.00

डॉ॰ आदित्य प्रचंडिया

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (एक) 700.00

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (दो) 700.00

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (तीन) 700.00

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (चार) 700.00

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (पाँच) 700.00

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (छह) 700.00

डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (सात) 700.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ॰ मीना अग्रवाल

वादविवाद प्रतियोगिता : पक्ष और विपक्ष 200.00

डॉ॰ शुचि गुप्ता

फिजी में प्रवासी भारतीय 300.00

डॉ॰ शिवशंकर लधवे

मुक्तिबोध का रचना-संसार 200.00

डॉ॰ आदित्य प्रचण्डिया

साहित्य और संस्कृति का अंत:संबंध 400.00

डॉ॰ अशोक उपाध्याय

नाटककार पंडित राधेश्याम कथावाचक 200.00

डॉ॰ अनिता रानी

यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 400.00

डॉ॰ राजेन्द्र **मिश्र**

सृजन और साहित्य 400.00

हास्य-व्यंग्य

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ 150.00

मेरे इक्यावन व्यंग्य 300.00

चुनी हुई हास्य कविताएँ 250.00

बाबू झोलानाथ 60.00

राजनीति में गिरगिटवाद 100.00

आदमी और कुत्ते की नाक 150.00

आओ भ्रष्टाचार करें 200.00

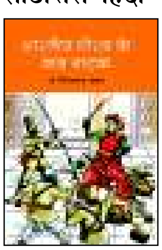

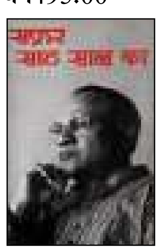

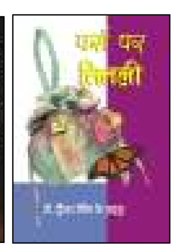
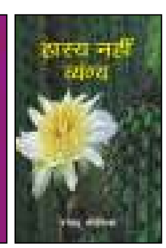
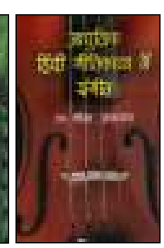

गोपाल चतुर्वेदी

दूध का धुला लोकतंत्र 150.00

गिरीश पंकज

आधुनिक बैताल कथाएँ 200.00

महेशचंद्र द्विवेदी

भज्जी का जूता 150.00

क्लियर फंडा 120.00

प्रिय-अप्रिय प्रशासकीय प्रसंग 170.00

वीरप्पन की मूँछें 200.00

पं॰ सूर्यनारायण व्यास, सं॰ राजशेखर व्यास

वसीयतनामा 150.00

नो टेंशन/ डॉ॰ सुरेश अवस्थी 170.00

काका हाथरसी

काका की विशिष्ट रचनाएँ 300.00

काका के व्यंग्य-बाण 300.00

कक्के के छक्के 200.00

लूटनीति मंथन करी 200.00

खिलखिलाहट 200.00

डॉ॰ आशा रावत

पैसे कहाँ से दें 200.00

चाहिए एक और भगतसिंह 100.00

महेश राजा

नमस्कार प्रजातंत्र 150.00

अशोक चक्रधर

ए जी सुनिए 100.00

इसलिए बौड़म जी इसलिए 100.00

डॉ॰ बलजीत सिंह

नमस्ते जी 150.00

अब हँसने की बारी है 200.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

1995 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 65.00

1996 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00

1997 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00

1998 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00

1999 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 120.00

2002 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00

2003 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00

2004 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 170.00

डॉ॰ शिव शर्मा

शिवशर्मा के चुने हुए व्यंग्य 50.00

बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास) 150.00

अपने-अपने भस्मासुर 150.00

दामोदरदत्त दीक्षित

प्रतिनिधि व्यंग्य 100.00

हास्य-व्यंग्य : मधुप पांडेय के संग/ मधुप पांडेय 200.00

धमकीबाज़ी के युग में/निश्तर ख़ानक़ाही 60.00

ला ख़र्चा निकाल/गजेंद्र तिवारी 200.00

जलनेवाले जला करें/गजेंद्र तिवारी 60.00

कवयित्री सम्मेलन/ सुरेंद्रमोहन मिश्र 100.00

पेट में दाढ़ियाँ हैं/सूर्यकुमार पांडेय 100.00

डॉ॰ हरीशकुमार सिंह

ये है इंडिया 120.00

आँखों देखा हाल 150.00

सच का सामना 150.00

लिफ़्ट करा दे 200.00

देवेंद्र के कार्टून/देवेंद्र शर्मा 80.00

कार्टून कौतुक/देवेंद्र शर्मा 120.00

लिफ़ाफ़े का अर्थशास्त्र/डॉ॰ पिलकेंद्र अरोरा 120.00

अजगर करे न चाकरी/बाबूसिंह चौहान 150.00

हँसते-हँसते कट जाएँ रस्ते/ मधुप पांडेय 200.00

ज़िंदगी तेरे नाम डार्लिंग/ लालित्य ललित 200.00

नो कमेंट/ सुमित प्रताप सिंह 200.00

कहानी

डॉ॰ आशा रावत

एक सपना मेरा भी था 200.00

विजयकुमार

एक थी माया 200.00

सुरेशचंद्र शुक्ल

सरहदों के पार 200.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

जिज्ञासा और अन्य कहानियाँ 200.00

छोटे-छोटे सुख 200.00

कथा जारी है/बाबूसिंह चौहान 150.00

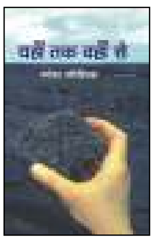
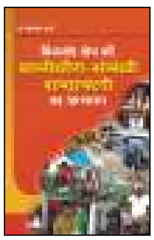
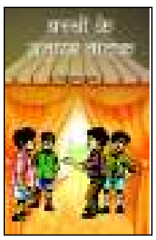
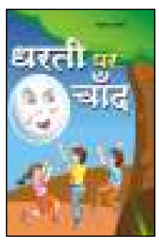

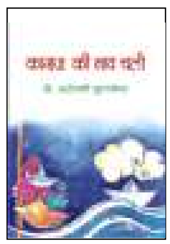
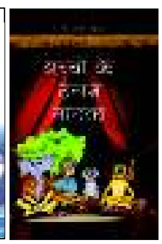

इक्कीस कहानियाँ/ सत्यराज 100.00

डॉ॰ मीना अग्रवाल

अंदर धूप बाहर धूप (नारी-मन की कहानियाँ) 150.00

कुत्तेवाले पापा 150.00

डॉ॰ दिनेशचंद्र बलूनी

उत्तराखंड की लोकगाथाएँ 200.00

महेशचंद्र द्विवेदी

एक बौना मानव 100.00

लव जिहाद 200.00

इमराना हाज़िर हो 150.00

हैं आस्माँ कई और भी/ नीरजा द्विवेदी 200.00

कौन कितना निकट/रेणु राजवंशी गुप्ता 120.00

लघु कथाएँ/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 150.00

डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा

कमरा नं॰ 103 150.00

डॉ॰ इला प्रसाद

कहानियाँ अमरीका से 150.00

डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका (सं॰)

प्रेमचंद की कालजयी कहानियाँ 150.00

सुकेश साहनी, रामेश्वर काम्बोज हिमांशु (सं॰)

लघुकथाएँ जीवनमूल्यों की 150.00

पंद्रह सिंधी कहानियाँ/देवी नागरानी 200.00

अंतराल/संगीता 200.00

उपन्यास

डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र

इतिहास की आवाज़ 450.00

श्रीमती सुषमा अग्रवाल

अनोखा उपहार 200.00

आसरा 100.00

तीन बीघा ज़मीन 200.00

मन के जीते जीत 200.00

कुल का चिराग 200.00

नीरजा द्विवेदी

कालचक्र से परे 200.00

महेशचंद्र द्विवेदी

भीगे पंख 200.00

मानिला की योगिनी 200.00

डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध

और लहरें उफनती रहीं 200.00

बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास)/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00

डॉ॰ मोहन गुप्त

अराज-राज 200.00

सुराज-राज 350.00

डॉ॰ आशा रावत

एक गुमनाम फौजी की डायरी 150.00

एक चेहरे की कहानी 150.00

गुरुदक्षिणा (व्यंग्य-उपन्यास) 100.00

प्रेमसागर तिवारी

एक फ़रिश्ता ऐसा देखा 250.00

एकांकी-नाटक

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

मंचीय हास्य-व्यंग्य एकांकी 200.00

मंचीय सामाजिक एकांकी 200.00

बच्चों के हास्य नाटक 200.00

बच्चों के रोचक नाटक 200.00

बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक 200.00

बच्चों के अनुपम नाटक 200.00

बच्चों के उत्तम नाटक 200.00

भारतीय गौरव के बाल नाटक 200.00

प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटक 300.00

ग्यारह नुक्कड़ नाटक 200.00

प्रकाश मनु

बच्चों के अनोखे नाटक 250.00

हास्य-विनोद के नाटक 250.00

संसार : एक नाट्यशाला/बाबूसिंह चौहान 150.00

ग्यारह एकांकी/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 200.00

दमन/रामाश्रय दीक्षित 100.00

स्वप्न पुरुष/उर्मिला अग्रवाल 150.00

अफलातून की अकादमी/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00

ललित निबंध एवं रेखाचित्र

कैसे-कैसे लोग मिले/निश्तर ख़ानक़ाही 125.00

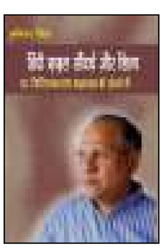

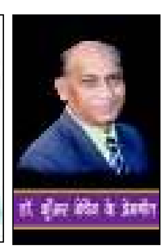
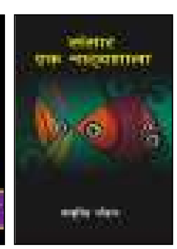

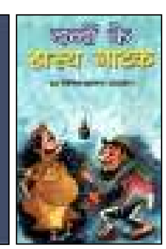

यादों का मधुबन/कृष्ण राघव 150.00
समय के चाक पर/डॉ॰ लालबहादुर रावल 125.00
समय एक नाटक/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 200.00
दर्पण झूठ बोलता है/बाबूसिंह चौहान 60.00
मकड़जाल में आदमी/बाबूसिंह चौहान 80.00
उफनती नदियों के सामने/बाबूसिंह चौहान 100.00
इन दिनों समर में/डॉ॰ कृष्णकुमार रत्तू 250.00
अनुभव के पंख/चंद्रवीरसिंह गहलौत 250.00

डॉ॰ बालशौरि रेड्डी
मेरे साक्षात्कार 250.00

डॉ॰ बलजीत सिंह
आधी हकीकत आधा फ़साना 200.00

डॉ॰ ओमदत्त आर्य
फूलों की महक 200.00

डॉ॰ गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
संवाद : साहित्यकारों से 200.00
एक फ़रिश्ता ऐसा देखा/प्रेमसागर तिवारी 250.00

गीत-ग़ज़ल

निश्तर ख़ानक़ाही
निश्तर ख़ानक़ाही समग्र (प्रकाशनाधीन) 500.00
मोम की बैसाखियाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 50.00
ग़ज़ल मैंने छेड़ी (ग़ज़ल-संग्रह) 80.00
ग़ज़लों के शहर में (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मेरे लहू की आग (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00

डॉ॰ कुँअर बेचैन
कोई आवाज़ देता है 150.00
दिन दिवंगत हुए 150.00
कुँअर बेचैन के नवगीत 200.00
कुँअर बेचैन के प्रेमगीत 150.00
पर्स पर तितली (हाइकु) 200.00

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
मातृभूमि के लिए 200.00
संघर्ष जारी है 170.00
जीवन-पथ में 150.00
देश हम जलने न देंगे 150.00
तुम भी मेरे साथ चलो 150.00

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'
झरनों का तराना है 200.00

राजेन्द्र मिश्र
असाबिया 200.00
समय के भूगोल में 200.00
आठवाँ राग 200.00
हवाएँ ख़ामोश हैं 200.00

रामेश्वरप्रसाद
शमा हर रंग में जलती है 150.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
अक्षर हूँ मैं (कविताएँ) 150.00
सन्नाटे में गूँज (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
भीतर शोर बहुत है (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मौसम बदल गया कितना (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
रोशनी बनकर जिओ (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
शिकायत न करो तुम (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
आदमी है कहाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
प्रतिनिधि ग़ज़लें (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
बूँद के अंदर समंदर (मुक्तक संग्रह) 200.00

गीतिका गोयल
मान भी जा छुटकी (कविताएँ) 150.00

रामगोपाल भारतीय
आदमी के हक़ में (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00

रमेश कौशिक
यहाँ तक वहाँ से (कविताएँ) 200.00
हास्य नहीं व्यंग्य (कविताएँ) 150.00

आर्यभूषण गर्ग
गांधारी का सच (खंडकाव्य) 200.00

डॉ॰ आकुल
राधेय (खंडकाव्य) 120.00
असित चंद्र : अवदात चंद्रिका (काव्य-नाटक) 120.00
जिंदगी गाती तो है/(ग़ज़ल-संग्रह) 120.00

किशनस्वरूप
आसमान मेरा भी है (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
बूँद-बूँद सागर मैं (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00

कर्नल तिलकराज
आँचल-आँचल खुशबू (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
ज़ख़्म खिलने को हैं (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00

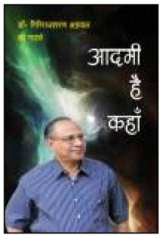

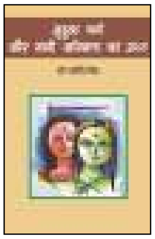

अग्निसुता/राजेंद्र शर्मा	150.00
डॉ॰ शंकर क्षेम	
सीतायनी	150.00
गंगापुत्र भीष्म : शर-शैया से	200.00
शचींद्र भटनागर	
हिरना लौट चलें (गीत-संग्रह)	150.00
तिराहे पर (ग़ज़ल-संग्रह)	150.00
ढाई आखर प्रेम के (गीत-संग्रह)	200.00
अखंडित अस्मिता (मुक्तक)	200.00
मनोज अबोध	
गुलमुहर की छाँव में (ग़ज़ल-संग्रह)	100.00
मेरे भीतर महक रहा है (ग़ज़ल-संग्रह)	150.00
तारा प्रकाश	
तारा प्रकाश समग्र	500.00
उजियारा आशाओं का	150.00
बुलंदी इरादों की	150.00
चलने से मंज़िल मिलती है	200.00
इंद्रधनुष	200.00
संवेदनाओं के रंग	200.00
अश्विनीकुमार 'विष्णु'	
सुरों के ख़त	100.00
सुनहरे मंत्र का जादू	100.00
सुनते हुए ऋतुगीत	150.00
सुबह की अंगूठी	150.00
डॉ॰ मीना अग्रवाल	
सफ़र में साथ-साथ (मुक्तक-संग्रह)	150.00
जो सच कहे (हाइकु-संग्रह)	150.00
यादें बोलती हैं (कविताएँ)	200.00
एक मुट्ठी धूप/नीरजा सिंह	100.00
डॉ॰ कमल मुसद्दी	
कटे हाथों के हस्ताक्षर	150.00
डॉ॰ बलजीत सिंह	
फ़ासले मिट जाएँगे (ग़ज़ल-संग्रह)	150.00
शब्द-शब्द संदेश (दोहे)	150.00
जीवन है मुस्कान (दोहे)	150.00
भीतर का संगीत (दोहे)	200.00
सुख के बिरवे रोप (दोहे)	200.00
इंद्रधनुष के रंग (दोहे)	200.00
प्यार के गुलाल से (हाइकु)	200.00
हारना हिम्मत नहीं (मुक्तक)	200.00
डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'	
बहती नदी हो जाइए (ग़ज़ल-संग्रह)	150.00
अँधियारों से लड़ना सीखें (ग़ज़ल-संग्रह)	200.00

जीवन-अमृत : पर्यावरण चेतना (दोहा-संग्रह)	200.00
अक्षर-अक्षर हो अमर (दोहा-संग्रह)	200.00
वैदुष्यमणि विद्योत्तमा (खंडकाव्य)	200.00
अनजाने आकाश में/महेशचंद्र द्विवेदी	170.00
सत्येंद्र गुप्ता	
बातें कुछ अनकही	200.00
मैंने देखा है	200.00
हौसला तो है	200.00
ज़िंदगी रुकती नहीं	200.00
जज़्बात की धूप/धूप धौलपुरी	250.00
नवलकिशोर शर्मा	
आड़ी-तिरछी यादों-सा कुछ	180.00
जब चाँद डूब रहा था	200.00
एड्स शतक/पूरणसिंह सैनी	150.00
डॉ॰ ओमदत्त आर्य	
खोजें जीवन सत्य (दोहे)	150.00
अपनी एक लकीर (दोहे)	200.00
सलेकचंद संगल	
राष्ट्र-शक्ति	150.00
माँ तुझे प्रणाम	150.00
लहरों के विरुद्ध/डॉ॰ रामप्रकाश	200.00
हर वृक्ष महाबोधि नहीं होता/महेंद्र कुमार	200.00
पीड़ा का राजमहल/डॉ॰ उर्मिला अग्रवाल	200.00
मैं एक समुद्र/डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध	200.00
उड़ान जारी है/विनोद भृंग	200.00
हरिराम 'पथिक'	
कहता कुछ मौन (हाइकु-संग्रह)	200.00
चंद्रवीरसिंह गहलौत 'बेदाग'	
धनुषभंजक राम	200.00
एक कुल्हड़ चाय/स्वर्ण ज्योति	200.00
सूर्यनगर की चाँदनी (ग़ज़लें)/ रामेश्वर वैष्णव	150.00
रात (रात पर कविताएँ)/दामोदर खड़से	150.00
लक्ष्मी खन्ना सुमन	
झरनों का तराना है	200.00
अहसासों के तान-बाने	200.00
स्मृतियाँ/सुषमा अग्रवाल	200.00
लालित्य ललित	
कविताएँ फेसबुक से	200.00
दुनिया इतनी भी बुरी नहीं	200.00
बचे रहेंगे केवल शब्द	200.00
लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'	
झरनों का तराना है	200.00
अहसासों के ताने-बाने	200.00

आत्मकथा-संस्मरण-पत्र

मेरा जीवन : ए-वन/काका हाथरसी 100.00
आत्मसरोवर/ओम्प्रकाश अग्रवाल 125.00
निष्ठा के शिखर-बिंदु/नीरजा द्विवेदी 200.00
स्विट्ज़रलैंड के इक्कीस दिन 200.00
सफ़र साठ साल का/डॉ॰अजय जनमेजय (सं) 400.00
गीतिका गोयल, अनुभूति भटनागर (संपादक)
यादों की गुल्लक 300.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक)
उत्तरोत्तर 500.00
श्रद्धांजलि 500.00
धर्मेन्द्र उपाध्याय
आमिर ख़ान : हिंदी सिनेमा के सेवक 300.00

बाल-साहित्य

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'
गधा बत्तीसी 200.00
ईनी-मीनी की मज़ेदार दुनिया 200.00
चिड़ियों की दुनिया रंगीन 200.00
कविताओं में पंचतंत्र 250.00
छुटके-मुटके जंगल में 200.00
नन्हे-मुन्ने गीत सुहाने 200.00
Adventures of The Laughing Donkey 200.00
Tiny-Tots in Forest 200.00
गीतिका गोयल
चुनमुन की कहानियाँ (पुरस्कृत) 200.00
बातूनी कहानियाँ (पुरस्कृत) 200.00
धरती पर चाँद (पुरस्कृत)/शंभूनाथ तिवारी 150.00
डॉ॰ बलजीतसिंह
हम बगिया के फूल (बालगीत) 150.00
आओ गीत सुनाओ गीत 150.00
छुट्टी के दिन बड़े सुहाने 200.00
दिन बचपन के (बालगीत) 200.00
जादूगर बादल (बालगीत)/ विनोद भृंग 150.00
बालकृष्ण गर्ग
आटे-बाटे दही चटाके (शिशुगीत) 150.00
किशोर मन की कहानियाँ/डॉ॰ सरला अग्रवाल 150.00
डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध
चलो आकाश को छू लें 200.00
कागज़ की नाव/डॉ॰ सरोजनी कुलश्रेष्ठ 150.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मानव-विकास की कहानी 200.00
पार्टी गेम्स/चाँदनी कक्कड़ 125.00

समाजोन्मुख साहित्य

डॉ॰ सरिता शाह
उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटन 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण, डॉ॰ मीना अग्रवाल
पर्यावरण : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
नारी : कल और आज 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
विश्व आतंकवाद: क्यों और कैसे 125.00
हिंसा : कैसी-कैसी 200.00
दंगे : क्यों और कैसे (पुरस्कृत) 100.00
रमेशचंद्र दीक्षित, निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण
मानवाधिकार : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
डॉ॰ गिरिराज शाह
अपराध-अपराधी : अन्वेषण एवं अभियोजन 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
गुरु नानकदेव 200.00
अमृतवाणी 300.00
डॉ॰ मूलचन्द दालभ
वेद-वेदान्त दर्शन 300.00
प्रकृति : एक ज्ञेय तत्त्व 300.00
कन्हैया गीता/डॉ॰ मूलचन्द दालभ 900.00
डॉ॰ गोविंद शर्मा एवं रवि लंगर
टास्कफोर्स : हैल्थकेयर प्रोजेक्ट्स 450.00
सिद्धाश्रम का संन्यासी/मनोज भारद्वाज 300.00
समुद्री दैत्य सुनामी/डॉ॰ लालबहादुर रावल 300.00

हिंदी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 09557746346

गुड़गाँव में संपर्क
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2, सोहना रोड, गुड़गाँव 122018
फोन : 0124-4076565, 07838090732